भाग्यरेखा

गुरुदत्त

उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

प्रकाशक • उमेश प्रकाशन,
५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६
मुद्रक • अजन्ता प्रेस,
रामनगर, नई दिल्ली
संस्करण • दिसम्बर, १९६१
(प्रथम संस्करण)
मूल्य • तीन रुपये

भूमिका

ज्योतिष शास्त्र, मानव और समाज के भविष्य के विषय में क्या और कहाँ तक बताने में समर्थ है, यह इस पुस्तक का विषय नहीं। यह तो जन्मकुण्डली के ग्रहों और हस्तरेखाओं के तार-ताम्य के जाने बिना भी विद्वान लोग, कुछ दूर तक, देखने में समर्थ होते ही हैं। यदि ऐसा न हो, तो मानव और समाज अपने भावी सुख-सुविधा के लिये कभी कोई योजना बनाये ही नहीं। व्यक्तिगत और सामाजिक योजना का आधार ही यह होता है कि प्रत्येक मनुष्य में सुदूर-भविष्य की ओर देखने की, न्यूनाधिक, क्षमता होती है। कम-से-कम मनुष्य तो ऐसा ही मानता है। इस पर भी भविष्य के विषय में, दृष्टि, सदा और सब की सत्य ही होगी, यह कहना सम्भव नहीं।

इन में इतिहास का सत्य और सम्भव ज्ञान का होना प्रथम आवश्यकता है। इतिहास के उस ज्ञान की सत्य विवेचना के लिये और उसको, वहाँ और किसी परिस्थिति में, लागू करने की योग्यता प्राप्त करने के लिये शुद्ध, स्वार्थ रहित, पक्षपात से रिक्त और क्रोध, मोह, लोभ एवं काम को छोड़कर विचार-बुद्धि की आवश्यकता है। बिना इन दो अवस्थाओं को प्राप्त किये भविष्य का सत्य-ज्ञान सम्भव नहीं और बिना भविष्य के सत्य-ज्ञान के कोई भी योजना सफल होनी सम्भव नहीं।

हमारा यह दृढ़ मत है कि भाग्य अटल नहीं है। भाग्य उन कर्मों का फल होता है, जो किसी भूत-काल अथवा पूर्व-जन्म में किये गये हैं, और जिनको हम भूल गये हैं, उनको अदृष्ट कहते हैं। इनके फल को टाला भी जा सकता है। उदाहरणार्थ, बहुत ऊँचाई से छलांग लगाने वाला

मनुष्य निःसन्देह अपनी टांगों को तोड़ देगा, परन्तु इस ऊँचाई से गिरने के आघात को प्रभाव-हीन करने के लिये गिरने वाले स्थान को गद्दों से अथवा अन्य कोमल पदार्थों से ढाँप देने से सम्भव है कि टांगें न टूटें। बस साधारण-सा झटका लगकर ही छुटकारा मिल जायेगा। इसी प्रकार किसी बुरे कर्म के फल को उसके विपरीत अर्थात् श्रेष्ठ कर्म के करने से, प्रभाव-हीन अथवा न्यून प्रभाव वाला बनाया जा सकता है।

उदाहरण के रूप में भारत परतंत्रता के युग में और उससे कुछ पूर्व काल में कुछ ऐसे कर्म करता रहा था जिनके परिणाम स्वरूप इसको लम्बी दासता की यंत्रणा सहन करनी पड़ी और स्वराज्य प्राप्ति के समय भी यह एक निस्सहाय प्राणी की भाँति भयभीत तथा श्री-सम्पन्नता-विहीन पड़ा है। स्वराज्य प्राप्ति के अनन्तर प्रथम तो इसका पूर्व सत्य-इतिहास जानकर उन कर्मों का पता करना आवश्यक था जिनके कारण यह पराधीन, श्री-विहीन और दुर्बल हुआ। इस प्रकार के ज्ञान की प्राप्ति के अनन्तर भविष्य की योजना बनाई जा सकती थी जिससे पूर्व कर्मों के फल को प्रभाव विहीन कर इस पतनोन्मुख जाति को मृत्यु से बचाया जा सके। ऐसा नहीं किया गया। इसके विपरीत देश की संस्कृति और परम्पराओं के विपरीत योजनाएँ बन रही हैं। यह है 'भाग्यरेखा' उपन्यास की पृष्ठ-भूमि। शेष तो यह उपन्यास ही है। इसके पात्र और घटनाएँ काल्पनिक हैं। इस पर भी पृष्ठ-भूमि तथ्यपूर्ण और विचारणीय ही है।

गुरुदत्त

प्रथम परिच्छेद

आनन्दप्रकाश सूरी अभी-अभी लन्दन युनिवर्सिटी से पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त कर लौटा था। वह चण्डीगड़ में पंजाब राज्य के प्लैनिंग विभाग में नियुक्त हो, काम पर लग गया था। दफ्तर में तो, अंकों में जोड़-तोड़, योजनाओं को छोटा-बड़ा करने और साधनों की सीमा के, भीतर-बाहर के, परिणामों पर विचार करने में, समय व्यतीत हो जाता था। दफ्तर के समय के पश्चात् कुछ सामाजिक जीवन व्यतीत करने के लोभ में वह चण्डीगढ़ क्लब चला जाया करता था। वहाँ कभी पिंगपौंग, कभी टैनिस, कभी ताश की कोई खेल खेलने में समय व्यतीत करने का बहुत अच्छा अवसर मिल जाता था। इन खेलों में कभी एक-दूसरे पर व्यंग-वाक्यों से मनोविनोद भी हो जाया करता था।

एक दिन खेलने में रुचि न होने के कारण वह हाल के एक कोने में बैठ, चाय का एक प्याँला पी, सिगरेट पीते हुए धुआँ छोड़ रहा था कि क्लब का एक अन्य सदस्य, जो सूरी से पिंगपौंग खेलने में प्रायः हारा करता था, उसके सामने आकर बैठ गया। सूरी ने सिगरेट की डिब्बी उसकी ओर बढ़ा दी। सामने बैठे व्यक्ति ने डिब्बी से सिगरेट निकाल, अपनी जेब से

लाईटर निकाल सिगरेट सुलगाते हुए पूछ लिया, "सूरी साहब ! आज खेल नहीं रहे क्या ?"

"मैं आज अपने विचारों से खेल रहा हूँ।"

"ओह ! वैसे तो खैर है न ? विचारों में जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति दो श्रेणियों में विभक्त किये जा सकते हैं। एक अत्यन्त सुखी और दूसरे अत्यन्त दुःखी।"

आनन्दप्रकाश ने कहकहा मार हँसते हुए कहा, "आप मेरे मुख से क्या अनुमान लगाते हैं ? मैं सुखी हूँ अथवा दुःखी ?"

इस पर सामने बैठे व्यक्ति ने कहा, "मुख से तो नहीं बता सकता; हाँ, अगर आप अपना हाथ दिखाएँ तो उस पर की रेखाओं से कुछ अनुमान लगा सकता हूँ।"

"ओह ! तो आप ज्योतिष भी जानते हैं ?"

"जी, यह भी एक सायंस है। दुर्भाग्य की बात है कि सरकार के प्लैनिंग में इस सायंस की उन्नति को कोई स्थान नहीं मिल रहा।"

"सबसे पहले हम फूड-प्रॉबलम पर अपनी पूर्ण शक्ति लगा रहे हैं। इसके पूर्ण किये बिना तो राज्य चलाना भी कठिन हो जायेगा। यह हस्तरेखा विज्ञान तो अभी प्रतीक्षा कर सकता है।"

"परन्तु सूरी साहब ! यह ज्ञान ही तो प्रायः सब समस्याओं का सुझाव बता सकता है। यह 'की-सायंस' है। यह सरकार का पथ-प्रदर्शन कर सकती है।"

इससे तो सूरी ने सामने रखी 'ऐश-ट्रे' में सिगरेट का 'स्टम्प' डाल और सीधे हो कहा, "हमारी केन्द्रीय सरकार ने एक पानी वाले महाराज को सिर पर चढ़ा कर कई लाख रुपया व्यर्थ गँवा दिया था। मैं समझता हूँ कि अब हम ज्योतिषियों

पर जनता का रुपया व्यर्थ नहीं गँवा सकते। देखिये साहनी जी महाराज! इस प्रकार के अनिश्चित ढकोसलों पर पब्लिक का धन व्यर्थ नहीं किया जा सकता।"

सामने बैठे व्यक्ति का नाम लालचन्द साहनी था। वह चण्डीगढ़ में वकालत करता था। देश-विभाजन के पश्चात्, वह शिमला चला गया था और अब हाईकोर्ट चण्डीगढ़ आ जाने के पश्चात्, वह यहाँ आकर प्रैक्टिस करने लगा था। चण्डीगढ़ में उसने अपना मकान बनवा लिया था।

लालचन्द ने मुस्कराते हुए कहा, "वास्तविकता यह है कि पानी वाला बाबा तो अपने को योगी बताता था। उसके योग की परीक्षा तो योगी ही कर सकता था, सेक्रेटेरियेट के क्लर्क नहीं। इस कारण धोखा हो गया प्रतीत होता है। परन्तु सूरी साहब! यह हस्त-रेखा विज्ञान तो एक प्रत्यक्ष बात है। दूर जाने की आवश्यकता नहीं। आप अपना हाथ दिखाइये। मैं बताता हूँ कि आपके मन में क्या विचार उत्पन्न हो रहे हैं।"

आनन्दप्रकाश सूरी ने बहुत ध्यान से लालचन्द साहनी के मुख की ओर देखा। उसके पश्चात् एक नया सिगरेट मुख में डाल, परन्तु जलाये बिना ही, अपना दाहिना हाथ साहनी के सामने रख कर, उसने कहा, "अच्छा बताइये! आज मेरे मन में क्या विचार सबसे ऊपर है?"

लालचन्द ने कहा, "इस प्रकार नहीं सूरी साहब! पहले आप सिगरेट जला कर इतमीनान से बैठिये। इसमें कुछ मिनट लगेंगे।"

"ओह! अच्छी बात है।" इतना कह साहनी ने लाइटर निकाल, जलाकर सूरी की ओर बढ़ा दिया। सूरी ने कश खैंच

से नहीं, जितनी गहराई से आप उससे करते हैं। उसका आपको पत्र आया है। वह पत्र आपके प्रस्ताव के उत्तर में है।"

ज्यों-ज्यों लालचन्द कहता जाता था, आनन्दप्रकाश का मुख लाल होता जाता था। इस पर भी वह कुछ कहे बिना, चुपचाप बैठा हुआ लालचन्द के कथन को सुन रहा था। लालचन्द कहता-कहता रुक गया। इस पर भी आनन्दप्रकाश ने कुछ नहीं कहा। ऐसा प्रतीत होता था कि वह अभी कुछ और सुनने की अपेक्षा रखता है।

लालचन्द ने कुछ देर विचार कर कहा, "यह तो विषय था, जिस पर आप यहाँ पर बैठे विचार कर रहे थे। इसके आगे आप क्या करने जा रहे हैं, यह मैं नहीं बताऊँगा। न ही यह बताऊँगा कि उसे करने का क्या परिणाम होगा।

"यदि आप इस विषय में भी इस सायंस की परीक्षा करना चाहते हैं, तो मैं भविष्य में होने वाली घटनाओं की रूप-रेखा एक कागज़ पर लिख कर, एक लिफाफे में बन्द कर, जहाँ आप कहें, 'डिपाज़िट' करा सकता हूँ। आज से पाँच वर्ष पश्चात् वह लिफाफा आपको मिल जायेगा और उसके पश्चात् हम बात करेंगे।"

"एक बात तो बता दीजिए। मुझको जो प्रस्ताव उस लड़की के पत्र में आया है, वह स्वीकार करूँ अथवा नहीं?"

"खैर, आपने मेरी जाँच के पूर्व परिणाम को तो स्वीकार कर लिया है, धन्यवाद। मैं आपके उक्त प्रश्न का उत्तर ज्योतिष से नहीं, अपने मन से बताता हूँ। सुनियेगा?"

आनन्दप्रकाश चुप रहा। साहनी ने कहना जारी रखा। उस ने कहा, "मेरा कहा मानिये तो किसी पंजाबी लड़की से विवाह

कर लें। आपकी माता जीवित हैं। उनको पत्र लिखा जाय तो पंजाबी लड़की आपके योग्य ढूँढ़ देंगी। परन्तु आपकी हस्त-रेखा कहती है कि आप मानेंगे नहीं।"

इस पर आनन्दप्रकाश ने कह दिया, "हिन्दुस्तानियों में विवाह का संयोग तो भगवान् के किये से ही होता है और भगवान् इस संयोग को, मनुष्य के अच्छे-बुरे कर्मों का फल देने में साधन बना देता है। एक हिन्दू के जीवन के सुखी, दुःखी, आनन्दमय अथवा कठिनाईयों से पूर्ण होने में उसका विवाह एक मुख्य कारण बन जाता है।"

इसको सुन दोनों हँसने लगे। लालचन्द ने पूछ लिया, "आप भी हिन्दुस्तानी हैं?"

"इसीलिये तो आपकी सम्मति नहीं मान रहा। जब भगवान् ने मुझको सुख अथवा दुःख देने के लिये मेरा विवाह करना है तो फिर जो कुछ हो रहा है, वह होने दूँ।"

"परन्तु सूरी साहब! परमात्मा क्या चाहता है यह आपकी हस्तरेखा नहीं बता रही। हस्तरेखा तो यह बताती है कि आप क्या करने जा रहे हैं।"

"तो क्या परमात्मा यह चाहता है, जो आप बता रहे हैं?"

"यह तो मैं नहीं जानता। मैं यह जानता हूँ कि जो कुछ आपकी हस्तरेखा बता रही है, वह आपके लिये सुखकारक नहीं होगा। इस कारण मैंने तो यह कहा है कि उसके अतिरिक्त कुछ और परीक्षा करिये।"

"मुझको आपके कथन पर किंचित् भी विश्वास नहीं है। यह तो एक घटना-मात्र है कि मैं लंदन में किसी से मिला और

वह मुझको पसन्द आ गई। मैं उसको अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न करूँगा। यदि मुझ में कुछ योग्यता है तो मैं उसको अपने लिये सुखकारक बना लूँगा। अन्यथा उसको छोड़ किसी अन्य से सम्बन्ध बनाने का यत्न करूँगा।"

"तो मैं ऐसा करता हूँ कि जो कुछ मैंने आपके हाथ में पढ़ा है, वह एक कागज़ पर लिखकर रख छोड़ता हूँ। जब आपको रुचि हो, पढ़ लीजियेगा।"

"मुझको उसके जानने में न अब रुचि है, न फिर कभी होगी।"

"अब तो आपकी रुचि नहीं है, यह स्पष्ट है ही। मैंने बता जो दिया है कि मेरी बात आपकी इच्छित बात नहीं है। परन्तु यह सम्भव है कि जब आपकी इच्छाएँ पूर्ण न हों, तब आप मेरी बात को जानने में रुचि पा जायँ।"

इस पर सिगरेट पीने की पुनः लालसा उत्पन्न हुई, परन्तु डिब्बी खाली हो चुकी थी। लालचन्द ने अपनी जेब से एक चाँदी का सिगरेट केस निकाल, बटन दबाकर खोल, सामने कर दिया। आनन्दप्रकाश ने एक सिगरेट निकाला तो लालचन्द ने लाइटर जला सामने कर दिया। आनन्दप्रकाश ने सिगरेट जलाया। इन बातों की शृंखला को तोड़ने के लिये वह वहाँ से उठ खड़ा हुआ और बिना धन्यवाद तक कहे, दूर खड़े कुछ लोगों को परस्पर हँसी-मज़ाक करते देख, वहाँ जा खड़ा हुआ।

लालचन्द अपनी जेब से एक काग़ज़ और फाउन्टेन पैन निकाल, उस पर बारीक अक्षरों में लिखने लगा। काग़ज़ का एक पृष्ठ भर गया तो दूसरी तरफ लिखता चला गया। जब लिख चुका तो नीचे अपने हस्ताक्षर कर, तारीख लिख दी।

क्लब के अन्य सदस्य को संकेत से अपने पास बुलाकर बोला, "मिस्टर नवल ! यहाँ हस्ताक्षर कर तारीख लिख दें ज़रा।"

"क्या बात है। कोई प्रोनोट तो नहीं लिखा रहे हैं ?"

"अरे भाई, नहीं; प्रोनोट इस प्रकार लिखे जाते हैं क्या? यह तो एक भविष्य-वाणी लिखी है। मैं चाहता हूँ कि इसके नीचे तुम लिख दो कि तुमने इसे लिखा-पढ़ा नहीं है। हस्ताक्षर इस कारण कर रहे हो, जिससे प्रमाण रहे कि यह बयान आज सात जुलाई १९५३ को रात के साढ़े आठ बजे चण्डीगढ़ में लिखा गया है।"

नवलकिशोर भी चण्डीगढ़ बार का सदस्य था और लालचन्द को भली प्रकार जानता था। उसके हस्तरेखा पढ़ने के विषय में भी सुन चुका था। उसने पूछ लिया, "यह किसका जन्मपत्रा लिखा है ?"

"किसी पढ़े-लिखे मूर्ख का।"

नवलकिशोर ने इस आशय की पंक्तियाँ उस कागज़ पर अँग्रेज़ी में लिख दीं कि "मैंने इस काग़ज़ को नहीं पढ़ा। मैं अपने हस्ताक्षर इस काग़ज़ पर लिखे वक्तव्य को प्रमाणित करने के लिये आज, सात जुलाई १९५३ को सांय साढ़े आठ बजे कर रहा हूँ।
—नवल"

"थैंक यू नवल !" इतना कह लालचन्द ने वह काग़ज़ लपेट कर अपनी जेब में रख लिया। वे दोनों भी उठकर उन हँसी-मजाक करने वालों में, जहाँ आनन्दप्रकाश गया था, जा खड़े हुए।

* * *

आनन्दप्रकाश रात के दस बजे घर लौटा। भोजन वह क्लब में ही कर आया था। घर पहुँचते ही उसने नौकर को आवाज़

दी, "पन्ने, ओ पन्ने !"

"आया हजूर !"

"एक प्याला कॉफ़ी बनाओ।"

पन्ना रसोई घर में चला गया। आनन्दप्रकाश अपने स्टडी रूम में जा पहुँचा। मेज़ के दराज़ में से एक लिफाफा, जिस पर इंग्लैंड के टिकट लगे थे, और 'एयर-मेल' का नीला लेबल लगा हुआ था, उसने निकाल लिया और लिफाफे में से, जो पहले ही खुला था, एक पत्र निकाल पढ़ने लगा।

यह पत्र आज की डाक से उसकी कोठी के पते पर आया था। दफ्तर से लौट उसने डाक में उस पत्र को देखा और पढ़ा था। अब पुनः उसको पढ़ने की आवश्यकता अनुभव हुई थी। वह देखना चाहता था कि लालचन्द की काली भविष्यवाणी की उपस्थिति में इस पत्र का उसके मन पर क्या प्रभाव पड़ता है। पत्र में लिखा था—"माई लव,

"जब से आपका पत्र मिला है, मैं बहुत प्रसन्न हूँ। आपसे मेरा सम्बन्ध एक उड़ता हुआ स्वप्नमात्र नहीं है, यह जान मुझको अपने पर आत्म-विश्वास बढ़ गया है। आप कहते थे कि मैं सुन्दर हूँ, सुशील हूँ और आपको प्रिय हूँ। उस समय यह सब मुझको एक सामयिक उद्गार अथवा किसी लड़की से सामयिक सुख प्राप्त करने के लिये बहाने मात्र प्रतीत होते थे। परन्तु आपने वापस हिन्दुस्तान में पहुँच और कारोबार पर लगते ही मुझको यह पत्र लिखा है, तो मुझको आपके कहे वाक्यों के अर्थ समझ में आने लगे हैं।

"आज अपने 'बैड रूम' में जाकर, अपने वस्त्र उतार, पूर्ण शरीर के प्रतिबिम्ब को दर्पण में देख, मैं यह जानने का प्रयत्न

करने लगी थी कि आपने मेरे सौन्दर्य के विषय में जो कुछ लिखा है, वह सत्य है अथवा नहीं।

"आपके कहे पर विश्वास कर, मुझे यह लिखने का साहस हो रहा है कि मैं आपकी पत्नी 'इन गुड ऐण्ड बैड' बनने के लिये तैयार हूँ।

"बताइये मैं कब आऊँ? विवाह कब होगा और फिर हनीमून के लिये कहाँ चलेंगे?

"आपने रुपया भेजने की बात कही है। यहाँ से नई दिल्ली तक हवाई जहाज़ का किराया एक सौ पचास पौंड है। कुछ मार्ग व्यय के लिये भी चाहिये। यदि दो सौ पौंड भेज दें तो काम बन जायेगा। आपका पत्र मिलते ही, पहले जहाज़ से, जिसमें भी स्थान मिल सकेगा, मैं नई दिल्ली के लिये चल पड़ूँगी।"

आनन्दप्रकाश को अपनी प्रेयसी, मिल्ली स्टोप्स के इस पत्र में कहीं भी कोई त्रुटी प्रतीत नहीं हुई। वह यह जानता था कि इस पत्र में उसकी गरम-गरम प्रेमपूर्ण बातों का उत्तर साधारण भाषा में ही लिखा गया है। परन्तु यह विचार कर कि एक लड़की का स्वाभाविक शील उसको इससे अधिक लिखने की स्वीकृति नहीं दे सकता, वह प्रसन्न था।

उसने पत्र लिखा, "डीयर डार्लिंग!"

इस समय बैरा कॉफी बनाकर ले आया। इस कारण उसने पत्र को उल्टा कर, बैरे से कॉफी ले पीनी आरम्भ कर दी। एक-आध सुरकी लगा, उसने नौकर से कहा, "पन्ना! अब जाकर सो जाओ। देखो, ये सब दरवाज़े बन्द कर दो।"

कॉफ़ी समाप्त कर, उससे उत्तेजना पा, वह अपनी भावी पत्नी को पत्र लिखने लगा। लिखते हुए एक शीट भर गया तो

दूसरे पर लिखने लगा और दूसरे के पश्चात् तीसरा, चौथा और फिर पाँचवाँ। आखिर उसके प्रेमोदगारों का लेख समाप्त हुआ। रात के दो बज रहे थे। उसने पत्र को पढ़ा, पढ़कर चूमा और लपेटकर लिफाफे में डाल दिया।

लिफाफा बन्द नहीं किया था। उसमें वह लन्दन बैंक के नाम दो सौ पौंड का ड्राफ्ट भेजना चाहता था। इस कारण लिफाफे को खुला छोड़, उसके बाहर उसने पता लिख दिया। पश्चात् वह स्टडी रूम से उठा, वत्ती बन्द कर, अपने सोने के कमरे में चला गया। पत्र को उसने अपने तकिये के नीचे रख लिया। इस प्रकार विस्तर पर लेट कर वह सुख स्वप्न लेने लगा।

अगले दिन उसने इम्पीरियल बैंक से रुपयों का ड्राफ्ट वनवा कर पत्र के साथ उसको लिफाफे में डालकर, उसकी रजिस्ट्री करवा दी।

उसी दिन उसने एक पत्र अपनी माँ को, जो जालन्धर में रहती थी, लिख दिया। उसने लिखा, "माँ! मैंने अपने विवाह का निश्चय कर लिया है। मेरा प्रेम इंगलैंड में रहने वाली एक लड़की, जिसका नाम मिल्ली स्टोप्स है, से हो गया है। वह अगले सप्ताह तक यहाँ पहुँच जायेगी। अतः तुम बहन को लेकर यहाँ चली आओ, जिससे उसके आने से पहले ही विवाह की तैयारियाँ हो जायें।"

दो दिन में ही आनन्दप्रकाश की माँ और उसकी छोटी बहन, जिसका अभी कुछ मास पूर्व ही विवाह हुआ था, चण्डीगढ़ आ पहुँचे। माँ पुत्र से लड़ने आई थी और बहन भाई के विवाह पर बधाई लेने के लिए।

करने लगी थी कि आपने मेरे सौन्दर्य के विषय में जो कुछ लिखा है, वह सत्य है अथवा नहीं।

"आपके कहे पर विश्वास कर, मुझे यह लिखने का साहस हो रहा है कि मैं आपकी पत्नी 'इन गुड ऐण्ड बैड' बनने के लिये तैयार हूँ।

"बताइये मैं कब आऊँ ? विवाह कब होगा और फिर हनीमून के लिये कहाँ चलेंगे ?

"आपने रुपया भेजने की बात कही है। यहाँ से नई दिल्ली तक हवाई जहाज़ का किराया एक सौ पचास पौंड है। कुछ मार्ग व्यय के लिये भी चाहिये। यदि दो सौ पौंड भेज दें तो काम बन जायेगा। आपका पत्र मिलते ही, पहले जहाज़ से, जिसमें भी स्थान मिल सकेगा, मैं नई दिल्ली के लिये चल पड़ूँगी।"

आनन्दप्रकाश को अपनी प्रेयसी, मिल्ली स्टोप्स के इस पत्र में कहीं भी कोई त्रुटी प्रतीत नहीं हुई। वह यह जानता था कि इस पत्र में उसकी गरम-गरम प्रेमपूर्ण बातों का उत्तर साधारण भाषा में ही लिखा गया है। परन्तु यह विचार कर कि एक लड़की का स्वाभाविक शील उसको इससे अधिक लिखने की स्वीकृति नहीं दे सकता, वह प्रसन्न था।

उसने पत्र लिखा, "डीयर डार्लिंग !"

इस समय बैरा कॉफी बनाकर ले आया। इस कारण उसने पत्र को उल्टा कर, बैरे से कॉफी ले पीनी आरम्भ कर दी। एक-आध सुरुकी लगा, उसने नौकर से कहा, "पन्ना ! अब जाकर सो जाओ। देखो, ये सब दरवाज़े बन्द कर दो।"

कॉफ़ी समाप्त कर, उससे उत्तेजना पा, वह अपनी भावी पत्नी को पत्र लिखने लगा। लिखते हुए एक शीट भर गया तो

दूसरे पर लिखने लगा और दूसरे के पश्चात् तीसरा, चौथा और फिर पाँचवाँ। आखिर उसके प्रेमोदगारों का लेख समाप्त हुआ। रात के दो बज रहे थे। उसने पत्र को पढ़ा, पढ़कर चूमा और लपेटकर लिफाफे में डाल दिया।

लिफाफा बन्द नहीं किया था। उसमें वह लन्दन बैंक के नाम दो सौ पौंड का ड्राफ्ट भेजना चाहता था। इस कारण लिफाफे को खुला छोड़, उसके बाहर उसने पता लिख दिया। पश्चात् वह स्टडी रूम से उठा, बत्ती बन्द कर, अपने सोने के कमरे में चला गया। पत्र को उसने अपने तकिये के नीचे रख लिया। इस प्रकार विस्तर पर लेट कर वह सुख स्वप्न लेने लगा।

अगले दिन उसने इम्पीरियल बैंक से रुपयों का ड्राफ्ट बनवा कर पत्र के साथ उसको लिफाफे में डालकर, उसकी रजिस्ट्री करवा दी।

उसी दिन उसने एक पत्र अपनी माँ को, जो जालन्धर में रहती थी, लिख दिया। उसने लिखा, "माँ! मैंने अपने विवाह का निश्चय कर लिया है। मेरा प्रेम इंगलैंड में रहने वाली एक लड़की, जिसका नाम मिल्ली स्टोप्स है, से हो गया है। वह अगले सप्ताह तक यहाँ पहुँच जायेगी। अतः तुम बहन को लेकर यहाँ चली आओ, जिससे उसके आने से पहले ही विवाह की तैयारियाँ हो जायें।"

दो दिन में ही आनन्दप्रकाश की माँ और उसकी छोटी बहन, जिसका अभी कुछ मास पूर्व ही विवाह हुआ था, चण्डीगढ़ आ पहुँचे। माँ पुत्र से लड़ने आई थी और बहन भाई के विवाह पर बधाई लेने के लिए।

पहले ही दिन, कुछ आराम कर माँ ने कहा, "आनन्द ! तुमने पहले क्यों नहीं बताया ? मैंने तो तुम्हारे लिए जालन्धर में लड़की देख रखी है।"

"माँ ! कैसी है वह ?"

"चाँद-जैसी गोरी, लक्ष्मी जैसी सुन्दर, सरस्वती समान विद्यावती और स्वभाव की देवी। बेटा ! इसी वर्ष उसने एम० ए० पास किया है और पंजाब भर से उसकी सगाइयाँ आ रही हैं। मैंने उसको अभी तक रोक रखा था। कल तुम्हारा पत्र मिला तो बिस्तर ले यहाँ चली आई हूँ।"

"माँ ? तुमने मुझसे पूछा तो था ही नहीं। पूछती तो मैं बता देता कि मैं विलायत से ही उसको वचन देकर आया था। यहाँ आने पर जब नौकरी लगी तो मैंने उसको लिखा और वह आ रही है।"

"अच्छी बात है। मैं तुम्हारे विवाह तक यहाँ रहूँगी। पीछे तुम जानो तुम्हारा काम जाने।"

"क्यों ? बाद में फिर जालन्धर चली जाओगी क्या ?"

"और नहीं तो क्या करूँगी ?"

"कुछ दिन तो रह जाना। तनिक उसको देखना कि वह कितनी सुघड़ और सुन्दर है।"

"आनन्द ! मैं यहाँ रह, उससे बात-चीत तो कर नहीं सकूँगी। मैं तो अंग्रेज़ी जानती नहीं। मैं उसकी किसी प्रकार की सेवा कर नहीं सकूँगी। वह मेरी सेवा को पसन्द भी तो नहीं करेगी और मेरी सेवा वह करेगी नहीं। करना जानती भी नहीं होगी। तो बताओ, मैं यहाँ रह कर करूँगी क्या ?"

"और वहाँ क्या करती हो माँ ?"

"वहाँ स्नान, ध्यान, भोजन, वस्त्र, सभा, कीर्तन इत्यादि कितने ही तो काम हैं। यहाँ इनमें से एक भी, न तुमको पसन्द आएगा न उसको। व्यर्थ में झगड़ा होगा।"

"माँ ! लगता है, तुम मुझसे नाराज़ हो गई हो।"

"नाराज़ नहीं बेटा ! तुम्हारा और मेरा मार्ग अब अलग-अलग हो गया है। मार्ग बदलने अब कठिन हैं। मैं बूढ़ी हो गई हूँ और कोई नई बात सीख नहीं सकती। वह विदेशीय समाज में पली हमारे रीति-रिवाजों को पसन्द करेगी नहीं।"

"क्यों रजनी ! तुम तो बूढ़ी नहीं हुईं। तुम तो अपनी भाभी की राह को पकड़ सकती हो ?"

"पकड़ तो सकती हूँ भैया ! परन्तु जिनके साथ आपने बाँध दिया है, उनको भी इस राह पर साथ ला सकूँ तब न ? यह सम्भव प्रतीत नहीं होता।"

"देखो रजनी ! मैं अपने कार्यालय में कई नई नौकरियाँ निर्माण कर रहा हूँ। उनमें से एक साधुराम जी के लिए हो जायेगी। अतः उनको चण्डीगढ़ तो आना ही पड़ेगा। तब तुम भी आओगी। बस तब तक के लिए ही कह रहा हूँ। तुमको तो अंग्रेज़ी बोलने में दिक्कत नहीं होनी चाहिए ?"

"तब देख लूँगी। पहले तो यह बताओ कि उनको विवाह पर निमन्त्रण भी मिलेगा अथवा नहीं ?"

"वह तो मैं विवाह की तिथि निश्चित होते ही भेज दूँगा।"

"उनको निमन्त्रण दोगे तो विदाई और बधाई भी देनी होगी।" रजनी ने मुस्करा कर कहा।

"वह क्या होती है ?"

"माँ, बताओ न क्या देना होता है।"

माँ ने बताया, "बेटा ! एक ही तो बहिन है । उसको जी भरकर देना चाहिए । तभी यह आशीर्वाद देगी, जिससे जीवन सुखमय होता है ।"

"माँ ! तुम तो कुछ पिछली सदी की-सी बातें कर रही हो । मेरी बहिन को मेरे विवाह में प्रसन्नता नहीं होनी चाहिए क्या ? यदि प्रसन्नता होगी तो उसको बधाई देने भी आना चाहिए ।"

"ठीक है भैया ! उस बधाई देने के लिए इतनी यात्रा कर आने पर आने-जाने का फर्स्ट क्लास का किराया और उनको पाँच सौ एक रुपया, मुझको रेशमी सूट और इकावन रुपये, एक सैट आभूषणों का और—और जो कुछ तुम चाहो, देना ।"

"मैं समझता हूँ कि यह सब व्यर्थ की रीति है । देखो रजनी ! तुमको पिता जी की सम्पत्ति में से आधा भाग मिल चुका है । अब तो तुम्हारा मुझ पर कुछ भी 'क्लेम' नहीं रहा ।"

"तो फिर मैं आज ही लौट जाती हूँ ।"

"लौट जाओ । तुम औरतों ने पुरुषों से झगड़ा कर अपना भाग पृथक माँग लिया है । यद्यपि कानून अभी बना नहीं, परन्तु पिताजी ने तुम्हारे नाम आधी सम्पत्ति लिख दी थी । वह मैंने तुमको दे दी है । अब मुझसे क्या माँगती हो ?"

"वह तो पिताजी की सम्पत्ति से मिला है । भैया ! तुम तो अपने विवाह की प्रसन्नता पर दोगे न । भाई बहनों को देते ही हैं । तुमको भी देना चाहिए ।"

"अच्छा बाबा ! तुम दोनों को आने-जाने का फर्स्ट क्लास का किराया और दोनों को पचास रुपये नित्य भत्ता दे दिया करूँगा ।"

इस पर तो रजनी हँस पड़ी । उसने कहा, "भैया ! हम

तुम्हारी नौकरी नहीं करते, जो भत्ता लेंगे। मैं तो भाई से स्नेह के रूप में बहन के लिए विदाई माँग रही हूँ।"

"तो क्या स्नेह माँग कर लिया जाता है?"

"और क्या? भाइयों से बहनें इस प्रकार ही लिया करती हैं।"

"अच्छा रजनी! यह बात भी मानी। परन्तु स्नेह का मूल्य तो मैं लगाऊँगा न? तुम तो सौदा कर रही हो।"

"लेकिन भैया! बहुत लोग हैं, जो अच्छे और बुरे माल का मूल्य नहीं लगा सकते। वे हीरे का मूल्य पत्थर समझकर लगाने लगते हैं। तब उनको बताना पड़ता है कि वे हीरा ले रहे हैं, पत्थर नहीं।

"इसी प्रकार मैं समझती हूँ कि मेरा भैया भी बहन के स्नेह का मूल्य लगाना नहीं जानता। इस कारण उसका मूल्य बता रही हूँ। पाँच सौ एक तो वे लेंगे और इक्यावन मैं। एक सूट उनका और एक मेरा। मुझको आभूषणों का एक सैट पृथक मिलना चाहिए।"

"यह तुम मुझ पर छोड़ो रजनी! मैं जो उचित समझूँगा दे दूँगा।"

"नहीं भैया! यदि तुम में मूल्य लगाने की सामर्थ्य होती तो माताजी की पसन्द की हुई लड़की छोड़, वह......न जाने कौन, कैसी है, को न लाते।"

"चुप रहो रजनी! यह मैं सहन नहीं कर सकता। बिना देखे और मिले ही अभी से उसकी निन्दा करने लगी हो।"

"तो भैया! ऐसा करो, जो कुछ मैंने बताया है, उतना दे देने का वचन दे दो तो मैं उनको साथ लेकर आऊँगी और वे तमाम

शकुन कर दूँगी, जो मेरा कर्त्तव्य है।"

"यदि वे शकुन न करोगी तो क्या होगा ?"

"वहिन का आशीर्वाद नहीं रहेगा और विवाह सफल नहीं होगा।"

"अच्छा ऐसा करो, कुछ कम पर फैसला कर लो।"

रजनी ने ज़ोर से कहा, "नहीं ! नहीं !! नहीं !!!"

*   *   *

मिल्ली स्टोप्स मिस्टर मिल्लर स्टोप्स की लड़की थी। उसका एक भाई जॉर्ज स्टोप्स था। वह उससे बड़ा था और जब आनन्द-प्रकाश का मिल्ली स्टोप्स से परिचय हुआ था, जॉर्ज न्यूकैसल में एक होटल चलाता था। मिल्लर स्टोप्स 'ओल्ड-एज पैन्शन' पर निर्वाह करता था। मिल्ली स्टोप्स एक दुकान पर कपड़ा बेचने की नौकरी करती थी और इस प्रकार अपना निर्वाह करती थी।

पहली ही दृष्टि में आनन्दप्रकाश मिल्ली स्टोप्स को देखकर मोहित हो गया और उसके साथ घनिष्ठता उत्पन्न करने का यत्न करने लगा। मिल्ली कुछ दिन तक तो उसकी अवहेलना करती रही। इस अवहेलना से तो आनन्द के मन में उसको पाने की लालसा और भी तीव्र हो गई।

मिल्ली अपनी अवहेलना के इस परिणाम को पहले से ही जानती थी। जब उसने आनन्दप्रकाश को अपने ऊपर पूर्णरूपेण मुग्ध देख लिया तो फिर एक दिन उसने उससे पूछा, "आप मुझसे 'लव' करते हैं क्या ?"

"क्या मैंने इसका अभी पर्याप्त प्रमाण नहीं दिया आपको ?"

"पर्याप्त का अनुमान तो मैं तब लगाऊँ, जब मुझको कई प्रेमियों का अनुभव हो। हाँ, इतना कह सकती हूँ कि जिस आग्रह

से आप मेरे पीछे लगे हैं, वैसा अन्य कोई नहीं लगा।"

"तो इससे आप अनुमान लगा सकती हैं कि मैं आपके विषय में क्या विचार रखता हूँ।"

"अच्छी बात है, हम मित्र तो हैं ही। रही प्रेम की बात, उसे परिपक्व होने दीजिए और समय पर विचार कर लेंगे।"

इसके पश्चात् प्रायः नित्य ही सायंकाल, जब वह दुकान से छुट्टी पाती, आनन्दप्रकाश उससे मिलता। दोनों इकट्ठे रात का भोजन करते और कभी कोई पिक्चर, कभी किसी डाँस हॉल में और कभी हाईड पार्क के किसी अँधेरे कोने में बैठ, रात के दस बजे तक इकट्ठे रहते।

शारीरिक घनिष्ठता होने पर भी मन से मिल्ली स्टोप्स को कभी भी विश्वास नहीं आया था कि यह हिन्दुस्तानी युवक अपने वचनों का पालन करेगा।

आनन्दप्रकाश ने अपना थीसिज़ दिया। थीसिज़ पर अध्यापकों ने बहुत अच्छी सम्मति दी और उसको पी-एच० डी० की डिग्री मिल गई। अब वह भारत लौट आया। आने से पूर्व आनन्द-प्रकाश ने मिल्ली से कहा था कि भारत पहुँचने पर, किसी कार्य पर नियुक्त होते ही वह उसको पत्र लिखेगा।

आनन्दप्रकाश भारत आया तो उसका पिता बहुत बीमार पड़ा था। रजनी ने बी० ए० पास कर लिया था और पिता ने अपने जीवन-काल में ही उसका विवाह कर जाना उचित समझा। लड़का ढूँढा गया। वह भी पंजाब यूनिवर्सिटी का ग्रेजुएट था। उन दिनों वह एक उर्दू के समाचार-पत्र में कार्य करता था और उसका वेतन सवा सौ रुपया मासिक था।

विवाह के कुछ ही दिन पश्चात् रजनी के पिता का देहावसान हो गया। मरने के पश्चात् पिता की वसीयत निकली और उसके अनुसार सब प्रकार के टैक्स देकर पूर्ण सम्पत्ति तीन बराबर-बराबर भागों में विभक्त कर दी गई। एक भाग आनन्दप्रकाश की माँ को दिया गया, एक भाग आनन्दप्रकाश को और एक भाग रजनी को।

इस प्रकार रजनी को तीन लाख की सम्पत्ति और नकद मिला। इसी प्रकार उसकी माँ और भाई को भी।

आनन्दप्रकाश तो पंजाब सरकार में नौकरी पाने के लिए भाग-दौड़ करने लगा और उसकी माँ उसके लिए पत्नी ढूँढने लगी।

आनन्दप्रकाश स्वयं को बहुत ही भाग्यशाली मानने लगा था। उसको पंजाब राज्य के प्लैनिंग विभाग में ग्यारह सौ मासिक की नौकरी मिल गई थी। भारत के प्लैनिंग विभाग ने सब राज्यों को इस प्रकार के राज्य-कार्यालय खोलने का आदेश भेजा था और पंजाब में आनन्दप्रकाश को प्लैनिंग ऑफिसर नियुक्त कर, उसको अपने कार्यालय के संगठन के लिए कह दिया गया।

कार्यालय के लिए उचित स्थान, आनन्दप्रकाश के रहने के लिए बंगला और कार्यालय-संगठन का प्रबन्ध हो गया तो आनन्द-प्रकाश ने मिल्ली स्टोप्स को पत्र लिखा और उसका उसको उत्तर भी आ गया।

आज जब उसकी माँ से बात-चीत हुई और उसको पता चला कि माँ उसके लिए एक हिन्दुस्तानी लड़की, जो एम० ए० है और सुन्दर है, का प्रबन्ध कर चुकी है, तो उसको लालचन्द साहनी का कथन याद हो आया।

लालचन्द साहनी का कहना था कि भाग्य-रेखा उसको एक दिशा में घसीटती हुई ले जा रही है और वह दिशा सुखदायक नहीं है।

परन्तु अब तीर हाथ से निकल चुका था। अभी तक वह यही समझता था कि मिल्ली सुन्दर लड़की है। उसने उसको उसके अपने निवास-स्थान पर जाकर सर्वथा नग्न देखा था और वह उसके अंग-प्रत्यंग के सौन्दर्य से परिचित था। इसी बात की ओर मिल्ली ने अपने पत्र में संकेत किया था।

जब माँ को आनन्दप्रकाश ने नाराज़ देखा तो बहन को प्रलोभन देकर, उसको अपने पक्ष में करने का वह यत्न करने लगा। उसने उसके पति साधुराम सिन्धु को नौकरी दिलाने की आशा दिला दी थी। यह तो निश्चित ही था कि उसको उस नौकरी में सवा सौ रुपये मासिक से अधिक ही मिलेंगे। दूसरे वह मान गया था कि अपने विवाह के अवसर पर वह रजनी और उसके पति को मुँह-माँगी बिदाई देगा।

इतना निश्चय कर रजनी जालन्धर लौट गई और आनन्द-प्रकाश की माँ वहीं उसके पास रह गई। पुत्र ने अपनी माँ को अपनी भावी पत्नी का चित्र दिखाया। माँ ने बहुत ध्यान से देख-कर कहा, "आनन्द! यह लड़की है तो सुन्दर, परन्तु यह पढ़ी-लिखी कितनी है?"

"काम चलाऊ पढ़ी है, माँ! मैंने उससे नौकरी नहीं करानी। तुम उसको सुन्दर कहती हो तो ठीक है।"

"परन्तु मैं भी एक चित्र लाई हूँ। देखोगे? किन्तु अब क्या लाभ होगा उसे देखने का? जब निश्चय हो चुका है तो मैं उसे बदलने के लिए नहीं कहूँगी।

"माँ ! दिखाने में क्या हानि है ?"

माँ ने अपने अटैची केस में से एक चित्र निकाल कर आनन्द-प्रकाश की ओर बढ़ा दिया। लड़की बहुत ही सुन्दर प्रतीत होती थी। आनन्दप्रकाश ने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ा और चित्र माँ को वापस कर दिया।

कुछ विचार कर आनन्दप्रकाश ने कहा, "माँ ! मैं इस लड़की को एक वर्ष से जानता हूँ। उसके स्वभाव और चरित्र से परिचित हूँ। इस कारण मेरा निश्चय ठीक ही है। तुम इसके माता-पिता को पत्र लिख दो।"

"सो तो मैंने रजनी के हाथ कहला भेजा है।"

इस प्रकार एक प्रकार से माँ और बहिन की सहमति से आनन्दप्रकाश का मिल्ली स्टोप्स से विवाह निश्चित हो गया। वह पन्द्रह दिन में आई और आने पर कोर्ट में विवाह के लिए प्रार्थना कर दी गई और उनके विवाह का नोटिस कोर्ट में सिटी मजिस्ट्रेट के कार्यालय के बाहर लग गया।

यह नोटिस लालचन्द साहनी ने पढ़ा तो वह खिलखिला कर हँस पड़ा।

उसी सायंकाल उसने आनन्दप्रकाश की बड़ी उत्सुकता से खोज की और वह उसे मिल गया। आनन्दप्रकाश अपनी भावी पत्नी के साथ पिंगपौंग खेल रहा था। उसके मित्र मेज़ के चारों ओर खड़े दोनों को प्रोत्साहित कर रहे थे। जब मिल्ली कोई प्वाइंट करती थी, तो ज़ोर से तालियाँ बजती थीं।

खेल समाप्त हुआ और रेफ़री ने घोषित किया कि आनन्द-प्रकाश चार प्वाइंट से हारा है।

दोनों ने खेल छोड़ा तो चाय पीने हॉल की ओर चल पड़े।

इस समय लालचन्द वहाँ पहुँच गया और उसने कहा, "गुड ईवनिंग मिस्टर सूरी !"

सूरी ने पीछे देखा और लालचन्द से हाथ मिलाते हुए, उसका मिस स्टोप्स से परिचय कराने लगा।

"डार्लिंग ! यह मेरे एक अन्य मित्र हैं। इनका नाम मिस्टर साहनी है।"

फिर उसने साहनी की ओर घूमकर कहा, "साहनी ! यह हैं मेरी होने वाली पत्नी मिस स्टोप्स।"

"मैं आपकी सफलता की कामना करता हूँ मिस स्टोप्स ! मैं प्रायः मिस्टर सूरी से हारा करता था, परन्तु मिस्टर सूरी की अपेक्षा आपसे हारने में अधिक लुत्फ़ आयेगा।"

"चाय पी लें; मैं आपका चेलेंज स्वीकार करती हूँ।"

"थैंक यू, मिस स्टोप्स ! मिस्टर सूरी ! क्या शर्त लगती है ?"

"कैसी शर्त ?"

"यही कि मैं हारा तो पाँच रुपया दूँगा, नहीं तो आप पाँच रुपये देंगे।"

"वाह ! भला ऐसे भी कोई शर्त हो सकती है ? हम हारें भी और शर्त भी दें।"

"तो फिर हारने में आनन्द नहीं आयेगा।"

"परन्तु आप जीन ही कैसे सकते हैं ? मुझसे तो जीत नहीं सकते और यह देख ही लिया है कि मैं इनसे हार चुका हूँ।"

"इस पर भी यदि मिस स्टोप्स कहें तो मैं एक खेल खेलने के लिए तैयार हूँ।"

इस समय वे चाय के लिए जा बैठे थे। आनन्दप्रकाश ने

आर्डर दे दिया। चाय पीने के पश्चात् लालचन्द ने बिल पर हस्ताक्षर कर दिये।

"यह क्या कर रहे हैं ?" आनन्दप्रकाश ने पूछा।

"आपकी सगाई की खुशी में चाय पिला रहा हूँ।"

"परन्तु······।" आनन्दप्रकाश कुछ कहता-कहता रुक गया।

"परन्तु-वरन्तु कुछ नहीं। विवाह के पश्चात् एक शानदार पार्टी भी दूँगा।"

चाय के पश्चात् खेल हुआ और सबको विस्मय हुआ कि लालचन्द लगातार जीतता चला गया और रेफ़री ने लव आल घोषित कर दिया।

*　　*　　*

आनन्दप्रकाश के विवाह पर रजनी और उसका पति साधुराम सिन्धु आमन्त्रित थे। अपने अन्य सम्बन्धियों को आनन्दप्रकाश ने विवाह के पश्चात् जो सूचना भेजी, वह इस प्रकार थी—

"मिस्टर आनन्दप्रकाश सूरी पी-एच० डी० सुपुत्र श्री केदारनाथ सूरी का विवाह लन्दन की मिस स्टोप्स के साथ, दस अगस्त उन्नीस सौ त्रैपन को चण्डीगढ़ सिटी मजिस्ट्रेट के कार्यालय में हो गया है। वर-वधू आपके आशीर्वाद की कामना करते हैं।"

यह स्पष्ट था कि किसी को भी विवाह पर आमन्त्रित नहीं किया गया था। दो साक्षी चाहिये थे। एक लालचन्द साहनी और दूसरा नवलकिशोर बत्रा बन गये।

उसी सायंकाल आनन्दप्रकाश ने अपने सब परिचितों को रिसेप्शन दिया। इसमें पंजाब के सब मन्त्री तथा बड़े-बड़े

सरकारी अधिकारी आमन्त्रित किये गये थे। रिसेप्शन बहुत ही आलीशान रहा।

उसी दिन सायंकाल पति-पत्नी हनीमून के लिये मनाली को चल दिये। पन्द्रह दिन उन्होंने मनाली में बड़े ही आनन्द से बिताये। दिन-भर घूमना होता था और रात को सोना।

विवाह के पश्चात् ही आनन्दप्रकाश को विदित हो गया कि अपने समाज से विलक्षण एक प्राणी अपने परिवार में आ गया है। मनाली से लौटते ही आनन्दप्रकाश और उसकी पत्नी को लालचन्द का निमन्त्रण-पत्र मिला। उसमें लिखा था—

"यह मेरे और मेरी पत्नी के लिये बहुत ही सौभाग्य का अवसर होगा, जब आप सपत्नीक भोजन-समय हमारे गृह को सुशोभित करेंगे।"

यह अगले दिन की रात्रि के भोजन का निमन्त्रण था। आनन्दप्रकाश ने निमन्त्रण-पत्र पढ़कर अपनी पत्नी की ओर बढ़ा दिया। पत्नी ने भी पढ़कर अपने पति की ओर देखा तो उसने कहा, "यह वही व्यक्ति है, जिसने तुम्हें पिंगपौंग के खेल में हराया था।"

"तब तो हमें उसका निमन्त्रण अवश्य ही स्वीकार करना चाहिये।"

"बहुत अच्छा। यदि तुम्हारी यह इच्छा है तो कल सायं हम उनके निमन्त्रण को स्वीकार कर लेते हैं।"

*   *   *

उनके मनाली से आने के दूसरे दिन ही आनन्दप्रकाश की माता अपने निवासस्थान जालन्धर लौट गई। बहन और बहनोई तो विवाह के पश्चात् ही वापस चले गये थे।"

आनन्दप्रकाश तीन सप्ताह के अवकाश के पश्चात् अपने कार्यालय में गया तो उसके पीछे मिसेज़ सूरी ने घर का नक्शा ही बदल डाला। एक की अपेक्षा दो बैड-रूम बन गये। दो स्टडी-रूम हो गये। ड्रायंग-रूम साझा था। पैन्ट्री भी साझी थी। इस पर भी यह बैड-रूम पृथक करने से जीवन में अलगाव का श्रीगणेश हो गया।

रात को दोनों लालचन्द के घर जा पहुँचे। लालचन्द की पत्नी मीना, पंजाबी पहरावा, कुरता, सलवार, दुपट्टा पहने हुई थी। मुख पर पाउडर, रूज इत्यादि का चिह्न मात्र भी नहीं था। बालों को साधारण रूप में बाँधा हुआ था। गले में मंगलसूत्र लटक रहा था।

इसके विपरीत मिल्ली सूरी अंग्रेज़ी ढंग की पोशाक में वहाँ थी। जाकट, स्कर्ट, मोजे, और बूट। पाउडर, रूज, होठों पर लिपस्टिक का प्रयोग खुले दिल से किया गया था।

लालचन्द की माँ थी और दो बच्चे थे। एक पाँच वर्ष का और दूसरा तीन वर्ष का। जब आनन्दप्रकाश और उसकी पत्नी पहुँचे, उस समय तक बच्चे और लालचन्द की माँ खाना खा चुके थे। मेज़ पर दोनों मित्र और उनकी पत्नियाँ ही बैठी थीं। लालचन्द की माँ रसोईघर में थी और नौकर उनको खिला रहा था।

सूरी की पत्नी मिल्ली ने पूछ लिया, "क्या माँ नहीं बैठेंगी?"

"वे भोजन कर चुकी हैं।"

"क्यों?"

"इस कारण कि वे घर की पुरखा हैं। बिना उनको खिलाये हम भोजन नहीं करते।"

"यह क्यों ?"

"हमारे यहाँ यह बड़ों के मान का सूचक है ।"

आनन्दप्रकाश ने बीच में ही कहा, "साथ बैठकर खाने में समानता का भाव प्रकट होता है ।"

बातचीत अंग्रेज़ी में हो रही थी और उनके प्रश्नों का उत्तर लालचन्द ही दे रहा था । लालचन्द की पत्नी दोनों की बातों को सुन कर मुस्करा देती थी ।

नौकर खाने का सामान ला कर मेज़ पर रखने लगा था । लालचन्द ने आनन्दप्रकाश के कथन का उत्तर देते हुए कहा, "हम समानता में इतना गर्व अनुभव नहीं करते, जितना कि उचित व्यवहार के पालन में ।"

"क्यों ?" मिल्ली ने पूछा ।

"यह इस कारण कि संसार में सब बराबर नहीं हैं । बराबर का व्यवहार करने से तो योग्य और अधिकारियों को अयोग्यों और अनधिकारियों के बराबर कर देना पड़ेगा । हम माताजी को स्वयं से श्रेष्ठ समझते हैं । इस कारण पहले उनको खिला-पिला कर, प्रसन्न कर, उसके पश्चात् स्वयं खाते हैं ।"

"क्या श्रेष्ठता है उनमें ?"

इस समय तक भोजनादि की सामग्री मेज़ पर रखी जा चुकी थी । लालचन्द ने मिल्ली की ओर देखकर कहा, "हैल्प युअर-सेल्फ । अपनी-अपनी इच्छानुसार लीजिये ।"

खाना देशी ढंग का था । भल्ले थे, चने थे, चटनी-आचार था, पनीर-मटर का साग था, पूरी थी और कुलचे थे । इसके साथ ही खीर और फल भी थे ।

मिल्ली इन सब वस्तुओं को देख रही थी और विचार कर

रही थी कि किस वस्तु से आरम्भ करे। इस पर लालचन्द ने कह दिया, "इफ यू डोन्ट माइन्ड, मीना कैन हेल्प यू।" फिर उसने मीना से कहा, "हाँ मीना ! तुम परसती जाओ।"

मीना ने मुस्कराते हुए पहले खीर परस दी। मिल्ली ने पूछा, "यह क्या है ?"

"स्वीट टु स्टार्ट विद। खाना आरम्भ करने के लिये मिष्ठान्न।"

"हम तो मिष्ठान्न भोजन के पश्चात् लेते हैं।"

"अपनी-अपनी प्रथा है। हमारे यहाँ इसे पहले लिया जाता है। आप भी करके देखिये। इस विधि में भी अपना एक विशेष आनन्द है।"

लन्दन में तो अंग्रेज़ी ढंग से ही खाना खाया जाता था। वहाँ तो हिन्दुस्तानी ढंग का खाना एक-आध स्थान पर ही मिलता था। परन्तु आनन्दप्रकाश ने मिल्ली को वहाँ ले जाकर कभी खिलाने का यत्न नहीं किया था। हिन्दुस्तान में आने पर भी आनन्दप्रकाश ने एक बैरा रख लिया था, जो उनके घर में अंग्रेज़ी ढंग का खाना बनाता था। आज यह प्रथम अवसर था, जब मिल्ली को खीर, पूरी, भल्ले आदि खाने को मिल रहे थे।

सब्ज़ी में मिर्च-मसाला नहीं डाला गया था। वह पृथक् रखा था, जिससे अपनी-अपनी रुचि के अनुसार डाल लिया जाय। भल्लों में और पनीर-मटर के साग में मिल्ली ने इनको मिर्च डालते देखा तो उसने पूछा, "यह क्या है ?"

"मिर्च। हम लोगों को यह खाने का अभ्यास है।"

मिल्ली ने भी थोड़ी मिर्च डाल ली। इससे साग का स्वाद बढ़ गया। जब वह कुछ और डालने लगी तो आनन्दप्रकाश ने

रोक दिया और कहा, "अधिक मत डालो। इससे मुख जल जायेगा।"

उन लोगों के खाते-खाते ही लालचन्द की माँ भी वहाँ आकर बैठ गई। मिल्ली ने पूछा, "ये हमारी भाषा समझती हैं अथवा नहीं ?"

"नहीं।"

"मुझे खेद है कि मैं इनसे बातचीत नहीं कर सकती।"

"इस वार्तालाप में मैं द्विभाषिये का कार्य कर सकता हूँ।"

इतना कह लालचन्द ने माँ से कहा, "माँ ! ये तुमसे बातचीत करना चाहती हैं।"

"तो बेटा ! तुम मुझको समझा दो। इसमें मुझको बहुत प्रसन्नता होगी।"

लालचन्द ने बताया तो मिल्ली ने पूछ लिया, "आपके अनपढ़ रहने के कारण आपका जीवन नीरस नहीं रहता क्या ?"

लालचन्द ने माँ का उत्तर सुनाते हुए कहा, "ये कहती हैं कि मैं अनपढ़ नहीं हूँ। पढ़ी-लिखी हूँ। अपनी भाषा को भली-प्रकार जानती हूँ।"

"कौनसी भाषा जानती हैं ? क्या उसमें भी साहित्य है ?" मिल्ली ने पुनः पूछा।

"मैं हिन्दी पढ़-लिख सकती हूँ। मेरे लिये उसमें साहित्य है।"

"क्या उसमें डिकन्ज़, वाल्टर स्कॉट, शैक्सपियर, बर्नार्ड शा जैसे लेखक हैं ?"

"मैंने सब तो नहीं, हाँ, शैक्सपियर का अनुवाद पढ़ा है। मेरे विचार में वह बहुत अच्छा लिखने वाला है। परन्तु हमारे साहित्य में तुलसी और वाल्मीकि की अपनी श्रेष्ठता है। उनको

पढ़ कर मनुष्य शैक्सपियर को भूल जाता है।"

इस पर मिल्ली ने कह दिया, "मैं इस बात पर विश्वास नहीं कर सकती।"

लालचन्द ने इस पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा, "मिसेज़ सूरी ! साहित्य के दो अंग होते हैं। एक भाषा और दूसरा भाव।

"भाषा का प्रयोग विचारों को प्रकट करने के लिए होता है। भाषा का सौन्दर्य इसी में है कि वह भावों को सरल तथा सरस रीति से वहन करे। इसके लिये तुलसी और वाल्मीकि की भाषा अद्वितीय है। शैक्सपियर की भाषा में वैचित्र्य है, परन्तु उस वैचित्र्य से भावों को प्रकट करने में किसी प्रकार की सुगमता हुई हो, ऐसी बात नहीं है। हम भाषा का वैचित्र्य इस बात में समझते हैं कि जो कुछ लिखने वाला कहना चाहता है, पढ़ने वाला वही कुछ समझ सके। यदि लिखने वाले के कथन को भिन्न-भिन्न पढ़ने वाले भिन्न-भिन्न प्रकार से समझें तो लेखक की भाषा त्रुटिपूर्ण मानी जायेगी।"

"वाह, आप तो गुण को अवगुण और अवगुण को गुण मानते हैं।"

"इसमें बहस की बात नहीं मिसेज सूरी ! यह तो हिन्दुस्तानी और यूरोपियन विचारधारा में भेद की बात है। हमारे यहाँ, भाषा में सरलता और स्पष्टता लाना गुण माना जाता है। आपके साहित्य में क्लिष्टता एवं पहेलियों को गुण माना जाता है।

"मैं तो कानून पढ़ा हूँ। कानून में हम यह कभी नहीं देखते कि कानून को संसद् में उपस्थित करने वाले का अथवा उसको

स्वीकृत करने वाली संसद् का क्या आशय था। कचहरी में हम, कानून को संसद में उपस्थित करने वाले के वक्तव्य को, कानून के पक्ष के लिए उपस्थित नहीं कर सकते। यहाँ तक कि कानून बनाने का उद्देश्य भी प्रमाणित नहीं होता। कचहरी में तो कानून का अर्थ वकील और जज क्या निकालते हैं, वही माननीय होता है। यही कारण है कि हाईकोर्ट के भिन्न-भिन्न जज एक ही कानून के विभिन्न मतलब निकालते रहते हैं।

"हमारे यहाँ, भारतीय परम्परा में यह नहीं है। यहाँ तो लिखने वाले से यह आशा की जाती है कि वह अपने अभिप्राय को स्पष्ट लिखे, जिसमें से दो अर्थ न निकाले जा सकें। यदि कहीं व्याख्या की आवश्यकता होती है तो वह कर दी जाती है, परन्तु यदि वह मूल लेखक के आशय के विपरीत हो, तो उसे त्याज्य समझा जाता है।

"अंग्रेज़ी कानून में तो, कानून उपस्थित करने वाले अथवा बनाने वाले का जो उद्देश्य होता है, जज उससे भी भिन्न उस कानून की व्यवस्था कर देता है और जज की बात माननीय होती है, कानून बनाने वाले की नहीं।"

मिसेज़ सूरी ने पूछा, "ऐसा क्यों होता है?"

"इसका एक ही अर्थ निकलता है कि कानून उपस्थित करने वाला, प्रायः कानून उपस्थित करते समय उद्देश्यों का वर्णन, संसद् के सदस्यों तथा जनता को धोखे में रखने के लिए ही करता है। उसका वास्तविक उद्देश्य तो वही होता है, जो जज वर्णन करता है।

"यही बात यूरोपियन जातियों के व्यवहार की सूचक है और इसी बात के लिए यूरोपीय भाषाओं का विकास हुआ है।

इस कारण ही भाषा की श्रेष्ठता इस बात में मानी जाने लगी है कि लेखक के कथन का भिन्न-भिन्न अर्थ निकाला जा सके ।

"हिन्दुस्तानी चरित्र, व्यवहार और भाषा में यह बात नहीं है ।"

* * *

मिल्ली लालचन्द के मुख से भाषा के विषय में इस प्रकार का वर्णन सुन विस्मय करती रही । किन्तु अपने मन को वह लालचन्द की बात मानने के लिए तैयार नहीं कर सकी । इस पर भी उसके कथन का खन्डन करने की योग्यता और सामर्थ्य मिल्ली में नहीं थी । उसे कुछ परेशान-सी देख आनन्दप्रकाश ने कहा, "डार्लिंग ! चिन्ता करने अथवा परेशान होने की ऐसी कोई बात नहीं है । मिस्टर साहनी एक अच्छे वकील हैं, यह तो इनका व्यवसाय है कि ये झूठ को सच और सच को झूठ सिद्ध करते रहें ।"

आनन्दप्रकाश के इस कथन पर लालचन्द हँस पड़ा । मीना भी हँस रही थी । लालचन्द ने कहा, "मैंने जो कहा है, वह ठीक ही है । इस पर भी आपको अधिकार है कि आप उसे स्वीकार करें अथवा न करें ।

"अब सुनिये भावों की बात । यह कहा जाता है कि शैक्सपियर मानव-मन और प्रकृति का बहुत ही उत्तम रीति से वर्णन करता है । यह ठीक है । परन्तु हमारे शास्त्रकार और लेखक मानव-मन और प्रकृति को संस्कारों की देन मानते हैं । मानव की पशुओं की भाँति ही प्रकृति है । काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये मानव-मन के गुण माने जाते हैं, जो सर्वथा पशुओं में भी पाये जाते हैं । इसी कारण हमारे यहाँ इनको

विकारों के नाम से स्मरण किया जाता है। मानव की श्रेष्ठता इन विकारों से ऊपर उठने में मानी जाती है। जितना ही कोई मनुष्य इन नैसर्गिक विकारों को अपने आधीन कर, इनसे पृथकता प्राप्त करता है, उतना ही हम उसको मानव मानते हैं।

"इसी कारण महर्षि ने एक आदर्श मानव 'राम' का चरित्र-चित्रण किया है। उसने अन्य मानवों का भी, जो काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहँकारादि विकारों से न्यूनाधिक प्रभावित हैं, चरित्र-चित्रण किया है। परन्तु इन विकारों को मनुष्य के स्वाभाविक गुण मान क्षम्य नहीं माना। एक आदर्श मानव 'राम' का चरित्र तुला के एक पलड़े में रख, अन्य सबकी महिमा उसी के अनुपात से कर दी है।

"यह भी हमारे तथा यूरोपियन समाज के बनावट में भिन्नता का एक कारण है।"

मिल्ली को भोजन बहुत ही स्वादिष्ट प्रतीत हुआ। विशेष रूप में दही और मीठी सोंठ में सने भल्ले तो उसको बहुत ही अच्छे लगे और उसने उन्हें जी भरकर खाया।

इसके विपरीत उसको लालचन्द की बातें अरुचिकर प्रतीत हुईं। यद्यपि उसने केवल स्कूल की परीक्षा ही उत्तीर्ण की थी और उसका शैक्षणिक ज्ञान उपन्यासों तक ही सीमित था, तथापि शैक्सपियर, मिल्टन, टेनिसन, बर्नार्ड शा के लिए वह अपने मन में पर्याप्त श्रद्धा रखती थी। शैक्सपियर तो, विशेषरूप में, उनकी जातीय महिमा का प्रतीक था। उसके विषय में इस प्रकार की समालोचना उसे तनिक भी नहीं भाई।

अतः वह लालचन्द के घर से विचित्र प्रकार का प्रभाव लेकर आई। मार्ग में उसने आनन्दप्रकाश से पूछा, "मिस्टर साहनी

का कथन सत्य था क्या ?"

"उसकी सत्यता और असत्यता के विषय में तो मैं कुछ नहीं कह सकता। क्योंकि मैंने वाल्मीकि अथवा तुलसी को पढ़ा नहीं है। हाँ, शैक्सपियर का कुछ अध्ययन किया है। मैं उसको बहुत पसन्द करता हूँ।"

"मिस्टर साहनी कहते थे कि रामायण के लेखक ने सब प्रकार के चरित्रों का चित्रण किया है, परन्तु श्रेष्ठता अधिक उसको दी है, जिसने मानव-प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है।"

"वास्तविक मानव-प्रकृति को तो वह पशु-प्रकृति कहता था।" इतना कह आनन्दप्रकाश हँस पड़ा और मिल्ली भी हँसने लगी। आनन्दप्रकाश आगे कहने लगा, "जो प्रकृति को दबाकर उस पर विजय प्राप्त करता है, वह मानव है, मैं इस बात को स्वीकार नहीं करता। जो कुछ, जैसा प्रकृति ने हमको बनाया है, उसके अनुकूल रहना ही मैं मानव धर्म मानता हूँ।

"इसीलिए हैमलेट पढ़ने से पाठक की हैमलेट के साथ सहानुभूति हो जाती है, किन्तु रामायण पढ़ने से बाली के साथ नहीं, प्रत्युत सुग्रीव के साथ सहानुभूति होती है।"

आनन्दप्रकाश की इन बातों का प्रभाव यह हुआ कि मिल्ली सूरी को, हिन्दुस्तानी विचारों के प्रति घृणा और अंग्रेज़ी विचारों के प्रति और भी अधिक प्रेम रहने लगा।

मनाली में पन्द्रह दिन तक पति-पत्नी बहुत घनिष्ठतापूर्वक रहे थे। आज चण्डीगढ़ में विवाह के पश्चात् पहली ही रात्रि में मिल्ली ने अपने सोने के कमरे में जाकर भीतर से द्वार बन्द कर लिया।

अगले दिन आनन्दप्रकाश ने ब्रेकफास्ट करते समय पूछा, "रात कैसी रही ?"

"बहुत शानदार।"

इस उत्तर को सुन, आनन्दप्रकाश भौंचक्का हो मिल्ली का मुख देखता रह गया। उसने विस्मय में कहा, "मैं तो समझता था कि कपड़े बदलने के लिए तुमने द्वार बन्द किया है और कपड़े बदलकर तुम मेरे कमरे में आ जाओगी। किन्तु तुम तो जाकर सो ही गई। मैंने एक घंटे की प्रतीक्षा के पश्चात् तुम्हारे कमरे का द्वार खोलने का यत्न किया, परन्तु वह बन्द था और तुम्हारे खुर्राटों की आवाज़ बाहर तक आ रही थी।

"मैं सारी रात बेचैन और परेशान रहा हूँ।"

"ओह डीयर ! हमको अब अपना स्वभाव बदलना पड़ेगा। मनाली में तो हम छुट्टी पर थे, किन्तु यहाँ जीवन के अन्य कार्य भी तो हैं।"

"तुम मेरा अभिप्राय नहीं समझी डार्लिंग ! मैं तो पति-पत्नी में संगत, विचार-विनिमय और परस्पर ज्ञानवृद्धि के लिए कह रहा था।

"मनाली में तो हम दिन-भर साथ-साथ रहते थे। यहाँ इकट्ठे रहने से हम अपने स्वभाव को एक-दूसरे के समान बना रहे थे। यहाँ इकट्ठे रहने का समय तो केवल रात को ही मिला करेगा। नाश्ते के बाद मैं कार्यालय चला जाया करूँगा। वहाँ से लौटकर चाय पी, मैं क्लब चला जाया करता हूँ। क्लब से लौट भोजन का समय हो जाता है और यदि उसके बाद तुमने स्वयं को कमरे में बन्द कर लिया तो हमारे परस्पर मेल-जोल के लिए फिर समय ही कौन सा रहेगा ?"

"रहेगा क्यों नहीं ?" मिल्ली ने टोस्ट पर मक्खन लगाते हुए कहा, "मैं आपके साथ क्लब चला करूँगी। वहाँ हम परस्पर भी मिला करेंगे और अपने मित्रों से भी । फिर रात के खाने के पश्चात् ड्राइंग-रूम में बैठ, सिगरेट का आनन्द लेते हुए हम कुछ समय परस्पर मेल-जोल के लिए निकाल लिया करेंगे ।"

"और यदि हम एक ही कमरे में सो जाया करें तो ?"

"नहीं-नहीं, यह सभ्यता के विपरीत है। 'सैक्स इण्डेलजेंस' को सीमित रखने का यही एक उपाय है ।"

"परन्तु विवाह से पूर्व तो तुमने इस प्रकार की कोई बात नहीं कही थी ।"

"इसमें कारण था ।"

"क्या कारण था वह ?"

"वह कारण हमारे समाज की प्रथा है। युरोपियन समाज में लड़कियों को वर स्वयं ढूँढ़ना पड़ता है। इस कारण हमको संयम की बातें करके लड़कों को भगा देना उचित प्रतीत नहीं होता। जब तक लड़कियाँ लड़कों से स्वतन्त्रतापूर्वक न मिलें, उनके साथ होटलों, पार्टियों, रेस्टोरेंटों इत्यादि में अथवा सिनेमा-थियेटरों तथा नाचघरों में न जायँ और अपने आकर्षण की परिधि में उनको न लावें, तब तक विवाह निकट होने में आते ही नहीं ।"

"और अब विवाह हो गया है। इस कारण मुझको अपने आकर्षण की परिधि में रखने की आवश्यकता नहीं रही न ?"

"यह बात नहीं डीयर ! तुम तो व्यर्थ में नाराज़ हो रहे हो। मैं तो अपने तथा तुम्हारे, दोनों के लिए बात कह रही हूँ। तुमको मेरे लिए और मुझको तुम्हारे लिए कानून ने सुरक्षित कर रखा है। परन्तु अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित और परिवार को

सीमित रखने का उत्तरदायित्व तो हमारे अपने ऊपर ही है न ?"

मिल्ली के इस कथन के पश्चात् आनन्दप्रकाश चुप कर गया। उस दिन से रात्रि के डिनर के पश्चात् सिगरेट और एक-एक पैग ह्विस्की का रख, उनका सेवन करते हुए वे भिन्न-भिन्न प्रकार के वार्तालाप में मग्न, एकाध घण्टा ड्राइंग-रूम में बैठते। पश्चात् दोनों अपने-अपने बैड-रूम में चले जाते। मिल्ली अपने कमरे के द्वार को भीतर से बन्द कर लेती थी। आनन्दप्रकाश अपने कमरे का द्वार खुला रखता था।

कभी-कभी सोने के लिए जाने से पूर्व मिल्ली की ओर प्रेम भरी दृष्टि से देखते हुए आनन्दप्रकाश पूछता, "मिल्ली ! मिल्ली डियर ! विल यू ······।"

मिल्ली का इस पर उत्तर होता, "नो-नो ·· आज नहीं।"

दीर्घ निःश्वास छोड़ता हुआ आनन्दप्रकाश कहता, "आल-राइट।" और मन्द गति से अपने कमरे की ओर चल देता।

*　　　*　　　*

आनन्दप्रकाश ने नये सिरे से अपने कार्यालय का संगठन किया तो पन्द्रह क्लर्कों की, पाँच चपरासियों की और एक मोटर-गाड़ी, अलमारियों, पुस्तकों, जर्नल्ज़ तथा अन्य इसी प्रकार के सामान की सूची बनाकर उसने सेक्रेटरी के पास भेज दी। वहाँ से स्वीकृति प्राप्त होने पर क्लर्क भरती किये जाने लगे। अब आनन्दप्रकाश ने साधुराम को चण्डीगढ़ बुला लिया।

साधुराम के आने पर आनन्दप्रकाश ने उससे कहा कि वह कार्यालय-सुपरिन्टैंडेंट के पद के लिए प्रार्थना-पत्र दे दे। उस पद का वेतन साढ़े चार सौ से आरम्भ होकर नौ सौ रुपये तक का था।

साधुराम ने कुछ विचार कर कहा, "भाई साहब ! मुझे इस

नौकरी में रुचि नहीं है।"

"क्यों ? वहाँ पर अपने काम से क्या कमा लेते हैं आप ?"

"कमाई तो कुछ अधिक नहीं है। डेढ़ सौ रुपया मासिक तो अपने समाचार-पत्र से मिलते हैं। साथ ही मैं मास में चार-पाँच ऐसे लेख लिखकर अन्य समाचार पत्रों में भेज देता हूँ, जिनसे दो-अढ़ाई सौ रुपया मुझको मिल जाता है। इस प्रकार तीन साढ़े तीन सौ रुपये की आय हो जाती है। परन्तु मेरे वर्तमान कार्य में मुझको सोचने, लिखने और बोलने की स्वतन्त्रता है, जो सरकारी नौकरी में नहीं रहेगी।"

"परन्तु मिस्टर सिन्धु ! हमारा कार्य तो एक राष्ट्रीय कार्य है। हम राष्ट्र का जीवन-स्तर उच्च करने का यत्न कर रहे हैं। यह तो एक बहुत ही पुण्य का कार्य है। देखिये, हम ऐसा यत्न कर रहे हैं कि प्रथम पंचवर्षीय योजना में भारत को अन्नादि के विषय में आत्म-निर्भर कर दें। हमें पूर्ण आशा है कि अपने इस प्रयत्न में हम सफल होंगे। बताइये, आपकी स्वतन्त्रतापूर्वक आलोचना से राष्ट्र का क्या उपकार होगा ?"

साधुराम खिलखिला कर हँस पड़ा। वह बोला, "अपना-अपना विचार है। आप जिसे पुण्य का कार्य कहते हैं, उसे करिये और मैं यह समझता हूँ कि मैं जनता को यह बताकर कि आपकी योजना निराधार है, उससे देश भोजन आदि के विषय में आत्म-निर्भर नहीं हो सकता, भारी पुण्य का कार्य कर रहा हूँ।"

"ऐसी बात नहीं है। यदि आपको हमारा ढंग पसन्द नहीं है और आप अपने ढंग को ठीक समझते हैं तो आप अपनी योजना चलाइये, हम आपको मना तो नहीं करते ?"

"मना करने वाले आप हैं कौन ? वे तो कोई और हैं और वे राजनीतिक नारे लगा-लगा कर सत्ता को हथियाये हुए हैं। राजनीतिक कार्यों को छोड़ देश की आर्थिक, व्यवसायिक और आध्यात्मिक प्रगति को अपने हाथ में कर, वे समझ रहे हैं कि हमारा जीवन-स्तर ऊँचा हो रहा है। वे राजनीतिक नेता राजनीति के प्रभाव में किधर को जा रहे हैं, यह एक विचारणीय बात है। परन्तु आर्थिक, व्यवसायिक और आध्यात्मिक विषय में वे मूढ़ मति अनधिकार हस्तक्षेप कर, देश को भूखा, नंगा और अनाचारी बना रहे हैं।"

"तो आपने ऐसे लोगों को पिछले चुनावों में हरा क्यों नहीं दिया ?"

"पिछले चुनावों में हम उनको हरा नहीं सके। उस समय वे महात्मा गांधी की जय-जयकार करते हुए, कांग्रेस-रूपी बैलों के मुख में आटे का पेड़ा देते हुए, विजयी हो गये। गांधी का नाम लेकर विजय प्राप्त करने वाले अब समाजवादी समाज बनाने की योजना बना बैठे हैं। इस समाजवादी समाज की रूपरेखा बनाने की उन्होंने आवश्यकता नहीं समझी है। कदाचित् उसका निश्चय वे आगामी निर्वाचनों के पश्चात् ही करेंगे।

"यह इस कारण नहीं कि उनके मन में इस प्रकार के समाज की रूपरेखा स्पष्ट नहीं है अथवा वे इस विचित्र शब्द के अर्थ नहीं जानते। समाजवादी समाज का सबसे बड़ा पक्षपाती जानता है कि उसका इस समाज में और साम्यवादी समाज में किसी प्रकार का भी अन्तर नहीं है। केवल निर्वाचन जीतने के लिए ही वह इसके अर्थ को अस्पष्ट रख रहा है, जिससे निर्वाचन के समय वह इसके गलत-सलत अर्थ समझाकर, सरलचित्त

मतदाताओं को धोखे में डाल सके ।"

"तो आप क्या कहते हैं ? मैं तो राजनीतिक नेता हूँ नहीं। यदि आप कोई ऐसी योजना बता सकते हैं, जो हमारी योजना से श्रेष्ठ हो, तो विश्वास रखें कि हम उसको कार्यान्वित करने का यत्न करेंगे ।"

"आपके पास 'इण्डियन इकॉनोमिस्ट' पत्र आता है क्या ? यदि आता है तो पिछले पाँच मास की प्रतियाँ निकलवाकर मेरे लेख पढ़ लीजिये ।"

"मैंने एक लेख पढ़ा था। वह था 'कौ, दि कॉर्नर स्टोन औफ फूड सफिशियंसी प्लान ।' परन्तु मुझको वह योजना पसन्द नहीं आई ।"

"क्या दोष है उसमें ?"

"वह तो धार्मिक मनोद्गारों पर आधारित है ।"

"और धर्म से आपको घृणा है न ? परन्तु भाई साहब ! वास्तविकता यह नहीं है। उस लेख में एक शब्द भी धर्म अथवा कर्म के आदर्शों के सम्बन्ध में नहीं था। मैंने यह नहीं लिखा कि गोहत्या से कांग्रेसियों को नरक मिलेगा। मैंने तो यही लिखा है कि गोहत्या से देश का अमूल्य धन नष्ट किया जा रहा है। मैंने लिखा था कि गोहत्या की स्वीकृति देने वाले उस मूर्ख लकड़हारे के सदृश ही हैं, जो चन्दन के पेड़ को जलाकर कोयले के भाव पर बेच रहा है ।"

"देखिये मि० सिन्धु ! हमारी योजना तो यह है कि इस गाय-बैल के पचड़े से शीघ्रातिशीघ्र मुक्ति मिले। इस कारण हम

इनकी खालों को देश से वाहर भेजने का प्रयास कर रहे हैं। जब इनकी संख्या पर्याप्त कम हो जायेगी, तब हम अपने बच्चों के दूध के लिए अच्छी गौओं की एक सीमित संख्या यहाँ रख लेंगे और खेती-बाड़ी ट्रैक्टरों से तथा मशीनों से करवायेंगे।

"इसके लिये हमको मशीनों के कारखाने देश में स्थापित करने हैं। इन मशीनों के लिये स्थान की आवश्यकता है और उसके लिये हम लाखों टन लोहा उत्पन्न करने के लिये वड़े-वड़े स्टील प्लांट लगा रहे हैं।

"हमको अपनी मशीनों को चलाने के लिये विद्युत चाहिये। उसके लिये हम बड़े-बड़े 'मल्टि-परपज़िज़ डैम्स' का निर्माण कर रहे हैं।

"आप देखेंगे कि शीघ्र ही आपकी 'इकॉनोमी का कॉर्नर-स्टोन' गाय एक अनावश्यक, व्यर्थ का भूसा खाने वाली पशु-मात्र रह जायेगी।"

"देखिये मिस्टर सूरी!" सिन्धु ने बात को समाप्त करते हुए कहा, "आपका यह सारा प्लान असफल रहेगा। इन सब योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए, जो आधार है अर्थात् धन, उसकी आपको आवश्यकता रहेगी और उसको आप जनता का रक्त चूसकर प्राप्त करने का यत्न करेंगे। परिणाम यह होगा कि या तो आपको कौंसिलें तथा पार्लियामेंट बन्द कर, सेना के बल पर राज्य चलाना पड़ेगा अन्यथा शीघ्र ही आपका इन वैधानिक सभाओं में बहुमत समाप्त हो जायेगा। तब आप को रूस अथवा चीन की भाँति यहाँ भी डिक्टेटरशिप की स्थापना करनी पड़ेगी अन्यथा......अन्यथा कह दूँ?"

"हाँ-हाँ, कह दीजिए। यहाँ डरने की आवश्यकता नहीं।"

"मैं अपने लिए नहीं डर रहा। मैं एक सरकारी अफ़सर के बंगले में सत्य भाषण करने से डर रहा हूँ। यदि आपको आपत्ति नहीं तो सुन लीजिए।

"आपकी योजना न तो भोजन के विषय में दश को आत्म-निर्भर कर सकेगी, न ही जीवन की सुख-सुविधा उपलब्ध करेगी। जन-साधारण निर्धन हो जायेगा और आपकी योजना द्वारा निर्मित वस्तुएँ क्रय करने की शक्ति उनमें नहीं रहेगी। इससे ऊबकर वे वर्तमान नेताओं को राज्यच्युत् कर देंगे और पश्चात् इन नेताओं का 'इम्पीचमेंट' होगा। तब इनको दोषी मान फाँसी के तख्ते पर लटका दिया जायेगा अथवा आजन्म कैद का दण्ड दिया जायेगा।"

"किन्तु ऐसी स्थिति आने से पूर्व ही यहाँ सैनिक राज्य हो जायेगा।"

"और आपकी योजना सफल हो जायेगी। एक श्रमिक का वेतन तो पाँच-सौ रुपया हो जायगा, साथ एक बूट का दाम दो-सौ रुपया होगा।"

"वह कैसे ?"

"जैसे योजनाओं के देश रूस में हो रहा है। इतना ही नहीं, प्रत्युत वहाँ की भाँति यहाँ भी किसी को कुछ कहने-सुनने की स्वतन्त्रता नहीं होगी।"

"आपका मस्तिष्क ठीक काम नहीं कर रहा है। मैं समझता हूँ कि आप जैसे व्यक्तियों के लिए सरकारी नौकरी नहीं है।"

"अच्छी बात है भाईसाहब ! आज तो मैं जा रहा हूँ;

परन्तु शीघ्र ही मैं अपना कार्यालय चण्डीगढ़ में लाने वालाहूँ। मुझको बंगाल और दक्षिण भारत के कुछ पत्रों का संवाददाता नियुक्त किया जा रहा है। नियुक्ति होते ही मैं यहाँ पर एक स्वतन्त्र संवाददाता के रूप में आकर रहने लगूँगा। तब आपके दर्शनों का सौभाग्य अधिक प्राप्त होगा।"

द्वितीय परिच्छेद

चण्डीगढ़ क्लब में सदस्यगण अपनी पत्नियों को लेकर कम ही आते थे। इस कारण मिल्ली सूरी को वहाँ प्रायः पुरुषों से ही वास्ता पड़ता था। कभी कोई स्त्री आती भी थी तो वह मिल्ली से दो-चार बातें कर ही ऊब जाती थी। मिल्ली नहीं जानती थी कि स्त्रियाँ किस प्रकार के वार्तालाप में रुचि रखती हैं।

मिल्ली अब कुछ-कुछ हिन्दुस्तानी समझने लगी थी और टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी में पंजाबी स्त्रियों से बात भी कर लेती थी। पुरुषों से तो वह अंग्रेज़ी में ही बातें करती थी।

मिल्ली को पिंगपौंग खेलने में बहुत रुचि थी और वह बहुत अच्छा खेलती भी थी। पिंगपौंग से उतर कर वह ब्रिज खेलती थी। कभी ब्रिज पर कई-कई रुपयों की बाज़ी भी लगा देती थी।

नवलकिशोर की बीवी सान्त्वना प्रायः सायंकाल क्लब में आया करती थी। उससे मिल्ली की मित्रता हुई तो नवलकिशोर से भी होने लगी। जिस दिन सान्त्वना नहीं आती, उस दिन तो नवल के लिये मिल्ली अधिक आकर्षण वाली बन जाती थी।

फिर ऐसा समय भी आया कि क्लब में नवल मिल्ली की और मिल्ली नवल की प्रतीक्षा में रहने लगे। उनकी मित्रता की

चर्चा क्लब के सदस्यों में मनोविनोद का विषय बनती गई।

आनन्दप्रकाश को इन दिनों टैनिस का शौक हो आया था। वह जब बाहर लॉन में टैनिस खेलता होता, मिल्ली और नवल हाल के किसी कोने में बैठे या तो ताश खेलते या चाय के प्याले पर बातें करते।

मिल्ली को सिगरेट पीने का शौक था और नवल भी इसमें उससे कम नहीं था। दोनों खेलते अथवा बातें करते हुए, रात के साढ़े नौ-पौने दस बजे तक दो-तीन डिबियाँ सिगरेट की फूँक देते थे।

प्राय: आनन्दप्रकाश स्वयं आता और नवलकिशोर से कहता, "मिस्टर बत्रा! अब छोड़ो। भूख लगी है।"

जाने की इच्छा न करते हुए भी मिल्ली को खेल छोड़नी पड़ती और पति की मोटर में घर की ओर चल पड़ती।

क्लब में लोगों के लिये किसी प्रकार का कार्य न होने के कारण, दूसरों की निन्दा करना एक कार्य बन गया था। इसके लिये दूसरों के कार्यों को जानने की लालसा जाग पड़ती थी और फिर किंचित् मात्र के ज्ञान पर कल्पना के सूत्र काते जाते थे।

मिल्ली के विवाह को एक वर्ष हो चुका था। इस काल में क्लब के सब सदस्य मिल्ली को नवल की मिस्ट्रेस मानने लगे थे। पहले तो लालचन्द को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ, परन्तु एक दिन उसने नवल से पूछा तो वह चकित रह गया।

नवल ने कहा था, "मिल्ली एक सुन्दर औरत है। मुझे बहुत प्यारी लगती है। मैं सप्ताह में एक-दो दिन उसके बैड-रूम में जाया करता हूँ।"

"यह तो नीचता है मिस्टर नवल!"

"जो कुछ भी कहो। हाँ, एक बात है। यदि मैं उसका उपभोग न करता तो कोई अन्य कर लेता। वास्तव में वह आनन्दप्रकाश को पसन्द नहीं करती।"

"कुछ भी हो, वह आनन्दप्रकाश की पत्नी है। उसको अपने कर्त्तव्य से भ्रष्ट करना कोई अच्छा कार्य नहीं।"

"देखिये मिस्टर साहनी! आप मेरे मित्र हैं। इस कारण आपको बताता हूँ। पहल मेरी ओर से नहीं, प्रत्युत उसकी ओर से ही हुई है। आनन्दप्रकाश दौरे पर गया हुआ था। मुझे उसने घर पर आमन्त्रित किया, भोजन खिलाया और फिर अपने सोने वाले कमरे के पिछले दरवाज़े तक, बिना किसी के देखे, पहुँचने का मार्ग बता दिया। रात के बारह बजे के पश्चात् मुझे वहाँ बुला लिया।

"तब से अब सप्ताह में दो-तीन बार निमन्त्रण मिलता है। सान्त्वना एक समझदार औरत होने से, मेरे उससे सम्बन्ध को समझ गई है और मुझसे लड़कर अपनी माँ के घर चली गई है।"

"यह तो और भी अनर्थ कर रहे हो।"

"मैं उसको सौ रुपया मासिक खर्चे के लिये भेज देता हूँ।"

लालचन्द यद्यपि मिल्ली से कुछ इसी प्रकार की उच्छृंखलता की अपेक्षा रखता था, तथापि नवल से उसे इस प्रकार की आशा नहीं थी। साथ ही उसको उसकी पत्नी सान्त्वना की बात सुन, बहुत ही दुःख हुआ। उसने मन में निश्चय कर लिया कि वह आनन्दप्रकाश को बचाने का यत्न करेगा।

अगले दिन उसने आनन्दप्रकाश को टेनिस से खाली हो, क्लब की लौंज में बेंत की कुर्सी पर बैठ, आराम करते देखा तो वह उसके समीप आ गया। उसने कहा, "हेलो मिस्टर सूरी;

हाउ डु यू डू।" और एक कुर्सी खच उसके पास ही वैठ गया।

आनन्दप्रकाश ने व्यावहारिक भाषा में कह दिया, "वैरी गुड, थैंक यू।"

"देखिये मिस्टर आनन्दप्रकाश! विवाह से पहले मेरी आपसे विवाह के विषय में कुछ बातचीत हुई थी।"

"मुझे सब याद है।"

"तो अब आपके जीवन में वह 'टर्निंग प्वाइंट' आ गया है, जिसकी आशंका मैंने तब व्यक्त की थी।"

"मैं आपकी बात नहीं समझा।"

"पूर्ण क्लब में यह चर्चा चल रही है कि मिल्ली और नवल में विशेष सम्बन्ध बन रहा है अथवा बन चुका है।"

"मुझको इस पर विश्वास नहीं।"

"विश्वास तो मुझको भी नहीं आता। परन्तु क्लब का प्रत्येक सदस्य यही कहता है। मैं समझता हूँ कि इस सम्भावना को रोकने का यत्न करना चाहिये। कम-से-कम समाज में निन्दा का कारण नहीं रहने देना चाहिये।"

"इस सम्मति के लिये मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। मैं इस विषय में जो कुछ हो सकेगा, करूँगा।"

इतना कह आनन्दप्रकाश वहाँ से उठा और उस ओर चला गया, जहाँ नवल और मिल्ली बैठे सिगरेट का धुआँ उड़ाते हुए बातचीत कर रहे थे। उसने एक कुर्सी खैंच, उनके समीप कर बैठते हुए कहा, "क्या मैं भी एक सिगरेट पी सकता हूँ?"

"ओह, क्यों नहीं?" नवल ने डिब्बी खोल उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा, "गोली किसकी और गहने किसके!"

आनन्दप्रकाश ने सिगरेट लेते हुए कहा, "मैं अपना सिगरेट

केस आज दफ्तर में भूल आया हूँ। सुनाओ मिस्टर बत्रा ! काम-काज कैसा चल रहा है ?"

"बहुत अच्छा है। दिन-प्रतिदिन मुकद्मे बढ़ते जा रहे हैं और वकीलों की चाँदी बन रही है।"

"हमारा यह अनुमान है कि देश समृद्ध हो रहा है। अंग्रेज़ों के काल में एक बार गेहूँ पाँच रुपये मन हुआ था तो वह शोर मचा था कि सरकार को विदेशों से गेहूँ मँगाकर सस्ते दाम पर बेचना पड़ा था। उस समय भूख से कई लोग मर गये थे।

"अब तो गेहूँ का नॉर्मल भाव सोलह-सत्रह रुपये मन हो गया है। परन्तु देश में न तो कोई शोर है और न ही कहीं भूख से कोई मरता देखा गया है।

"इससे यह प्रकट हो रहा है कि देश में आय बढ़ रही है और लोग सुखी हैं और इकॉनोमिक्स के सिद्धान्त के अनुसार जब लोग सन्तुष्ट और सम्पन्न हो जाते हैं, तो क्राइम कम होते हैं और आप इसके विपरीत बात बता रहे हैं।"

"यह बात स्पष्ट है सूरीसाहब कि डाकुओं की संख्या बहुत बढ़ गई है। डाके भी बहुत पड़ने लगे हैं। चोरी, रिश्वत-खोरी और चुगली की घटनाएँ बहुत हो रही हैं। इससे यही मानना पड़ेगा कि इकॉनोमिक्स का सिद्धान्त भ्रामक है।"

"चोरी, डाका और कत्ल इसलिये नहीं होते कि लोग भूखे हैं, यह तो किसी अन्य कारण से होते हैं।"

"किस कारण से होते हैं ये कार्य ?"

"मेरे विचार में यह तो चरित्रहीनता के कारण हो रहा है। चरित्र दिन-प्रतिदिन गिर रहा है और यह अभी और गिरेगा।"

"क्यों ?"

"इसलिये कि चरित्र-निर्माण के लिये देश में कोई वस्तु नहीं रह गई। शिक्षा धर्मनिरपेक्ष होती-होती धर्म-विरोधी होती जा रही है। धर्म, कर्म पर से जनसाधारण की निष्ठा लोप होती जा रही है और इस निष्ठा को बनाये रखने के लिये कोई उपाय नहीं किया जा रहा है। देश की सरकार देश-प्रेम को भी अब कोई महत्ता नहीं देती। वह अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर ही अपना ध्यान और शक्ति लगा रही है।"

"आनन्दप्रकाश का, नवलकिशोर के मुख से इस प्रकार की बातें सुन वह सन्देह, जो लालचन्द की बात ने उसके मन में उत्पन्न किया था, सर्वथा मिट गया। वह अपने मन में अपनी पत्नी के विषय में सन्देह उत्पन्न होने पर, मन ही मन ग्लानि का अनुभव करने लगा। जो व्यक्ति चरित्र की इतनी महिमा गाता है, वह एक मित्र की पत्नी को पथभ्रष्ट करेगा, यह उसकी समझ में नहीं आया।

आनन्दप्रकाश ने कहा, "तो फिर आजकल तो आपकी पाँचों घी में हैं ?"

"हाँ मिस्टर सूरी ! मैं कभी-कभी मन में विचार करता हूँ कि भगवान पण्डित जवाहरलाल नेहरू को सौ वर्ष का जीवन प्रदान करे, जिससे वह जो कोई भी धर्म, संस्कृति, परमात्मा, पुनर्जन्म और कर्मफल की बात करे, उसको फिरकापरस्त, कौम का शत्रु कहकर निन्दनीय बनायें और जो आत्मा-परमात्मा की खिल्ली उड़ाये, उसको गले लगाये। इससे मेरे जीवन-भर का कार्य तो चल जायेगा। आशा करता हूँ कि यदि पाँच-छः वर्ष और इसी प्रकार के लग गये तो मैं इतना कमा लूँगा कि फिर काम करने की आवश्यकता नहीं रहेगी।"

आनन्दप्रकाश हँस पड़ा। हँस कर उसने कहा, "परन्तु मिस्टर बत्रा ! एक बात आप नहीं समझ रहे। मेरे एक बहनोई हैं। वे कहते हैं कि पण्डितजी देश में साम्यवाद ला रहे हैं। उनका विचार है कि यदि यह साम्यवाद देश में आ गया तो सब कमाया हुआ धन छिन जायेगा।"

"वह तो सभी के साथ होगा। जो औरों के साथ हो, उसे मैं भी सह लूँगा। परन्तु अब तो बात दूसरी है न ?

"मेरा एक भाई है। उसने भाखड़ा डैम में किसी प्रकार का ठेका लिया हुआ है। पिछले पाँच वर्ष में एक करोड़ रुपये की सम्पत्ति बना ली है। जब तक उसके पास एक करोड़ है, मेरे पास भी तो दस-बीस लाख हो जाना चाहिये। जब धन हरण किया जायेगा तो मुझको भी अपने धन के हरण होने का खेद नहीं होगा।"

इस पर आनन्दप्रकाश को पुनः नवलकिशोर पर सन्देह हो गया। वह मन में विचार करता था कि यह तो महाबेईमान और स्वार्थी व्यक्ति है। इस कारण वह उसके सम्पर्क से अपनी पत्नी को पृथक करने की योजना बनाने लगा।

एकाएक आनन्दप्रकाश ने अपनी घड़ी में समय देखा और मिल्ली से कहा, "डार्लिंग ! अब चलना चाहिये।"

"अभी तो साढ़े आठ ही बजे हैं।"

"मुझे कुछ काम है। मुझे एक पत्र ड्राफ्ट करना है।"

"देखिये जी ! दफ्तर का कार्य घर पर नहीं लाना चाहिये। मैं तो आपको घर पर कार्य नहीं करने दूँगी।"

"आज तो अब ले आया हूँ; भविष्य में ऐसी भूल नहीं करूँगा। आज ड्राफ्ट बना लेता हूँ। कल जाते ही वह स्टेनो के

पास चला जायेगा।"

"कितना लम्बा पत्र है वह ?"

"लगभग पाँच-छः फुलस्केप शीट बनेंगे।"

"मेरा विचार था कि आज मिस्टर बत्रा को भोजन पर निमन्त्रण दे दूँ।"

"और मिसेज़ बत्रा को नहीं ?"

"नहीं, वे चण्डीगढ़ में नहीं हैं।"

"क्यों ? कहाँ गई हैं ?"

इसका उत्तर नवल ने देते हुए कहा, "वह आजकल अपनी माँ के घर गई है।"

"कब से ?"

"लगभग चार मास हो गये हैं।"

"परिवार में कुछ एडीशन होने वाली है क्या ?"

"उसने तो इस प्रकार की कोई बात नहीं लिखी।"

"तो ठीक है, चलिये बत्रा साहब ! आज भोजन यदि हमारे यहाँ ही हो जाय, तो क्या हानि है ?"

* * *

लालचन्द को आनन्दप्रकाश पर दया आ रही थी। यद्यपि वह जानता था कि उसकी हस्तरेखा में पत्नी का वियोग लिखा है, इस पर भी वह इसको रोकना चाहता था।

जब उसने आनन्दप्रकाश को सतर्क किया और उसने, उसे उठकर नवलकिशोर के पास जाते देखा तो हाल के दूसरे कोने में बैठ, सिगरेट पीता हुआ टेढ़ी दृष्टि से वह उनकी ओर देखता रहा। अन्त में जब उसने तीनों को एक साथ ही क्लब से जाते हुए देखा, तो निराश हो घर की ओर चल पड़ा।

आज उसकी पत्नी ने उसका मुख मलिन देखा, तो पूछने लगी, "क्यों, स्वास्थ्य तो ठीक है न ?"

"मैं तो ठीक हूँ, परन्तु सब कुछ ठीक नहीं है।"

इस पर उसने मीना को मिल्ली और नवल के सम्बन्ध के विषय में बता दिया।

"तो फिर आपको क्यों चिन्ता हो रही है ?"

"मैं समझता हूँ कि एक सरलचित्त हिन्दुस्तानी एक धूर्त अंग्रेज़ी औरत से ठगा जा रहा है।"

"सरलचित्त तो होते ही ठगे जाने के लिए हैं।"

"ओह ? तुम भी ऐसा ही समझती हो ?"

"मैं क्या समझती हूँ और क्या नहीं समझती, यह आप भली प्रकार जानते हैं। मेरा सम्बन्ध तो आपसे है। आप ठीक हैं तो सब संसार मेरे लिए ठीक है।"

"यह तो ठीक ही है, परन्तु मैं एक बात और देखना चाहता हूँ। मैंने आनन्दप्रकाश की हस्तरेखा देखी है और उससे उनके विवाहित जीवन का बहुत बुरा परिणाम विदित हुआ है। मैं यह देखना चाहता हूँ कि क्या हम किसी के भविष्य को जानकर, इसको बदल नहीं सकते ? मैं यत्न करके उसके भाग्य को बदलना चाहता हूँ।"

"उसकी बात छोड़ो। आप अपने भाग्य को बदलने का यत्न कर परीक्षण करिये। मुझको तो विश्वास है कि जो भाग्य में लिखा है, वह होकर रहता है। उसको टाला नहीं जा सकता।

"आप बताइये, आपके विवाहित जीवन में क्या लिखा है ?"

"मैंने अपनी जीवन-पत्री बनवाई है। उससे मुझे आजीवन

पत्नी का सुख लिखा हुआ है।"

"मैं यह नहीं पूछ रही। आपके भाग्य में किसी अन्य स्त्री से सम्बन्ध है अथवा नहीं?"

"नहीं, मेरा तो एक ही विवाह लिखा है।"

"तो फिर यदि आपको अपनी ज्योतिष विद्या की परीक्षा करनी है तो आप किसी से सम्बन्ध बनाकर देख लीजिए। कभी बनेगा ही नहीं।"

"यह तो ठीक है कि मेरे मन में इस प्रकार के दुष्कृत्य के लिए अभिरुचि नहीं है, परन्तु मैं यह परीक्षा किसी को पतन की ओर ले जाकर क्यों करूँ? किसी को पतितावस्था से उभार कर क्यों न करूँ?"

मीना अपनी युक्ति की दुर्बलता को समझ गई। इस पर उसने कहा, "यदि परीक्षा करनी है तो आनन्दप्रकाश को समझाने से क्या होगा? समझाना है तो मिल्ली को समझाइये।"

"पर मैं उसको नहीं समझा सकता। हाँ, यदि तुम यत्न करो तो अवश्य कुछ परिणाम निकल सकता है।"

"मैं कैसे कर सकती हूँ? एक तो मैं क्लब में नहीं जा सकती। वहाँ जाने की मेरी इच्छा भी नहीं है। दूसरे मैं अंग्रेज़ी नहीं बोल सकती।"

"मिल्ली अब हिन्दुस्तानी समझने लगी है।"

"इस पर भी मेरा मन नहीं करता। हाँ! यदि आप कहें तो कुछ तो किया ही जा सकता है।"

"मैंने आनन्दप्रकाश का हाथ देखा है और उसके अनुसार जो भविष्य मैं उसका जान पाया हूँ, वह मैंने एक कागज़ पर लिख दिया है। उस लिखे हुए के नीचे मैंने साक्षी के रूप में

नवलकिशोर से भी हस्ताक्षर करा लिये हैं। मैं यह परीक्षण करना चाहता हूँ कि मनुष्य इसको किस सीमा तक बदल सकता है।"

"यह परीक्षण मज़ेदार होने पर भी कठिन है।"

इस दिन के पश्चात् लालचन्द और उसकी पत्नी इसके लिये अवसर ढूँढने लगे। वे चाहते थे कि मिल्ली को इस पतितावस्था से निकालने का यत्न इस ढंग से हो कि उसको इसमें किसी योजना का हाथ न दिखाई दे।

उक्त वार्तालाप के कुछ दिन पश्चात् की बात है, सूरी और साहनी क्लब में पिंगपौंग खेल रहे थे। सदा की भाँति साहनी हार रहा था। इस समय नवल और मिल्ली वहाँ आ खड़े हुए। जब खेल समाप्त हुआ तो साहनी ने कह दिया, "मिसेज़ सूरी नहीं खेलेंगी क्या?"

"किसके साथ खेलूँ?" मिल्ली ने पूछा। फिर कहने लगी, "प्रायः सब हार जाते हैं और मज़ा नहीं रहता।"

"आप खेलकर तो देखिये, आज आप हारेंगी।"

"यह आप किस आधार पर कहते हैं?"

"खेल कर देख लीजिये। यह युक्ति का विषय नहीं है।"

मिल्ली ने बल्ला पकड़ा और लालचन्द साहनी के सम्मुख जा खड़ी हुई। एक बार पहले भी इन दोनों में प्रतियोगिता हुई थी। क्लब के बहुत से सदस्य उसको स्मरण कर, आज पुनः देखने के लिये आ खड़े हुए।

खेल आरम्भ हुआ और मिल्ली हारने लगी। खेल के समाप्त होने पर लोगों ने मिल्ली से सहानुभूति प्रकट करनी आरम्भ कर दी। नवल ने लालचन्द से हाथ मिलाकर उसको बधाई दी।

लालचन्द हँस रहा था। इस पर आनन्दप्रकाश वहाँ आ गया और कहने लगा, "मिस्टर साहनी! आज तो आप बहुत ही बढ़िया खेले हैं।"

"एक दिन पूर्व भी इसी प्रकार खेल चुका हूँ। आपको कदाचित् स्मरण होगा मिस्टर सूरी!"

"तो आइये, इस जीत के उपलक्ष्य में मैं चाय पर आपको आमन्त्रित करता हूँ।"

"वेरी गुड।" नवल ने ताली बजाते हुए कहा।

"परन्तु तुमको नहीं।" लालचन्द ने नवल की ओर मुस्कराते हुए देखकर कहा।

इस पर नवल ने कहा, "तब तो निमन्त्रण मैं देता हूँ और आपको उसमें अवश्य ही सम्मिलित होने के लिये आग्रह करता हूँ।"

इतने में मिल्ली वहाँ पर आ गई और उसने लालचन्द से हाथ मिला कर उसको बधाई देते हुए कहा, "कभी-कभी तो आप बहुत ही अच्छा खेलते हैं।"

"विशेषरूप में जब आप सामने खड़ी हों।"

"इसमें क्या रहस्य है?"

"आपसे बधाई लेने की इच्छा ही इसमें कारण प्रतीत होती है।"

"यह तो कोई युक्ति-युक्त कारण नहीं है।" आनन्दप्रकाश का कहना था।

इस समय तक वे हाल में चाय की मेज़ पर जा चुके थे। लालचन्द ने सबको बैठने के लिये कहा तो मिल्ली ने कह दिया, "असल में तो आज चाय का निमन्त्रण मेरी ओर से होना

चाहिये।"

"क्यों ?" नवल ने पूछा।

"क्योंकि हारी मैं हूँ।"

"आपके हारने पर आपसे सहानुभूति प्रकट करने के लिये यह चाय मेरी ओर से होनी चाहिये।" लालचन्द ने कहा।

इसके पश्चात् ही, मानो लालचन्द को कोई बात स्मरण हो आई हो, उसने चौंकते हुए कहा, "मिसेज़ सूरी ! मेरी पत्नी चाहती थीं कि आपको कभी अपने यहाँ दावत दें। बताइये, आपको कब सुविधा रहेगी ?"

"गुड ! परन्तु अभी तो पिछली दावत के बदले में हमें आप को बुलाना चाहिए था।"

"वह तो अब एक वर्ष पुरानी बात हो गई है। उसको तो छोड़िये और अब नया राउण्ड शुरू कर दें तो कैसा रहे ?"

"इस बार इस राउण्ड को हमारे घर से प्रारम्भ कीजिये।"

"चलिये यही सही। बताइये, हम किस दिन आपके घर पर आयें ?"

इस प्रश्न से मिल्ली ने प्रश्नभरी दृष्टि में अपने पति की ओर देखा। आनन्दप्रकाश ने कहा, "मैं समझता हूँ इस रविवार को ठीक रहेगा।"

लालचन्द ने अपनी जेब में से डायरी निकाल देखकर कहा, "ठीक है. मैं आ सकता हूँ।"

बात निश्चित हो गई। लालचन्द, उसकी पत्नी मीना तथा उसके बड़े लड़के को आमन्त्रित कर दिया गया। नवल की इच्छा थी कि उसको भी बुला लिया जाय, किन्तु न तो आनन्दप्रकाश ने और न ही मिल्ली ने इस ओर ध्यान दिया।

* * *

घर पहुँचकर उस रात्रि मिल्ली ने आनन्दप्रकाश से कहा, "आपको नवल बाबू को भी निमन्त्रण दे देना चाहिये था।"

"क्यों ? मैं इसमें कोई औचित्य नहीं देखता।"

"वह बेचारा आजकल 'लोनली-लाइफ' बिता रहा है।"

"मैं यही तो जानना चाहता हूँ कि वह अपनी पत्नी को क्यों नहीं ले आता ? उस दिन, रात का खाना खाते समय, मैंने पूछने का यत्न किया था। परन्तु उसने बात को टाल दिया। ऐसे व्यक्ति से मैं अधिक सम्पर्क बढ़ाना उचित नहीं समझता।

"इसके विपरीत लालचन्द की बात सुन लो। उसने निमन्त्रण अपनी पत्नी की ओर से दिया था और वह यहाँ पर भी अपनी पत्नी को साथ लेकर आयेगा। अपने लड़के की बात भी उसने स्वयं ही की थी।"

"इसमें अच्छाई की क्या बात है ? इससे तो यही सिद्ध होता है कि साहनी एक 'डोमेस्टिकेटिड ऐनिमल' (पालतू जानवर) मात्र ही है।"

"किन्तु नवल के व्यवहार से यह नहीं पता चलता क्या कि वह एक 'वाइल्ड ऐनिमल' (जंगली जानवर) के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है और ऐसे जंगली जानवरों से क्या पृथक नहीं रहना चाहिये ?"

"आप कुछ दिन से नवलबाबू के विरुद्ध क्यों होते जा रहे हैं ?"

"इसलिये कि वह अपनी पत्नी को घर से निकाल, मेरी पत्नी के आगे-पीछे घूमता रहता है।"

"मैं समझती हूँ कि आप में ईर्ष्या उत्पन्न हो रही है। यह कोई प्रशंसनीय गुण नहीं।"

"ईर्ष्या नहीं, मिल्ली ! इसे तो सावधानी ही कहना चाहिये ।"

"क्यों, आपको किस बात का भय है ?"

"वह वकील है और पैसे वाला है। अच्छा तो यही होगा कि हम उससे दूर ही रहें ।"

मिल्ली ने नवल की अधिक वकालात करना व्यर्थ में आनन्द-प्रकाश के सन्देह को पुष्ट करना समझ, बात को वहीं समाप्त करना उचित समझा । वह चुप रही और मन में विचार करती रही कि क्या उसके पति को उसके सम्बन्ध का ज्ञान हो गया है, अथवा यह अभी सन्देह-मात्र ही है ? वह समझती थी कि सन्देह के लिये भी तो कोई कारण नहीं हो सकता । उसका पति इंगलैंड में रह आया है और वहाँ पत्नी अपने पति के अतिरिक्त भी अन्य व्यक्ति के साथ नाचती-गाती है । जब तक वह रात के समय लौटकर घर आ जाती है, उस पर किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता ।

इस पर भी आनन्दप्रकाश के व्यवहार से वह सतर्क हो गई ।

निश्चित दिन मध्याह्न के साढ़े बारह बजे मीना, लालचन्द तथा उनका लड़का मंगल, जो अब छः वर्ष का हो गया था और स्कूल जाने लगा था, आ पहुँचे ।

आनन्दप्रकाश ने उनको बैठाते हुए लड़के की पीठ पर प्यार से हाथ फेरते हुए पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा ?"

"मंगलस्वरूप ।"

"यह तो बहुत अच्छा नाम है ।"

"मैं तो वैसे भी अच्छा लड़का हूँ ।" मंगल ने बताया ।

इस पर आनन्दस्वरूप ने मिल्ली को सम्बोधन कर कहा, "देखो डार्लिंग ! यह है मंगलस्वरूप । इसके नाम का अर्थ है

'आल-औसपिशस', मैंने जब इसको कहा कि नाम तो बहुत अच्छा है, तो इस पर यह कहता है कि यह स्वयं भी अच्छा है।"

"इज़ इट ?" मिल्ली ने मुस्कराते हुए पूछ लिया—"भला मंगल ! बताओ क्या अच्छाई है तुममें ?"

मीना और लालचन्द मुस्कराते हुए मंगल की ओर देख रहे थे। अपने माता-पिता की दृष्टि में प्रोत्साहन की झलक देख, मंगल ने कहा, "मैं सदा सत्य बोलता हूँ, मैं किसी से डरता नहीं और मैं अपने से बड़ों का कहना मानता हूँ तथा उनका आदर करता हूँ।"

"किन्तु अपने से छोटों के प्रति तुम कैसा व्यवहार रखते हो ?"

"मैं छोटों को प्यार करता हूँ।"

उत्तर देने की इस सतर्कता को देखकर तो सभी हँस पड़े। मंगल इससे कुछ झेंपसा गया, किन्तु शीघ्र ही उस हँसी में सम्मिलित हो गया।

आनन्दप्रकाश ने बात बदलते हुए उससे पूछा, "तुम किस स्कूल में पढ़ते हो ?"

"गवर्नमेंट स्कूल में।"

"वहाँ क्या पढ़ाया जाता है ?"

"अभी तो गुरुमुखी, गणित और देश की बातें सिखाई जाती हैं।"

"देश की क्या बात सिखाई जाती है ?"

"यही कि हमारा देश हिमालय से कन्या कुमारी तक और कच्छ से आसाम तक फैला हुआ है। इसमें पार्लियामेंट राज्य करती है।"

"बहुत खूब ! तुम तो सचमुच ही अच्छे लड़के हो ।"

"परन्तु चाचाजी ! पढ़ने से थोड़े कोई अच्छा-बुरा होता है ?"

"तो फिर किस बात से होता है ?"

"सच बोलने से, चोरी न करने से, नित्य स्नान करने से, साफ-सुथरा रहने से, बड़ों का आदर करने से और छोटों को प्यार करने से ।"

"ये सब बातें क्या तुम्हारे स्कूल में ही सिखाई जाती हैं ?"

"जी नहीं, यह तो मुझे घर पर, माता जी सिखाती हैं ।"

"और क्या-क्या पढ़ाती हैं माताजी तुम्हें घर पर ?"

"वे मुझे हिन्दी पढ़ाती हैं ।"

इस समय मिल्ली ने बताया कि खाना तैयार हो चुका है । आनन्दप्रकाश का बैरा अंग्रेज़ी ढंग का खाना बनाता था । आज उसको कहा गया था कि वह देशी ढंग का खाना बनाये । उसने खीर बनाई थी । भल्ले और चटनी भी बनाई थी । पूरी-पनीर की सब्ज़ी थी, परन्तु न तो कोई वस्तु स्वादिष्ट थी और न ही भलीभाँति बनी हुई थी । खीर में चावल और दूध पृथक-पृथक थे, चीनी कम थी ; भल्ले फूले नहीं थे, दही खट्टी थी । चटनी में मीठा नहीं था । इसी प्रकार सब्ज़ी में नमक बहुत अधिक पड़ गया था ।

आनन्दप्रकाश, जिसको अभी अपनी माँ के बनाये खाने का स्वाद स्मरण था, कुछ भी नहीं खा रहा था । वह खाने का बहाना कर रहा था । मिल्ली देख रही थी कि सब कुछ बिगड़ा हुआ है । मीना और लालचन्द खाने की ओर से ध्यान हटाने के लिए बातें करने लगे थे ।

मिल्ली देख रही थी कि मंगल भी खाने में कठिनाई अनुभव कर रहा था, परन्तु कुछ कह नहीं रहा था। मिल्ली विचार कर रही थी कि यह शिक्षा और शिष्टाचार के नाते चुप है अथवा भय के मारे कुछ नहीं कह रहा है।

ज्यों-त्यों कर खाना समाप्त हुआ तो आनन्दप्रकाश ने क्षमा याचना के भाव में कहा, "हमारा रसोइया अंग्रेज़ी ढंग का खाना बनाता है। आज उसको देशी खाना बनाने के लिए कहा गया, किन्तु वह असफल रहा।"

"लेकिन आपने उससे अंग्रेज़ी ढंग का क्यों नहीं बनवाया ? वह अच्छा रहता।"

"मिल्ली ने समझा कि वह आपको आपकी प्रिय वस्तु खिलाये और रसोइये ने कह दिया था कि वह बना लेगा। अब विदित हुआ कि वह बनाना नहीं जानता है।"

इस पर मीना ने कह दिया, "हमारा विचार तो यह रहता है कि हम अपने आमन्त्रितों को वह वस्तु खिलायें, जो हम पसन्द करते हैं और फिर देखें कि उनको प्रसन्न कर सकते हैं अथवा नहीं ?"

"मैं समझता हूँ कि यह नीति अच्छी है। भेंट देने वाले के पसन्द की होनी चाहिये। तभी तो पता चलता है कि वह अतिथियों को अपनी सर्वप्रिय वस्तु देना चाहता है। अतिथि को उसकी पसन्द की वस्तु लाकर देना तो यह प्रकट करता है कि हम उनके डर के मारे अपना व्यवहार बना रहे हैं।" लालचन्द का यह मत था।

मिल्ली को अतिथि सेवा की यह नवीन विवेचना भली प्रतीत

हुई। इस पर भी इस युक्ति की हँसी उड़ाने के लिए उसने कह दिया, "एक पुरुष के लिए उसकी सर्वप्रिय वस्तु तो उसकी पत्नी होती है।"

"बात तो आपने सर्वथा युक्तियुक्त की है। परन्तु आप यह बात भूल रही हैं कि इतनी सेवा और सुहृदयता तो सभ्य व्यक्तियों से ही की जाती है और वे 'होस्ट' की पत्नी को बहिन बना, स्वीकार कर लेता है। जब मिस्टर आनन्दप्रकाश अपनी पत्नी को मुझसे वातें करने के लिए छोड़ जाते हैं, तो वह अपने में जो श्रेष्ठ वस्तु है, उसकी भेंट ही तो कर रहे होते हैं। उनको मुझ पर विश्वास होता है कि मैं आपको अपनी बहिन समान ही मानता हूँ।"

इस कथन ने तो मिल्ली को गम्भीर विचार में डाल दिया। वह अपने नवल से सम्बन्ध के विषय में विचार कर रही थी। वह विचार करने लगी थी कि उसके पति ने उसको नवल से मिलने तथा खेलने की स्वीकृति देने में तो कोई अनुचित बात नहीं की थी। यदि कुछ अनुचित की है तो नवल अथवा उसने स्वयं की है।

इस समय मीना मिल्ली की बाँह में बाँह डालकर, उसको उसके सोने के कमरे में ले गई। वहाँ बैठाकर वह कहने लगी, "एक वर्ष तक मैं प्रतीक्षा करती रही कि यदि आप अपने घर पर निमन्त्रण देना नहीं चाहतीं तो कम से कम मेरे घर पर आकर दर्शन तो देंगी।"

मिल्ली ने लज्जा अनुभव करते हुए कहा, "अब ऐसा नहीं होगा। मैं स्वयं आपसे मिलने आया करूँगी।"

"अब तो मेरी वारी है कि मैं एक दिन आपको रात के भोजन पर अपने घर आमन्त्रित करूँ।"

"रात को ही क्यों ?"

"रात का खाना हम सदैव बढ़िया खाते हैं और हम अपने अतिथियों को वही वस्तु खिलाना चाहते हैं, जिसको हम बढ़िया समझते हैं।"

"आज मुझसे भारी भूल हो गई है। इस रसोइये की बातों का विश्वास कर मैंने यह खाना बनवा लिया। अब सोचती हूँ इसको निकाल देना चाहिये।"

"क्यों ? यह आपके नित्य के काम के लिये तो बहुत अच्छा बनाता है न ?"

"परन्तु मैं कभी-कभी हिन्दुस्तानी डिशिज़ भी खाना चाहती हूँ। आपका रसोइया कैसा है ?"

"हम रसोईये से भोजन नहीं बनवाते। अपने खाने के लिये या तो मैं बनाती हूँ, या माताजी बनाती हैं।'

"बहुत तकलीफ होती होगी ?"

"नहीं, तकलीफ कुछ नहीं होती। हमको अभ्यास है। वास्तव में हम खाने को बहुत महत्त्व देते हैं। इस कारण इस काम को किसी दूसरे के हाथ देना नहीं चाहते।

"हाँ, कभी इनके मेहमान आ जायँ और हम दोनों के सामर्थ्य की बात न रहे, तो हम हलवाई बुला लेते हैं। उससे अपने सामने सब कुछ बनवाते हैं।"

मिल्ली को यह एक नवीन बात पता चली। खाने को ये लोग इतना आवश्यक समझते हैं कि उसको अपने हाथ से और अपने सामने ही बनवाते हैं। इस पर उसने पूछ लिया, "यह आप लोग ही करते हैं अथवा सभी हिन्दुस्तानी ऐसा करते हैं ?"

"जो वास्तव में हिन्दुस्तानी हैं, मेरा अभिप्राय हिन्दुओं से

है, वे तो भोजन को एक पवित्र बात मानते हैं । कुछ तो इस पवित्रता को इतनी दूर तक ले गये हैं कि अपने रसोई घर में किसी को भी जाने नहीं देते । हम इतनी दूर तक तो नहीं जाते । हम सबके साथ बैठकर खाते हैं ।"

"आपकी दृष्टि में वास्तविक हिन्दुस्तानी हिन्दू ही है ? क्या मुसलमान अथवा ईसाई हिन्दुस्तानी नहीं हैं ?"

"हिन्दू के अर्थों में मुसलमान और ईसाई भी आ जाते हैं, जो हिन्दू धर्म के दस अंगों को मानते हैं ।"

"क्या कोई ईसाई हिन्दू धर्म के किसी अंग को मानकर भी ईसाई रह सकता है ?"

"हिन्दू धर्म के जिन अंगों का मैंने उल्लेख किया है, उनका मज़हब के साथ कोई सम्बन्ध नहीं । न ही उनका ईसाई मज़हब से किसी प्रकार का विरोध है ।

"धैर्य, क्षमा, इंद्रिय-दमन, शुद्धता इत्यादि तो व्यवहार की बातें हैं । इनका विश्वासों से कोई सम्बन्ध नहीं ।"

"मैं तो किसी धर्म को नहीं मानती । मैं एक 'एगनास्टिक' (नास्तिक) हूँ ।"

"विश्वासों की बात तो मानने वाले की अन्तरात्मा से सम्बन्ध रखती है, परन्तु व्यवहार और आचरण तो सदा दूसरों से सम्बन्ध रखने में काम आता है । धर्म के दस अंग, जो मैंने बताये हैं, वे दूसरों के प्रति व्यवहार का ही वर्णन करते हैं ।"

* * *

उस दिन के व्यवहार और बातचीत से मिल्ली और आनन्द-प्रकाश, दोनों को अपने आचरण में त्रटि का भास हो गया । जब वे चले गये तो पति-पत्नी में लालचन्द और उसके परिवार पर

बात चल पड़ी।

"अच्छे लोग हैं ये।" मिल्ली का कहना था।

"लड़का भी बहुत प्यारा है।" आनन्दप्रकाश ने कह दिया।

"साथ ही समझदार भी बहुत है।"

"डार्लिंग ! क्या एक ऐसा बच्चा हमारा भी नहीं होना चाहिए ?"

"मैं भी यही विचार कर रही हूँ। मैंने मिसेज़ साहनी से पूछा था कि क्या बच्चा जनते समय बहुत कष्ट होता है ? उसने बताया कि इसके कुछ नियम हैं, यदि उनका पालन किया जाय तो साधारण-सा ही कष्ट होता है और उस कष्ट का तो उसी समय प्रतिकार भी मिल जाता है।

"वह कहने लगी, 'देखो न, मंगल कितना प्यारा लड़का है ! उसको देखकर जो प्रसन्नता होती है, वह उसके जन्म के समय हुए कष्ट का बहुत बड़ा पुरस्कार है।"

"तो कब ?"

"आज रात ही।"

वे सभी बातचीत कर ही रहे थे कि साधुराम और उसकी बहन रजनी, गोद में तीन-चार मास का बच्चा लिए हुए वहाँ आ गये।

साधुराम ने बाहर से ही आवाज़ दे दी—"भाई साहब ! नमस्ते।"

आनन्दप्रकाश और मिल्ली उनको देखकर चौंक उठे। इतने में वे दोनों भीतर आ गये। आनन्दप्रकाश ने उनको पहचाना तो उनका स्वागत करने लगा। मिल्ली ने रजनी को विवाह के समय ही देखा था। इस पर भी वह समझ गई कि यह उसके

पति की बहिन है। साधुराम को तो वह एक बार पहले भी देख चुकी थी ।

"जब सब बैठ गये तो ग्रानन्दप्रकाश ने पूछ लिया, "सामान कहाँ रखा है ?"

"हम तो कल के ग्राये हुए हैं। बस से शाम सात बजे पहुँचे थे । एक तो थके हुए थे ग्रौर दूसरे उस समय ग्रापको कष्ट देना उचित नहीं समझा। होटल में डेरा लगाया है।"

"वाह ! यहाँ ग्राना चाहिए था ?"

"जी नहीं, मैं एक सरकारी ग्रधिकारी के घर में ठहरना नहीं चाहता था। ग्रब तो मैं स्थायीरूप से रहने के लिए ग्राया हूँ। ग्रापको बताया तो था कि मैं चार-पाँच समाचार-पत्रों का सम्वाददाता बन गया हूँ। यों तो मकान का प्रबन्ध मेरे एक मित्र ने कर रखा है, परन्तु ग्रभी मैं उससे मिलने भी नहीं गया।"

"मैं 'इण्डियन इकॉनोमिक्स' में ग्रापके लेख पड़ता रहता हूँ। बहुत ही मजे़दार बातें लिखते हैं ग्राप। खैर, उन पर फिर कभी बातचीत करेंगे। ग्रच्छा, यह बताइये, भोजन करेंगे ?"

"ग्रब तो तीन बजे हैं। यह कोई भोजन का समय नहीं है। हाँ, यदि ग्राप कहें तो सायंकाल की चाय यहाँ पी जा सकती है। तत्पश्चात् हम ग्रपने मित्र के यहाँ जाना चाहेंगे, ताकि कल तक मकान की व्यवस्था की जा सके।

"यों तो मैं तीन मास पूर्व ही ग्राने वाला था। परन्तु यह देखिये न, रजनी ने क्या कर डाला है ! इस कारण यहाँ ग्राने में तीन मास का विलम्ब हो गया। तीन मास से ही उस मकान का भाड़ा दे रहा हूँ ।"

मिल्ली रजनी को लेकर अपने कमरे में चली गई। वहाँ उसे बैठाकर उसने कहा, "विवाह के समय तो केवल एक ही दिन ठहरना हुआ था, किन्तु अब आई हो तो होटल में जाकर ठहर गई हो। यह ठीक किया है क्या ?"

"भाभी ! विवाह के समय तो तुमको हनीमून की भाग-दौड़ मची थी। इस एक वर्ष में तुमने हमारी कोई सुध-बुध ली नहीं। कोई झूठा-सच्चा निमन्त्रण भी नहीं भेजा। खैर, छोड़ो। अब तो हम यहाँ आ ही गये हैं। हमारे देश में तो बहिन ज़बरदस्ती भाई का आतिथ्य ग्रहण कर लेती है। भाई को, अस्वीकार करने का कोई अधिकार नहीं होता।"

"यदि ऐसी बात थी, तो तुमको कल ही यहाँ आकर डेरा लगा देना चाहिए था ?"

"उसी की तैयारी तो कर रही हूँ। यदि भाभी अपने देश की होती तो इस तैयारी की आवश्यकता नहीं होती। उसको विदित होता कि यदि ननद आये तो उसको वापस नहीं भेजा जा सकता। आपको तो पहले यहाँ के रीति-रिवाज़ बताने पड़ रहे हैं।

"देखो भाभी ! अब हर रविवार हम बिना बुलाये यहाँ आया करेंगे।"

"यदि आपके भाई और मैं उस दिन कहीं बाहर चले गये तो ?"

"तो क्या ? हम लौट जाया करेंगे। इसमें कोई लज्जा की बात तो है नहीं। हाँ आपका कार्यक्रम पहले मालूम हो जाया करेगा तो हम उस दिन नहीं आयेंगे।"

"ठीक है, आप अपना घर हमारे नौकर को बता देना।"

"नौकर को क्यों, मैं तो आपको बता रखूँगी। कभी-कभी आपको भी तो अपनी छोटी ननद का सुख-समाचार लेना होगा और अब तो यह भी है।" उसने अपने छोटे बच्चे सुदर्शन की ओर देखते हुए कहा, "वह मामी को छोड़ेगा थोड़ ही ?"

इस पर मिल्ली ने बच्चे को अपनी गोद में ले लिया। बच्चा देखने में अच्छा-खासा सुन्दर और भोला-भाला प्रतीत होता था। जब मिल्ली ने उसकी आँखों में देखा तो हँसने लगा। इससे अनायास ही मिल्ली ने उसका मुख चूम लिया। पश्चात् रजनी को उसे वापस देते हुए कहा, "बहुत प्यारा लगता है।"

"भाभी ! हमें इससे भी सुन्दर भतीजे की आवश्यकता है।"

"देखो रजनी ! प्रयत्न तो कर रही हूँ।"

"ठीक है, यत्न तो करना ही चाहिए। इस पर भी परमात्मा की कृपा के बिना कुछ नहीं होता। कुछ उसका भी स्मरण किया करो।"

मिल्ली ने इस बात का उत्तर नहीं दिया। वह जानती थी कि यदि अभी तक उसके घर पर बच्चा नहीं हुआ तो 'प्रोफिलेक्टिक्स' के कारण नहीं हुआ।

आज उसने उनके प्रयोग को बन्द करने का निश्चय कर लिया था। उसकी मातृ-प्रवृत्ति उभर आई थी और वह एक बालक के लिए छटपटाने लगी थी। वह अनुभव कर रही थी कि आज उसकी लालसा का वह रूप नहीं था, जो यौन तृष्णा से उत्पन्न होता था। यह तो उससे कुछ भिन्न ही था। यह उन्माद नहीं, प्रत्युत हृदय में किसी अभाव की पूर्ति की इच्छा थी।

एकाएक मिल्ली ने रजनी की आँखों में देखते हुए पूछ लिया, "तुम्हारा अपने पति से बहुत प्रेम है ?"

प्रेम का तो, उपन्यासों में पढ़ने और अपनी सखी-सहेलियों से बातचीत करने पर अर्थ, यौन-सम्बन्ध ही मुझे समझ आया है। किन्तु उनके प्रति मेरा ऐसा भाव नहीं है।"

"तो तुम कैसा भाव रखती हो? मैं तो जब भी अपने पति से अपने सम्बन्ध पर विचार करती हूँ तो यौन-सम्बन्ध ही सामने आ जाता है।"

"यह भी है। परन्तु भाभी! यही सब कुछ नहीं है। इसके अतिरिक्त भी कुछ है, जो अवर्णनीय है। शब्दों में उसको व्यक्त नहीं किया जा सकता।"

"बहुत विचित्र है! देखो, जब मैं कुमारी थी, अपने लिये पति खोज रही थी, उस समय मैं जब भी किसी सुन्दर लड़के को देखती थी, तो यौन-सम्बन्ध की बात सर्वप्रथम मन में आती थी। तुम्हारे भैया का निर्वाचन भी इन्हीं भावों से किया गया था।

"हमारा विवाह हुए एक वर्ष हो चुका है। अब मेरे मन में एक दूसरी लालसा जागृत हुई है। वह है एक सुन्दर बच्चा पाने की अभिलाषा। यह लालसा तो तृष्णा से कुछ भिन्न प्रतीत होती है। मैं जानती हूँ कि उससे ही इसकी प्राप्ति सम्भव है, परन्तु मैं अनुभव करती हूँ कि दोनों में कुछ अन्तर है। इस अन्तर का मैं वर्णन तो नहीं कर सकती, केवल अनुभव ही करती हूँ।"

"मैं तो इससे भी पृथक्, अर्थात् यौन-आनन्द और पुत्रेषणा से पृथक्, कुछ और अनुभव करती हूँ। उस इच्छा के अधीन कभी मैं इसके पिता को देखती हूँ, तो देखती ही रह जाती हूँ। वे कभी सोये होते हैं, तो मैं उनके समीप कुर्सी पर बैठ, घंटों ही उनको देखा करती हूँ। उस समय मैं एक विशेष प्रकार की तृप्ति अनुभव करती हूँ। यह क्या है? इसको प्रेम कहूँ अथवा नहीं? मैं प्रेम

"ये माता-पिता विहीन लायलपुर, जो कि आजकल पाकिस्तान में है, से जालन्धर आये हुए थे। वहाँ इन्होंने बी० ए० किया और फिर एक उर्दु के समाचार-पत्र में कार्य करने लगे। पिताजी ने इनके लेख पढ़े और इनकी सूरत-शक्ल भी देखी तथा इनका पूर्ण इतिहास जानने का प्रयत्न किया।

"एक-दो दिन विचार कर पिताजी पुनः इनके पास गये और इनके सम्मुख उन्होंने मेरे विवाह का प्रस्ताव उपस्थित कर दिया। इन्होंने पिताजी को बताया कि इनके पास दो-तीन सौ से अधिक रुपये नहीं हैं। पिताजी ने इस आपत्ति की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और पूछ लिया, क्या लड़की को देखोगे?'

"इस पर इन्होंने कह दिया, 'आप मेरे पिता के समान हैं। आप ही देख लीजिए और उचित समझिये तो निश्चय कर लीजिए।'

"इसके पश्चात् पिताजी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं लड़का देखना चाहूँगी? मैंने भी कुछ वैसे ही कह दिया, जो इन्होंने कहा था।

"इस प्रकार हमारा विवाह हो गया।

"मैं घूँघट काढ़े हुए बैठी थी। उस समय मेरी माताजी तथा अन्य स्त्रियाँ मुझे घेरे हुए, वार्तालाप कर रही थीं कि ये बाहर से उठकर आये और बोले, 'रजनी के पिताजी ने मेरे लिए रजनी का निर्वाचन किया है। देखूँ, कैसा निर्वाचन है उनका?'

"इस पर स्त्रियाँ हँसती हुईं, वहाँ से उठ कर चली गईं। उनके जाने के पश्चात् इन्होंने मेरा घूँघट उतारा और मेरी ओर देखकर कहा, 'निर्वाचन तो अच्छा ही प्रतीत होता है। मैंने उन पर विश्वास कर अपना हित ही किया है।'

"मैं लज्जा के मारे आँखें बन्द किये हुए बैठी थी। इस पर वे बोले, 'रजनी ! तुम नहीं देखोगी कि पिताजी ने तुम्हारे लिए कैसा पति ढूँढा है ?'

"मैंने अपनी आँखों के आगे हाथ रखकर कहा, 'मैं उन पर अगाध विश्वास रखती हूँ।' इस पर वे हँसते हुए वहाँ से चले गये।"

"और यह आकर्षण बाद में उत्पन्न हुआ है क्या ?"

"मैं यह नहीं कह सकती कि कब हुआ ? मैंने उनकी ओर देखना तो बहुत ही पीछे आरम्भ किया था। जब से मैंने देखना आरम्भ किया है, तभी से मैं यह आकर्षण अनुभव कर रही हूँ तथा दिन-प्रतिदिन यह बढ़ता ही जा रहा है।"

मिल्ली को यह बात अपने और आनन्दप्रकाश के विषय में प्रतीत नहीं होती थी। उसने समझा कि उसका उससे विवाह भूल है, परन्तु उस समय और कोई मिलता भी तो नहीं था।

इन सब विभिन्न मनोद्गारों में आज उसके मन में एक भावना प्रबल रूप में उत्पन्न हो रही थी। वह थी पुत्र पाने की लालसा।

* * *

उस रात भोजन करने के पश्चात् ड्राइंग-रूम में सिगरेट पीते हुए आनन्दप्रकाश ने कहा, "आज मैं आऊँगा।"

"हाँ, कुछ देर ठहर कर। मैं थोड़ी नींद ले लूँ, फिर ठीक रहेगा।"

आनन्दप्रकाश अपने सोने के कमरे में जाकर एक उपन्यास निकालकर पढ़ने लगा। वह सोना नहीं चाहता था। उसको भय लग रहा था कि कहीं समय हाथ से न निकल जाय। पहले भी

ऐसा ही हुआ करता था। जिस दिन मिल्ली की इच्छा होती थी, वह रात के एक बजे उसके कमरे में चला जाया करता था। तब तक वह कोई पुस्तक पढ़ता रहता था।

मिल्ली अपने कमरे में गई और द्वार बन्द कर, बिना चटखनी लगाये कपड़े बदलने लगी। उसने अभी नाइट गाउन पहिना था कि खिड़की के पीछे से नवलकिशोर निकल आया। वह सायं-काल से वहाँ बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

मिल्ली ने उसको देखा तो कहा, "आज क्यों आये हो? आज तो मिस्टर सूरी आने वाले हैं।"

"वह तो एक बजे के पश्चात् आयेगा। अभी दस बजे हैं।"

मिल्ली ने कहा भी कि वह आज चला जाय, किन्तु नवल माना नहीं। ठीक बारह बजे वह सोने के कमरे के पिछले द्वार से निकल, कोठी की दीवार फाँद, वहाँ से बाहर हो गया।

आज यह प्रथम दिन था, जब मिल्ली अपने इस कृत्य के लिए अपने मन में ग्लानि अनुभव कर रही थी। आज उसकी इच्छा के विपरीत घटना घटित हुई थी। उसके मन में आया कि आज वह अपने पति से क्षमा याचना कर लेगी। इस कारण उसने भीतर से चटखनी चढ़ा दी। वह जाकर अपने पलंग पर लेट गई और लेटते ही उसे नींद आ गई।

अगले दिन प्रातःकाल वह उठी, तो उसको रात वाली घटना का स्मरण हो आया। वह उठ शौचादि से निवृत्त हो, अपने पति के कमरे में गई तो वह बहुत देर का जागा हुआ, नौकर से अपनी यात्रा का सामान बँधवा रहा था। जब नौकर विस्तर लेकर चला गया तो मिल्ली ने पूछा, "क्या बात है?"

"यह तो तुम बताओ। रात को आने का निमन्त्रण देकर भी

भीतर से द्वार बन्द कर लिया। मैंने द्वार खटखटाया भी था, किन्तु तुम जागी नहीं।"

"क्षमा कर दीजिये। मुझको गहरी नींद आ गई थी। आज रात मैं आपके कमरे में सोऊँगी।"

इससे आनन्दप्रकाश का मुख उतर गया। उसने कहा, "मैं मिनिस्टरसाहब के साथ अभी दिल्ली जा रहा हूँ। कई दिन लगेंगे। अब तो आने पर ही मिल सकेंगे।"

इस सूचना से मिल्ली को बहुत खेद हुआ। इस पर भी उसने बाहर से प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, "शीघ्र आइयेगा और आने का प्रोग्राम लिखियेगा।"

आनन्दप्रकाश मुख्य मन्त्री के साथ एक कॉन्फ्रेन्स में भाग लेने दिल्ली चला गया। कॉन्फ्रेन्स एक सप्ताह तक होती रही। दक्षिण में चावल बोने के जापानी तरीके पर परीक्षण हो रहा था। कॉन्फ्रेन्स के पश्चात् मुख्य मन्त्री ने आनन्दप्रकाश को दक्षिण में भेज दिया। उसको दो सप्ताह वहाँ लग गये। अभी वहाँ से अवकाश नहीं मिला था कि आसाम में चीनी ढंग के परीक्षणों को देखने की उसके पास आज्ञा पहुँच गई। इसलिये वह सीधा, दक्षिण से आसाम चला गया। वहाँ भी दो सप्ताह के लगभग लग गये।

इस प्रकार वह सवा महीने के पश्चात् घर लौटा। जब वह अपने बंगले में प्रविष्ट हुआ तो उसको बरामदे में रजनी खड़ी दिखाई दी। भाई को आया देख, रजनी बहुत प्रसन्न हुई और भाग कर उसको मिलने गई।

"क्या बात है रजनी! बहुत प्रसन्न प्रतीत होती हो?"

"भैया, भीतर चलो; बताती हूँ।"

आनन्दप्रकाश मोटर से उतरकर उसका मुख देखता हुआ खड़ा ही रहा।

"भैया, चलो न भीतर। भाभी बाहर नहीं आ सकती।"

"बीमार हैं क्या?"

"हाँ, बीमार थी। अब तो ठीक प्रतीत होती है।"

आनन्दप्रकाश लम्बे-लम्बे पग रखता हुआ कोठी में गया। मिल्ली के कमरे से डॉक्टर निकल रहा था। साधुराम मिल्ली के कमरे के बाहर खड़ा था।

भीतर जाने की अपेक्षा आनन्दप्रकाश ने यह अधिक उपयुक्त समझा कि पहले डॉक्टर से वास्तविकता जान ली जाय। उसने डॉक्टर के साथ-साथ कोठी से निकलते हुए पूछ लिया, "डॉक्टर! क्या बात थी?"

"अब तो ठीक है। मिसेज़ सूरी 'प्रेगनेंट' हैं। इन्होंने समझा नहीं और मासिक खोलने के लिये औषध ले ली। उससे ऐबॉर्शन हो जाने का भय हो गया था। मिसेज़ सूरी को दो रात तक तीव्र वेदना होती रही है, लेडी डॉक्टर को भी बुलाना पड़ा था। हम दोनों ने बहुत कोशिश की और अब तो पीड़ा बन्द है और हमारा अनुमान है कि बच्चा भी ठीक है।

"लेडी डॉक्टर अभी भीतर है। उसके बाहर आने पर सारी रिपोर्ट मिल जायेगी।"

'बच्चा!" आनन्दप्रकाश के मन में एक आह्लाद उत्पन्न हुआ, परन्तु पिछले दो मास के अपने सम्बन्धों को स्मरण कर, उसके मन की प्रसन्नता विलीन हो गई। अपने मन में वह कई प्रकार के संशय अनुभव करने लगा था। उन सबको मन-ही-मन में दबा, डाक्टर को वहीं छोड़ वह मिल्ली के कमरे की ओर चल

पड़ा। इसी समय लेडी डॉक्टर भी कमरे में से निकल आई। उसने सबके सामने ही कहा, "मिस्टर सूरी ! मैं आपकी मिसेज़ से उस डॉक्टर का नाम पूछ रही थी, जिसने उसको मासिक खोलने की औषध दी है। मैं रिपोर्ट करना चाहती हूँ और उसका लाइसैंस ज़ब्त करवा दूँगी।

"मुझे मिसेज़ सूरी ने बताया नहीं। किन्तु मिस्टर सूरी ! आप इस विषय में पूरी जानकारी लेकर बताइये। ऐसे घृणित कार्य करने वाले का लाइसैंस अवश्य ही ज़ब्त करा देना चाहिये।

"भगवान का धन्यवाद कीजिये कि बिचारी की जान बच गई।" इतना कह लेडी डाक्टर चली गई। उसके जाने पर आनन्दप्रकाश मिल्ली के कमरे में चला गया। मिल्ली का मुख वर्ण-रहित हो रहा था। उसके होंठ नीले पड़ गये थे।

रजनी उस समय मिल्ली के कमरे में थी। इस कारण आनन्द-प्रकाश ने किसी प्रकार की बात करनी उचित नहीं समझी। उसने केवल यही पूछा, "अब तबियत कैसी है ? मिल्ली !"

मिल्ली ने कहने का यत्न किया कि 'ठीक हूँ।' परन्तु वह इतनी दुर्बल हो चुकी थी कि उसके मुख से आवाज़ निकली ही नहीं।

आनन्दप्रकाश उसके सिरहाने बैठ गया और उसके सिर पर हाथ फेर कर प्यार करने लगा।

मिल्ली इतनी दुर्बल हो गई थी कि दो सप्ताह तक न तो उसको डॉक्टर ने हिलने-जुलने की स्वीकृति दी और न ही आनन्द-प्रकाश ने उससे किसी प्रकार की बात पूछनी उचित समझी।

इस अवधि में रजनी तो भाई के घर ही रही। साधुराम आता-जाता रहता था। लालचन्द, उसकी पत्नी और नवल भी

समाचार लेने आते रहते थे। आनन्दप्रकाश की माँ भी समाचार पा, कुछ दिन बीच में आई थी और बहू को धीरे-धीरे ठीक होती देख, वापस चली गई थी।

इन सब दिनों में आनन्दप्रकाश की मनस्थिति कुछ विचित्र-सी ही बनी रही। एक दिन मध्याह्न के समय साधुराम रजनी से मिलने के लिये और रजनी का समाचार जानने के लिये आया तो रजनी ने कह दिया, "भाभी के गर्भ ठहर जाने से भैया प्रसन्न प्रतीत नहीं होते।"

"यह कैसे जाना तुमने ?"

"मैं तब से देख रही हूँ कि उनका मुख सर्वदा मलिन ही रहता है। अब उनके मुख पर पहले जैसी मुस्कराहट भी नहीं दिखाई देती।"

"बात यह है रजनी ! ये युरोपियन आचार-विचार को पसन्द करने वाले लोग बच्चों की इच्छा नहीं रखते। ऐसा प्रतीत होता है यह बच्चा अनामन्त्रित आ रहा है।"

"परन्तु भाभी तो बहुत उत्सुक प्रतीत होती थी।"

"ये बस दिखाने की बातें होंगी। यदि इच्छा होती तो रजोदर्शन न होने पर, रजस्राव की औषध न खाई जाती।"

मिल्ली के कमरे में आजकल रजनी सोती थी। दिन भर आनन्दप्रकाश आफिस की चक्की में पिसता रहता था। सायंकाल वह क्लब में नहीं जाता था, किन्तु रजनी के सदा सम्मुख रहने के कारण, वह अपने मन की बात मिल्ली से पूछ भी नहीं सकता था। यही कारण था कि वह बहुत परेशान-सा दिखाई देता था।

*　　　　*　　　　*

तीन मास तक रुग्ण रहने के पश्चात् मिल्ली ने उठकर घर का कामकाज देखना आरम्भ किया तो रजनी ने अपने घर जाने

का विचार प्रकट कर दिया। यह सुन आनन्दप्रकाश घबरा उठा। उसने कहा, "रजनी ! तुम यहीं रह जाओ न। कम-से-कम सात-आठ मास तो और रह ही जाओ।"

"भैया! मैं दूर तो हूँ नहीं। दोनों घरों में टेलिफोन लगा है। जब चाहो, बुला लेना।"

"तुम तीन मास तक इस घर में रह चुकी हो। तुमको अब तो कुछ न कुछ विदाई मिलनी ही चाहिये न।"

"नहीं भैया ! जब बच्चा होगा और भाभी स्वस्थ हो स्नान करेगी, तब सब इकट्ठा ही ले लूँगी।"

मिल्ली भी रजनी के जाने का समाचार सुन भयभीत-सी प्रतीत होती थी। इस पर भी वह शान्त और बाहर से प्रसन्न दिखाई देने का यत्न कर रही थी।

जब रजनी चली गई तो भी आनन्दप्रकाश ने मिल्ली से कुछ नहीं कहा। वह उसको, इस दुर्बल अवस्था में कुछ कहना उचित नहीं समझता था। मन ही मन उसको विश्वास हो गया था कि यह बच्चा नवल का है।

परन्तु बात हुए बिना भी नहीं रही। मिल्ली ने एक दिन स्वयं ही कह दिया, "मुझे विश्वास था कि यह केवल रजावरोध-मात्र है, इस कारण मैंने तीस ग्रेन के लगभग क्विनीन खा ली थी।"

"शट अप मिल्ली ! मैं तुमसे तुम्हारी सफाई नहीं सुनना चाहता। सब कुछ मन से निकाल, अपना स्वास्थ्य बनाने का यत्न करो।

"देखो, मैं तुमको एक बात बता देना चाहता हूँ। मिस्टर साहनी ऐस्ट्रौलोजर है। विवाह से पूर्व जब तुम्हारा, विवाह की

स्वीकृति का पत्र आ चुका था और उसका उत्तर मैंने अभी नहीं दिया था, साहनी ने मुझे गम्भीर विचार में देख, मेरे विषय में भविष्यवाणी की थी। उसका कथन था कि तुमसे मेरा विवाह सफल नहीं होगा। परन्तु मैं ज्योतिष विद्या पर विश्वास नहीं रखता हूँ। इस कारण मैंने उसकी भविष्यवाणी को झूठा सिद्ध करने के लिये बहुत ही सरलता का व्यवहार बना रखा है। तुम जो कुछ करती और कहती रही हो, मैं बिना किसी प्रकार की आपत्ति के मानता रहा हूँ। मेरा यह दृढ़ निश्चय था कि मैं साहनी की भविष्यवाणी को झूठी सिद्ध कर दूँगा।

"अब भी मैं उसी विचार से कहता हूँ। पीछे की बातों को छोड़ दो। आगे कुछ तो मुझ पर दया करो और उन बातों को स्मरण करा कर, मेरा मन दुःखी मत करो।"

इस पर मिल्ली ने चुप रहना ही उचित समझा।

मिल्ली अभी पाँचवे मास में ही थी कि आनन्दप्रकाश को प्लैनिंग विभाग में, एक अत्यावश्यक कार्य से, डैपुटेशन पर दिल्ली बुला लिया गया। पंजाब सरकार ने पहले तीन मास के लिये और पश्चात् एक वर्ष के लिए उसकी सेवाओं को दिल्ली सरकार के अर्पण कर दिया। इसके लिये आनन्दप्रकाश को पृथक् भत्ता भी मिलने लगा।

आनन्दप्रकाश ने जाने से पूर्व रजनी और साधुराम को बुलाकर मिल्ली के सम्मुख कहा, "रजनी! अभी दिल्ली में मेरे रहने का उचित प्रबन्ध नहीं हुआ है। इस कारण मेरा विचार मिल्ली को वहाँ ले जाने का नहीं है। मैं इसको आप दोनों के आश्रय में छोड़ जाना चाहता हूँ। बताओ ठीक रहेगा?"

"भैया! हम भाभी की सेवा करने का पूर्ण यत्न करेंगे।

इस पर भी दिल्ली कितनी दूर है ? दो दिन की छुट्टी होने पर, आकर मिल जाया करोगे तो ठीक रहेगा।"

इस प्रकार आनन्दप्रकाश तो चला गया और रजनी तथा साधुराम उसके बँगले में आकर रहने लगे। मिल्ली इस प्रबन्ध से प्रसन्न थी। अब स्थिति ऐसी हो गई थी कि वह अपने पति के सम्मुख आँखें नहीं उठा सकती थी। जब भी वे अकेले होते, मिल्ली कोई पुस्तक लेकर पढ़ने बैठ जाती। आनन्दप्रकाश भी, जब दोनों अकेले रह जाते तो कोठी के लान में टहलने के लिए चला जाया करता था अथवा अपने सोने के कमरे में जाकर भीतर से द्वार बन्द कर सो जाया करता था।

इन दिनों लालचन्द तथा उसकी पत्नी, मिल्ली और आनन्द प्रकाश से मिलने के लिए आते रहते थे। इन दोनों को आनन्द-प्रकाश का मलिन मुख और मिल्ली का शान्त व्यवहार देखकर सन्देह हो रहा था कि दोनों को इस बच्चे के आने से किसी प्रकार की प्रसन्नता नहीं है। इसका कारण लालचन्द को अपनी भविष्यवाणी से मिल जाता था।

जब आनन्दप्रकाश दिल्ली चला गया तो मीना अब अकेली दोपहर के समय मिल्ली से मिलने के लिए आने लगी। एक दिन उसको मिल्ली से एकांत में बात करने का, लगभग दो घंटे तक का अवसर मिल गया। मीना ने तो अपने मन में यह धारणा बना रखी थी कि वह मिल्ली की निजी बातों में झाँकने का यत्न नहीं करेगी। वह तो अपने व्यवहार से ही उसके मन पर प्रभाव डालना चाहती थी। परन्तु मिल्ली अपने मन में छिपी बात को कहने से नहीं रुक सकी। उसने कहा, "मिसेज़ साहनी ! सुना है, आपके पति ऐस्ट्रौलोजर हैं ?"

"आपको किसने बताया है ?"

"क्यों, क्या यह गलत है ?"

"वे इस विद्या की पुस्तकें तो बहुत पढ़ते रहते हैं, परन्तु कभी मेरे विषय में पता करते, तो मैं बता सकती।"

"मैंने सुना है कि वे बहुत ही योग्य हैं।"

"मुझको तो उनकी इस विद्या पर विश्वास नहीं है।"

"मैं उनसे अपने विषय में जानना चाहती हूँ।"

"यही न कि लड़का होगा अथवा लड़की ?"

"इसमें क्या अन्तर पड़ जाता है ?"

"हमारे हिन्दुस्तानियों में लड़के को शुभ और लड़की को अशुभ माना जाता है।"

"यह क्यों ?"

"हमारी समाज की बनावट ऐसी है कि लड़की के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है और लड़का माता-पिता के लिए सहायता का स्रोत हो सकता है।"

"लड़की क्यों नहीं सहायता का स्रोत होती ? मेरी ननद तो हमारी बहुत सहायता कर रही है। मैं समझती हूँ कि इसके स्थान पर यदि इनके भाई की पत्नी होती तो कदाचित् वह इतनी सहायता न कर पाती।"

"यह आप ठीक कहती हैं। सेवा करने में लड़कियाँ और बहनें, भाई से आगे निकल जाती हैं। लड़कों की बहू की बात तो सदा सन्देहात्मक रहती है। परन्तु परिवार की समृद्धि में तो लड़के ही सहायक हो सकते हैं, लड़कियाँ नहीं।

"इस पर भी मिसेज़ सूरी ! युग बदल रहा है। लड़के संयुक्त परिवार में विश्वास छोड़ बैठे हैं और लड़कियों को पिता

की सम्पत्ति में भाग मिल जाने से परिवार की सम्पत्ति सिकुड़ने लगी है।

"इस पर भी पिता के घर लड़की होने से वह प्रसन्नता नहीं होती, जो लड़का होने से होती है। लड़कियों का उत्तर-दायित्व बहुत अधिक होता है।"

मीना ने इस प्रकार बात बदल देनी चाही, परन्तु मिल्ली ने अपनी बात का सूत्र नहीं छोड़ा। उसने बात बदल कर कहा, "मैं मिस्टर साहनी से अपने विषय में कुछ जानना चाहती हूँ।"

"तो जब आयेंगे, तब आप पूछ लीजियेगा। इस पर भी मैं ज्योतिप विद्या का ज्ञान न रखते हुए भी आपको बता सकती हूँ कि आपके घर में लड़का होगा। वह बहुत सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट होगा। आपके पति दिल्ली से लौटेंगे नहीं। प्रसव के पश्चात् आप दिल्ली जायेंगी और वहाँ की महिला समाज में एक सुन्दर तारिका की भाँति विचरण करती हुई, सुखोपभोग करेंगी।"

यह सुनकर मिल्ली खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसने कहा, "यह तो वे भी जाते समय कह गये थे कि वे यत्न करेंगे कि उनकी स्थायी रूप से दिल्ली में ही नियुक्ति हो जाय।"

"मेरा कथन है कि उनका यत्न सफल होगा।"

"किंतु मैं यह नहीं चाहती। मैं अब आपकी और रजनी बहिन की संगति से दूर होना नहीं चाहती।"

"परन्तु यह आपके लिये कल्याणकारी नहीं है।"

"यही तो मैं मिस्टर साहनी से जानना चाहती हूँ कि क्यों नहीं है?"

"वे कारण बता सकेंगे अथवा नहीं, मैं नहीं जानती; परन्तु

मैं बता सकती हूँ कि यहाँ रहना आपके लिये क्यों कल्याणकारी नहीं होगा।"

मिल्ली चुपचाप बैठी रही। अब वह भी चाहती थी कि यह चर्चा आगे न चले तो ठीक ही है। परन्तु मीना ने जब बात आरम्भ कर दी तो उसने कहा, "यहाँ के समाज में यह विख्यात हो रहा है कि आप नवल को सीमा से अधिक अपने समीप आने का अवसर दे रही हैं। कुछ तो यह भी संदेह करते हैं कि आपके गर्भ में स्थित शिशु उसी का है और इस बात का आपको ज्ञान है। इसी कारण आपने उसे गिरा देने का यत्न किया था।"

"तो क्या आप भी यही समझती हैं ?"

"इस प्रकार की बात पर विश्वास करने के लिये मेरे पास किसी प्रकार का प्रमाण नहीं है। इस कारण मैं ऐसा विचार करने का साहस भी नहीं कर सकती।"

"मीना बहिन ! मैं आपकी बहुत ही कृतज्ञ हूँ, जो आप मुझ पर विश्वास करती हैं। इस पर भी पुरुष तो बहुत ही संदेहात्मक प्रकृति के होते हैं। मैं इन बातों का उनके मन पर प्रभाव जानने के लिये, आपके पति की विद्या से सहायता लेना चाहती हूँ।"

"मिसेज़ सूरी ! इन बातों को छोड़िये। मिस्टर आनन्द-प्रकाश बहुत ही सरल चित्त व्यक्ति है। आप दिल्ली जायेंगी तो नवल की बात उसके मन से निकल जायेगी। दिल्ली में आप दोनों अपना नवीन जीवन आरम्भ कर सकेंगे। पराये पुरुष के साथ मिलने में एक सीमा है। उस सीमा को दृढ़ता से बनाये रखने में ही स्त्री-जाति का कल्याण है।"

तृतीय परिच्छेद

आनन्दप्रकाश जब दिल्ली आया तो उसने अनुभव किया कि जो बातें साधुराम उसको बताया करता था, वे वास्तव में घटित होने जा रही हैं। साधुराम ने एक दिन उसको बताया था कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू मन से कम्युनिस्ट विचारधारा का पृष्ठपोषक है। इसी कारण ये पंचवर्षीय योजनाएँ देश को कम्यु-निज़्म की ओर धकेल रही हैं। दिल्ली पहुँच, उसको प्रथम पंच-वर्षीय योजना की असफलता के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे। जो भी ध्येय इस योजना के लिए निश्चित किये गये थे, उनकी प्राप्ति तो दूर, उनमें किंचित् मात्र सफलता नहीं मिल रही थी।

आनन्दप्रकाश भोजन सामग्री की उत्पत्ति के कार्य का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। यहाँ पहुँच उसको विदित हुआ कि प्लैनिंग के लिये आंकड़े एक संस्था सरकार को देती है और उन आँकड़ों पर परिणाम निकालने के लिए, योजना भी उसी संस्था से प्राप्त होती है। आनन्दप्रकाश को कार्य की यह रीति रुचिकर प्रतीत नहीं हुई। उसने देखा कि उस संस्था के आँकड़ों पर विश्वास किया जाता है और वहाँ प्रस्तावित योजनाओं को बहुत महत्ता दी जाती है।

आनन्दप्रकाश ने आते ही वहाँ की योजना पर दस पृष्ठ की एक टिप्पणी लिख कर भेज दी। इसमें उसने उस संस्था के आँकड़ों पर भी सन्देह प्रकट किया और स्वाभाविक रूप में उनके परिणामों पर भी सन्देह किया गया। इस पर तो उसके पूर्ण विभाग में हलचल मच गई। जब उसका नोट टाइपिस्ट ने टाइप किया तो बात कार्यालय में फैल गई।

टाइपिस्ट ने नोट टाइप कर अपने सुपरिन्टैंडेंट को दिखाया और वह नोट को लेकर आनन्दप्रकाश के पास पहुँचा। उसने आनन्दप्रकाश से कहा, "मिस्टर सूरी ! यदि आप रुष्ट न हों, तो मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ।"

"हाँ-हाँ, कहिए। क्या वह मेरे नोट के विषय में है ?"

"जी, है तो उसी विषय पर। मैं जो कुछ कहने आया हूँ, वह अनधिकार चेष्टा तो है, परन्तु आप यहाँ नये ही आये हैं। इस कारण यहाँ के कार्य की विधि के विषय में आपको बता देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

"प्रथम बात तो यह है कि सरकार उस संस्था को, जिसने ये आँकड़े भेजे हैं, अपनी संस्था मानती है। उसके तैयार किये आँकड़े अपने कार्यालय द्वारा तैयार आँकड़ों की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय माने जाते हैं।"

"परन्तु वे हैं तो सारे गलत ही। इसका प्रमाण यह है कि हमको दिन प्रतिदिन अधिकाधिक अन्न विदेशों से मँगवाना पड़ रहा है। मैंने अपने नोट में पंजाब का, जिसका ज्ञान मुझको है, उदाहरण देकर यह सिद्ध किया है कि हम भूल कर रहे हैं।"

"सूरी साहब ! आपको कदाचित् विदित न हो कि हमारे नेतागण इस आँकड़े भेजने वाली संस्था पर अगाध विश्वास

रखते हैं। आपने एक-दो नोट इसी प्रकार के लिखे कि आपका पत्ता कटा।"

आनन्दप्रकाश सुपरिन्टैंडेंट का मुख देखता रह गया। वह नेताओं का अर्थ समझता था। देश की अवस्था के अध्ययन से वह समझ गया था कि यद्यपि पण्डित जवाहरलाल नेहरू न एक निर्वाचित नेता है, किन्तु वास्तविकता यह है कि वह निर्वाचन के पश्चात् नेता नहीं बना, प्रत्युत नेता बनने के पश्चात् निर्वाचित हुआ है। आनन्दप्रकाश की समझ में कुछ इस प्रकार आ रहा था कि पार्लियामेंट में चुनाव के समय तो नेतागिरी काम आती है और आनी भी चाहिए। परन्तु जब पार्लियामेंट में, देश भर के नेता आ गये, तो फिर प्रधानमंत्री का निर्वाचन तो योग्यतानुसार होना चाहिए न कि जनता में किसी नेता के कम अथवा अधिक प्रभाव के कारण।

आनन्दप्रकाश को सुपरिन्टैंडेंट की बात से यह समझ में आया कि कार्यालय के अधिकारियों को अपने विचार और सम्मतियाँ नेता का मुख देखकर बनानी चाहियें, जैसे पार्लियामेंट के मेम्बरों को, अपना नेता किसी की योग्यता देखकर नहीं, प्रत्युत जनता की हू-हू हा-हा देखकर बनाना पड़ता है।

इस पर भी आनन्दप्रकाश अपनी सम्मति बदल नहीं सका। उसने सुपरिन्टैंडेंट से कहा, "हमको अपनी सम्मति ईमानदारी से ही देनी चाहिये। उसे मानने अथवा न मानने का अधिकार तो मन्त्रालय को है। यदि वह नहीं मानी जाती, तो हमको इसमें किसी प्रकार का खेद नहीं होना चाहिये।"

"देख लीजिये। मैंने तो आपको सावधान कर दिया है। अभी भारत के नेता अपने मन के विपरीत सम्मति को विद्रोह का नाम देने में तनिक भी नहीं हिचकिचाते। ये लोग अभी

नये-नये बाज़ार से राज्य कार्यालय में पहुँचे हैं। जब ये वहाँ थे, तो अँग्रेज़ी सरकार की प्रत्येक बात की, अपने मन के विपरीत देख, निन्दा किया करते थे और हम लोगों को गुलाम और देशद्रोही कहने का अभ्यास डाले हुए थे। अभी इनकी वह आदत गई नहीं है। अब ये लोग अपने मन में बैठी बात के विपरीत किसी सम्मति को सहन नहीं कर सकते।"

"इस सचेत करने के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। इस पर भी एक बार तो मैं इस संस्था की व्यर्थता और इसके भ्रामक होने की बात अपने नेताओं के कान तक पहुँचाने का यत्न करूँगा ही।"

सुपरिन्टैंडेंट वह टाइप किया हुआ नोट आनन्दप्रकाश की मेज़ पर रखकर चला गया। अब यह नोट कार्यालय में एक चर्चा का विषय बन गया। सब लोग इस बात की आशा करने लगे कि मिस्टर सूरी शीघ्र ही वापस पंजाब भेज दिए जायेंगे।

आनन्दप्रकाश के 'नोट' के जाने के दूसरे ही दिन एक बंगाली महाशय ने, जो प्लैनिंग विभाग के एक प्रमुख कर्मचारी थे, आनन्दप्रकाश को अपने पास बुलवाया। जब आनन्दप्रकाश उसके सम्मुख उपस्थित हुआ तो उसने कहा, "आइये सूरी साहब! आपकी शिक्षा कहाँ तक हुई है?"

आनन्दप्रकाश इस प्रकार के प्रश्न के लिए तैयार नहीं था। इस कारण एक क्षण तो वह इस प्रश्न का अर्थ समझने के लिए चुप रहा। तत्पश्चात् सम्भल कर उसने कहा, "श्रीमान्! मैं लन्दन युनिवर्सिटी का पी-एच० डी० हूँ।"

"ओह! तब तो बात समझ में आ गई है। देखिए मिस्टर सूरी! अपना यह नोट आप वापस ले जाइये। मैं चाहता हूँ कि

आप पहले इस पुस्तक का भली-भाँति अध्ययन कर लें और उसके परचात् अपने नोट में संशोधन कर भेज दें। मैं समझता हूँ कि एक सप्ताह में आप सब कुछ ठीक प्रकार से समझ जायेंगे।"

इतना कह उसने आनन्दप्रकाश का नोट और एक, लगभग पाँच सौ पृष्ठ की पुस्तक उसके सामने करदी। आनन्दप्रकाश ने उस पुस्तक का नाम पढ़ा—'स्टालिन्स पॉलिसी इन सौलविंग सोविएट एग्रिकलचरल प्रौबलम।'

आनन्दप्रकाश ने इस पुस्तक को पढ़ा था। इस कारण उसने वापस करते हुए कहा, "मैंने यह पढ़ी हुई है। हमारे देश की परिस्थिति में यह किसी प्रकार भी लागू नहीं हो सकती।"

"इसमें कौनसी बात आपको विलक्षण प्रतीत होती है?"

"इसमें तो कुछ भी हमारे अनुकूल नहीं है। हमारे देश में संसदीय राज्य प्रणाली है और रूस में विरोधी दल नाम की कोई वस्तु रही नहीं है। वहाँ पर जो कुछ भी बड़े लोग निश्चित करते हैं, वह एक गोल सुराख में कोणदार कील ठूँसने के समान, बलपूर्वक ही जनता के गले मढ़ दिया जाता है। यहाँ तो आपको प्रतिपक्षियों की आलोचना सुननी पड़ेगी।"

"जब तक पण्डित जवाहरलाल जीवित हैं, प्रतिपक्षियों की बात सुनने की आवश्यकता नहीं। पण्डितजी के मुख में सरस्वती खेलती है। उनके वाक्यों को 'ब्रह्म वाक्यं प्रमाणम्' की भाँति स्वीकार कर लिया जाता है।"

"आपका कहना ठीक हो सकता है; परन्तु क्या हमारा यह कर्त्तव्य नहीं कि पण्डितजी को इस प्रकार की परिस्थिति में रखें, जिससे प्रतिपक्षी उनकी हँसी न उड़ा सकें?"

"देखिये मिस्टर सूरी ! मैं पण्डितजी से मिलता रहता हूँ और उनके मन की बात जानता हूँ। वे विरोधियों का सर्वनाश कर भी, अपने मन की बात चलाने की इच्छा और क्षमता रखते हैं।

"अतः हमको उनकी नीति के अनुकूल ही अपनी सिफारिशें निकालनी पड़ती हैं।"

"देखिए श्रीमान् ! यह पुस्तक एक ऐसी नीति को चलाने के लिए कहती है, जिससे रूस में लाखों को गोली से मार डालना पड़ा था। जिससे लाखों को कन्सन्ट्रेशन कैम्पों में भेजना पड़ा था और जिसके लिए घर-घर में खुफिया पुलिस के कर्मचारियों को रखना आवश्यक हो गया था।"

"यदि यहाँ भी यह सब कुछ करना पड़े तो क्या हानि है ? देश का उद्धार इन लाखों के कष्ट से ऊपर की वस्तु है।"

"परन्तु समस्या फिर भी नहीं सुलझेगी। वहाँ की जनसंख्या प्रति वर्ग मील यहाँ की जनसंख्या प्रति वर्ग मील से बहुत कम है। यहाँ अकाल पड़ा तो फिर विप्लव उत्पन्न हो जायेगा।"

"नहीं, ऐसा नहीं होगा। हम बाहर के देशों से मित्रता रखते हैं और उनको डरा-धमका कर अन्न मँगवा सकते हैं।"

"परन्तु उसका मूल्य भी तो देना पड़ेगा। हम दिन-प्रतिदिन विदेशियों के ऋणी होते जा रहे हैं। एक दिन यह ऋण चुकाना पड़ेगा। यदि देने के लिए चाँदी, सोना नहीं होगा, तो नर रक्त से इस ऋण का प्रतिकार देना होगा।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा। जब तक पृथ्वी की जातियाँ दो गुटों में विभक्त हैं, हम अपने ऋण को देना अस्वीकार कर सकते हैं।"

आनन्दप्रकाश समझ रहा था कि वह अनायास ही राजनीतिक विवाद में पड़ गया है। इस कारण उसने अपनी बात

को पुन: अपने नोट की ओर घुमाकर कहा, "देखिये, मेरी योजना है कि हमको ऐसे आँकड़े एकत्रित करने चाहियें, जिनसे हमको ऐसी परती भूमि का ज्ञान हो जाय, जहाँ उपज हो सकती है। वर्तमान खेती-बाड़ी में प्रयुक्त भूमि को ऐसे चलने दिया जाय, जैसे चल रही है और अपनी योजना द्वारा उस भूमि को, जो परती है, उपज के योग्य बनाया जाय।

"पंजाब में कुछ तो नहरों और कुछ कुओं से सिंचाई होती है। वह प्रदेश पहले ही अच्छी उपज कर रहा है। हमको अपना ध्यान उन स्थानों की ओर ले जाना चाहिए, जहाँ पहले सिंचाई का कोई प्रबन्ध नहीं और जहाँ अन्न उत्पन्न किया जा सकता है।

"गाँवों की गोचर भूमि तोड़ने से हम पैदावार की वृद्धि नहीं कर रहे। पैदावार में वृद्धि होगी उस परती भूमि की तोड़ने से, जहाँ से कुछ भी काम नहीं लिया जाता।

"हमको इस प्रकार के आँकड़े एकत्रित करने चाहिएँ कि एक एकड़ भूमि पर कितनी गायें पाली जा सकती हैं और उनसे कितने मनुष्यों का पालन हो सकता है। क्या उस एकड़ में गेहूँ बोने से हम अधिक मनुष्यों की पालना कर सकते हैं?"

वह बंगाली अफसर इस प्रकार की युक्तियों को सुन अधीर हो रहा था। उसने कह दिया, "यह तो मैं सब आपके नोट में पढ़ चुका हूँ। इसके दोहराने की आवश्यकता नहीं है।

"एक बात समझ लीजिये। हम अपने देश को दस्तकारी में सर्वोन्नत देश बनाना चाहते हैं। उसके लिए मशीनों की आवश्यकता है। मशीनों के लिए स्थान और उनको चलाने के लिए 'मैन-पावर' की आवश्यकता है। यदि हमारी 'मैन-पावर' खेतों में हल चलाने में लगी रही, तो मशीनें खाली पड़ी रह जायेंगी। उनको कौन चलायेगा?

"हम चाहते हैं कि खेतों पर ट्रैक्टर चलें और प्रायः सब कार्य मशीनों से हों। वहाँ से खाली किए गए मनुष्य कारखानों में लिए जायें और हमारे कारखाने इतना माल उत्पन्न करें कि हम दुनियाँ में एक समृद्ध देश के मालिक कहलाने लगें।"

आनन्दप्रकाश इस युक्ति का उत्तर साधुराम के लेखों में पढ़ चुका था और वह इस बंगाली अफसर को सुनाना चाहता था, परन्तु इस समय उस बंगाली अफसर ने उसको विदा करने के लिए हाथ बढ़ा दिया और उसका नोट उसको वापस कर दिया।

विवश आनन्दप्रकाश को अपना नोट ले आना पड़ा। अपने कमरे में आने से पूर्व, उसने उस नोट को तह करके, अपने कोट की अन्दर की जेब में छिपा लिया, जिससे उसके कार्यालय के अन्य कर्मचारियों को यह विदित न हो सके।

'इण्डियन इकौनोमिस्ट' की नवीन प्रति आनन्दप्रकाश को मेज़ पर पड़ी थी। उसने उठाई तो मिस्टर एस० आर० सिंधु के नवीन लेख पर उसकी दृष्टि चली गई। लेख का शीर्षक था—'विनाश की ओर'।

उसने लेख पढ़ना आरम्भ कर दिया। अफसर से बात करने के पश्चात् उसने, इस लेख में अधिक सच्चाई का आभास पाया। लेख में लिखा था—

'पहली पंचवर्षीय योजना अन्न-उत्पादन में वृद्धि के लिए बनी थी, किन्तु वह वृद्धि हो ही नहीं सकी। अब उस विषय को छोड़कर उद्योगों को विस्तार देने के लिए दूसरी योजना का आयोजन किया जा रहा है। यह भी विफल सिद्ध होगी। धीरे-धीरे टैक्स बढ़ते जायेंगे। लोगों को लाभ कम होता जाएगा और वस्तुएँ मँहगी होती जायेंगी। नवीन प्रकार की वस्तुएँ

बनेंगी, परन्तु उनके क्रय करने की शक्ति जन-साधारण में कम होती जाएगी और बड़े-बड़े कारखाने व्यर्थ होते चले जायेंगे।

'लोगों में क्रय करने की शक्ति उस अन्तर पर बनती है, जो एक व्यक्ति के आय और व्यय में होता है। जितना अन्तर कम होता जायेगा, उतना व्यर्थ के माल की बिक्री कम होती जायेगी।

'कुछ सीमा तक तो लोग अपने कम बचत को भी वस्तु के क्रय में व्यय कर सकते हैं। यह इस कारण कि उनको भय लग रहा है कि हमारा समाज समाजवादी बन रहा है और बचाये धन को वे, न तो रख सकेंगे और न ही सम्पत्ति के रूप में लगा सकेंगे। परत्तु इसकी भी एक सीमा है।

'कोई भी उद्योगों में उन्नत देश, केवल अपने देश की मार्केट पर कारखाने नहीं चला सकता। उसको अपना माल बाहर देशों में भी भेजना होगा। बाहर भेजने के लिये या तो साम्राज्य स्थापित करना होगा या अन्य देशों के मुकाबले में अपनी वस्तुएँ सस्ती बेचनी पड़गी। दोनों बातों को हम कर नहीं सकेंगे।'

इस प्रकार पूर्ण लेख उन सभी शंकाओं को पुष्ट करता था, जो आनन्दप्रकाश अपनी सरकार की नीति पर नोट में लिख आया था।

एक दिन किसी कार्य से सिन्धु दिल्ली आया तो आनन्द-प्रकाश से मिलने के लिये चला आया। दोनों ओर के कुशल समाचार पूछने के पश्चात् सिन्धु के कार्य की बात चल पड़ी। उसने बताया, "मैं आजकल शिक्षा के विषय में अध्ययन कर रहा हूँ।"

"परन्तु प्लैनिंग पर तो तुम्हारे लेख बहुत ही मज़ेदार होते हैं।"

"होते होंगे, किन्तु यह तो अन्धों के सम्मुख रोने के समान है। इस समय जो सामयिक समृद्धता दिखाई दे रही है, वह विदेशों से ऋण लिये हुए धन के कारण है। उस ऋण का भुगतान अभी आरम्भ नहीं हुआ है। इस कारण वह धन लोगों के हाथों में पहुँच कर झूठी समृद्धता दिखा रहा है। अरबों रुपये अमरीका और अन्य देशों से आ रहे हैं। हमारी वस्तुओं के मूल्य में नहीं, प्रत्युत ऋण के रूप में। वह धन किसी न किसी प्रकार जनता में बँट जाता है और उस रुपये से जनता अपना निर्वाह करती है और कुछ सुख-सुविधा के सामान भी खरीदती है।

"परन्तु यह देश की न तो आय है न ही देश की समृद्धता का सूचक है। जब ऋण चुकाना पड़ेगा और उस पर चढ़ रहे ब्याज का भुगतान करना होगा, तो देश भूखा मरने लगेगा।

"इससे विकट समस्या इस समय देशवासियों की शिक्षा की है। शिक्षा दो प्रकार की है। एक तो वह, जो इन्द्रियों को शिक्षित कर, उनमें कुशलता पैदा करती है। इसको अँग्रेज़ी में 'टैक्नोलॉजी' कहते हैं। विज्ञान और कला-कौशल इसके अन्तर्गत ही हैं। दूसरी शिक्षा मन के विकास की है।

"यह दूसरे प्रकार की शिक्षा ही सवर्पोरि है। प्रथम प्रकार की शिक्षा भी इसके अन्तर्गत तो नहीं, परन्तु इसके अधीन ही समझनी चाहिये।

"मेरी दृष्टि में इस दूसरी प्रकार की शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिये। इसी को प्लैनिंग का एक अंग बनाना चाहिये।"

आनन्दप्रकाश का यह विषय नहीं था, इस कारण वह इसमें रुचि नहीं ले सकता था।

जाने से पूर्व साधूराम ने बताया, "मिल्ली के बच्चा होने में अब कुछ ही दिन शेष हैं। हस्पताल में प्रबन्ध कर दिया है।

प्रसव के समय उसको वहाँ भेज दिया जायेगा।"

आनन्दप्रकाश को इस विषय में और भी कम रुचि थी। उसने केवल यह कह कर बात टाल दी, "रुपये-पैसे की जो आवश्यकता होगी, वह लिख देना। मैं भेज दूँगा।"

"उससे पहले तो आप एक बार चण्डीगढ़ आयेंगे?"

"मैं कह नहीं सकता। यहाँ काम इतना अस्तव्यस्त है कि दिन भर परिश्रम करने पर भी, हम स्वयं को उसी स्थान पर पाते हैं, जहाँ से प्रातःकाल प्रारम्भ किया था।"

साधुराम हँस पड़ा और बोला, "तब तो भाईसाहब! आप एक मास की छुट्टी लेकर हो आइये और महीने के पश्चात् भी गाड़ी वहीं पर खड़ी पायेंगे, जहाँ आप छोड़ कर गये होंगे।"

"देखिये मिस्टर साधुराम! मैं एक बात बताता हूँ। मेरा विचार मिल्ली को दिल्ली में लाने का नहीं है। बच्चा होने के उपरान्त भी उसको वहीं रखना चाहता हूँ।"

"क्यों?"

"इसका कारण मैं बताना नहीं चाहता। मैं समझता हूँ कि मिल्ली इस विषय में सब कुछ जानती है और वह इससे प्रसन्न ही होगी।"

साधुराम ने इस विषय में अधिक पूछने का यत्न नहीं किया। उसने कहा, "यह तो आपका परस्पर का व्यवहार है। मैं इस विषय में कुछ नहीं कह सकता। हम तो, जितनी हम से हो सकेगी, सेवा करने के लिए सदैव तत्पर हैं।"

इतना कह साधुराम वहाँ से चला आया। उसने आनन्द-प्रकाश को बताया कि वह रात्रि की कालका मेल से चण्डीगढ़ जा रहा है।

चण्डीगढ़ पहुँच कर उसने आनन्दप्रकाश की बात रजनी को बताई तो उसने कहा, "हमको इसका कारण जानने की आवश्यकता नहीं है।"

"लालचन्द ने एक बार मुझे संकेत से बताया था कि मिल्ली का नवलकिशोर से मिलना-जुलना बन्द करवा देना चाहिये। मैं इसका अभिप्राय यह समझा हूँ कि इन दोनों में कुछ सम्बन्ध विशेष रहा है।"

"होगा, छोड़िये इस बात को। व्यर्थ की चिन्ता करने से कुछ बनेगा नहीं।"

मिल्ली ने साधुराम से पूछा, क्या आप उनसे मिले थे ?"

"हाँ, मिला था। वे सब प्रकार से स्वस्थ हैं।"

"चण्डगढ़ी आने का कब तक का विचार है उनका ?"

"स्वयं तो उन्होंने कुछ नहीं कहा। कहते थे कि यदि रुपये पैसों की आवश्यकता हो तो लिख देना, भेज दूँगा।"

इसके कुछ दिन पश्चात् मिल्ली का, अस्पताल में लड़का हुआ और आनन्दप्रकाश इस अवसर पर भी चण्ढीगढ़ नहीं आया। इस पर लालचन्द ने मीना से कहा, "ऐसा प्रतीत होता है कि मेरा ज्योतिष सत्य सिद्ध होने जा रहा है।"

"मैंने मिल्ली को सीधे मार्ग पर लाने का यत्न किया है। वह तो कुछ-कुछ ठीक मार्ग पर आ रही प्रतीत होती है, परन्तु आनन्दप्रकाश बने-बनाये खेल को बिगाड़ रहा है।"

"एक बात और है। तुमने उसके लड़के को देखा है ?"

"हाँ, वह कुछ-कुछ कृष्ण वर्ण है। नाक भी कुछ चपटी है और भौंवें तो सर्वथा नवल से मिलती हैं।"

"यदि आनन्दप्रकाश उसको देखकर ऐसा ही समझे, जैसा तुम कह रही हो तो फिर तुम्हारे-हमारे करने से क्या होगा ?"

"यदि वह मिल्ली को दिल्ली ले जाय तो मैं समझती हूँ कि सुलह हो सकती है ।"

"मैं यत्न करूँगा । यह काम अब तुम्हारा नहीं । तुम मिल्ली से मिलती रहा करो और उसके मन को स्वस्थ रखने का यत्न करो ।"

इसके पश्चात् लालचन्द ने आनन्दप्रकाश को एक पत्र लिखा। उसने लिखा, "मैं सुप्रीमकोर्ट में एक मुकद्दमे के सिलसिले में दिल्ली आने वाला हूँ। वहाँ इम्पीरियल होटल में ठहरने का विचार है । क्या इस अवसर पर आपके दर्शन सुलभ हो सकेंगे ? पन्द्रह जनवरी को मैं वहाँ पहुँचूँगा। उस दिन तो मैं कोर्ट में ही व्यस्त रहूँगा । सायंकाल होटल में लौट कर मैं आपको फोन करूँगा । आशा है आपसे भेंट अवश्य ही होगी ।"

* * *

आनन्दप्रकाश लालचन्द से मिलना नहीं चाहता था। इस कारण ठीक उस दिन, जिस दिन लालचन्द दिल्ली आने वाला था, वह आगरा चला गया। वहाँ उसको कुछ काम नहीं था, इस पर भी उसने छुट्टी ले ली और चला गया ।

दिन भर वह वहाँ घूमता रहा । रात को वहीं एक होटल में ठहर गया और अगले दिन दिल्ली लौट आया। गाड़ी से आते ही वह आफिस चला गया ।

उसका विचार था कि लालचन्द लौट गया होगा। परन्तु लालचन्द का मुकद्दमा एक दिन में समाप्त नहीं हो पाया। वकीलों की बहस अधूरी रह गई थी । इस कारण अगले दिन पुनः पेशी हुई। लालचन्द अभी दिल्ली में ही था ।

बारह बजे को कोर्ट से छुट्टी पा, लालचन्द सीधे आनन्द-प्रकाश के निवासस्थान पर गया। वहाँ से उसे विदित हुआ कि

साहब आगरे से लौट आये हैं और वे इस समय आफिस में हैं।

आनन्दप्रकाश के नौकर ने लालचन्द का नाम पूछा तो उसने कहा, "उनसे कह देना, कोई थे। वे दिल्ली से बाहर चले गये हैं। वहाँ से चिठ्ठी लिखेंगे।"

लालचन्द समझता था कि आनन्दप्रकाश जानबूझ कर उससे न मिलने के लिये छुट्टी लेकर चला गया है।

सायंकाल आनन्दप्रकाश आया तो चपरासी ने लालचन्द का सन्देश दे दिया। इससे आनन्दप्रकाश निश्चिन्त हो आराम करने लगा। उसने यही समझा था कि लालचन्द अपने ज्योतिष की प्रशंसा करने आया है और वह मिल्ली के साथ अपने व्यवहार की आलोचना सुनना नहीं चाहता था। अतः जब उसे लालचन्द के चण्डीगढ़ लौट जाने का समाचार मिला तो वह बहुत सुख अनुभव करने लगा था।

परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब सायंकाल लालचन्द वहाँ आ धमका। पहुँचते ही उसने कहा, "मिस्टर सूरी! चाय पिलाओ। मुझे अपने होटल में जाने का समय नहीं मिला।"

विवश आनन्दप्रकाश को मेज़ पर रखी घंटी बजानी पड़ी। चपरासी आया तो उसने चाय लाने के लिये कह दिया।

लालचन्द ने अपने चण्डीगढ़ न जा सकने का कारण बताते हुए कहा, "जिनके मुकद्दमे के लिये आया था, वे एक पिक्चर देखने का आग्रह करने लगे, तो हम तीन बजे का शो देखने चले गये। सवा छः बजे वहाँ से अवकाश पा, मैं इधर आया हूँ और मेरा साथी होटल में सामान लेने गया है। रात को कालका मेल में जाने का विचार है।"

चाय पीते हुए लालचन्द ने फिर बात आरम्भ कर दी। उसने पूछा, "मिस्टर सूरी ! आप बच्चे को देखने भी नहीं पहुँचे ? क्या बात है ?"

"तो आप जानते नहीं कि मैंने आपकी सम्मति नहीं मानी और उसका फल भोग रहा हूँ। मिल्ली एक वेश्या है।" आनन्द-प्रकाश अपने मनोद्गारों को नहीं रोक सका।

"क्या प्रमाण है आपके पास इस बात का ?"

"तुम प्रमाण ही चाहते हो तो यह लो।" यह कहकर आनन्द-प्रकाश अपने स्थान से उठा। अपनी मेज़ की दराज़ में से एक लिफ़ाफ़ा निकाल, उसे खोल, उसमें से एक छोटा-सा फोटोग्राफ निकाल कर उसने लालचन्द के हाथ में दे दिया।

लालचन्द ने चित्र को देखा और बोला, "यह तुम्हारे बच्चे का है। क्या प्रमाणित करता है यह ?"

"यह प्रमाणित करता है कि यह इस व्यक्ति का पुत्र है।" उसने एक अन्य चित्र, जो उसके पास रखा था, दिखाते हुए कहा। यह चित्र नवलकिशोर का था।

लालचन्द को यह विदित नहीं था कि सरल चित्त आनन्द-प्रकाश इस प्रकार अपनी पत्नी के विरुद्ध प्रमाण एकत्रित कर रहा है। इससे उसको विस्मय हुआ। इस पर भी एक योग्य वकील की भाँति कहने लगा, "यह मैं था, जिसने सबसे पहले तुमको सावधान किया था। मैं समझता हूँ कि मेरा तुमको साव-धान करना भी समय पर नहीं हो सका। परन्तु आज मैं तुमको पुनः सावधान करने आया हूँ। वह है इस औरत को अपने आधीन न रखने के विषय में। इस प्रकार एक ओर तो वह तुम्हारे पुत्र की माँ कहलायेगी और दूसरी ओर उसकी वेश्या-

वृत्ति बढ़ती जायेगी।"

"मैं उसके विरुद्ध कोर्ट में तलाक की प्रार्थना दे दूँगा।"

"उसके लिये चित्र-मात्र पर्याप्त प्रमाण नहीं है और अधिक प्रमाण एकत्रित करना इतना सुगम नहीं, जितना तुम समझते हो। मैं समझता हूँ कि तलाक स्वीकार नहीं होगा। इस मुकद्दमे के पश्चात् वह तुम्हारे घर पर भी नहीं रह सकेगी और कोर्ट तुमको खर्चा देने के लिये विवश कर देगा। मैं समझता हूँ कि वह पाँच सौ रुपया मासिक खर्चा प्राप्त कर लेगी।

"तुम्हारी पत्नी, तुम्हारे खर्च पर रहती हुई, स्वतन्त्रता से जीवन व्यतीत करेगी और कदाचित् थोड़ी सावधानी से वेश्या-वृत्ति भी करती रहेगी।"

"तो क्या कहना चाहते हो तुम ?"

"मैं चाहता हूँ कि जैसी भी वह रही है, अब आगे से तुम उसको अपने पास रखो और उसको पुनः पथभ्रष्ट होने से बचाओ।"

"किन्तु तुम्हारी भविष्यवाणी का क्या होगा ?"

"उसको सत्य अथवा असत्य सिद्ध करना न तुम्हारा कार्य है न मेरा। हमको तो मानवता के नाते एक गिरते हुए व्यक्ति को पकड़कर बचाने का यत्न करना चाहिये।"

"क्या तुम ऐसा कर सकते हो ?"

"क्यों नहीं ?"

"तुम तो कहते थे कि भाग्य की रेखा टल नहीं सकती।"

"मेरा नहीं, यह ज्योतिष का कथन है। यह उसी विद्या का काम है कि अपने को सत्य सिद्ध करे। मैं ज्योतिष-विद्या का दास नहीं हूँ।"

इससे आनन्दप्रकाश को जहाँ आश्चर्य हुआ, वहाँ आनन्द भी। आश्चर्य इस बात पर कि लालचन्द को अपनी की हुई

भविष्यवाणी को भी सत्य सिद्ध करने की चिन्ता नहीं है और आनन्द इस बात पर कि वह भी मानवता के नाते एक पतिता को उभारना चाहता है। इतना विचार कर उसने पूछा, "वह हस्पताल से कब आ रही है ?"

"मेरा ख्याल है, आज आ गई होगी। यों तो उसको पिछले सोमवार ही आ जाना चाहिए था, परन्तु उसके अति दुर्बल होने के कारण, साधुराम के आग्रह पर, उसको चार दिन और वहाँ ठहरने की स्वीकृति मिल गई थी।"

"अच्छी बात है लालचन्द ! मैं तुम्हारे कथन का बहुत आदर करता हूँ। मैं तुम्हारे ज्योतिष पर विश्वास नहीं रखता था ; परन्तु, मिल्ली, हर प्रकार की सुख-सुविधा प्राप्त होने पर भी, पथच्युत होती ही गई। मैं तो तुम्हारे ज्योतिष को झूठा सिद्ध करने के लिए तत्पर था। यदि तुम कहते हो तो मैं एक बार फिर यत्न करता हूँ कि तुम झूठे सिद्ध हो जाओ।"

इस बात पर लालचन्द और आनन्दप्रकाश दोनों हँस पड़े। लालचन्द ने केवल इतना ही कहा, "आज तो मैं स्वयं उसको गलत सिद्ध करने का यत्न कर रहा हूँ। आनन्द ! हम मानव हैं और मानवता की यह माँग है कि हम एक-दूसरे की सहायता करें।"

"अच्छी बात है। मैं कल विचार कर मिल्ली को लिखूँगा। बहुत-कुछ तो उसके उत्तर पर भी निर्भर है।"

* * *

लालचन्द चण्डीगढ़ लौट आया। आकर उसने मीना को, मिल्ली से मिलकर, पत्र का उचित उत्तर देने के लिये तैयार करने का यत्न करने भेज दिया।

मिल्ली हस्पताल से घर आ गई थी। उसको आनन्दप्रकाश के इस अवसर पर न आने का भारी दुःख था। वह यह तो

समझ गई थी कि आनन्दप्रकाश उसको तलाक देने का यत्न करेगा। यदि 'ऐडल्टरी' (व्यभिचार) का आरोप सिद्ध हो गया, तो वह एक विदेश में, जहाँ उसका न कोई सगा है, न साथी, निराश्रित हो जायेगी।

वह चाहती थी कि कुछ स्वास्थ्य लाभ कर, नवल से पृथक् में मिल कर राय करे और इस अवस्था में उचित व्यवहार का निश्चय करे।

उसको अपने मकान पर आये अभी दो दिन ही हुए थे कि मीना उससे मिलने के लिये आई। मीना और रजनी दो ही औरतें थीं, जो उसके इस संकट-काल में, उसका साथ दे रही थीं। इससे वह इनको अपनी पूर्ण कथा बताकर अपने विरुद्ध करना नहीं चाहती थी।

बच्चे की रूपरेखा नवलकिशोर से मिलने की बात को समझाने के लिये वह अपने मन में युक्ति विचार रही थी। यद्यपि कोई भी बात उसके मन में टिकती नहीं थी, इस पर भी वह अपने मन में योजनाएँ बना रही थी और अपने कुछ स्वस्थ हो जाने की प्रतीक्षा कर रही थी।

मीना जिस समय आई, उस समय मिल्ली कोठी की लॉन में बैठी हुई थी। आया 'पैराम्बुलेटर' में बच्चे को लिटाये हुए लॉन में घुमा रही थी। रजनी कोठी के भीतर बैठी हुई किसी कार्य में व्यस्त थी।

मीना आई तो मिल्ली ने मुस्कराकर तथा सिर हिलाकर उसका अभिवादन किया। स्वास्थ्य-समाचार पूछने के पश्चात् मीना ने पूछा, "दिल्ली से कोई पत्र आया कि नहीं?"

"नहीं, मेरे पास तो कोई नहीं आया।"

"मंगलस्वरूप के पिता, सुप्रीम कोर्ट में कार्य से दिल्ली गये

थे। वहाँ वे मिस्टर सूरी से मिले थे। उन्होंने बताया है कि वे आपको पत्र लिखेंगे और उसके पश्चात् वे अपने व्यवहार का निश्चय करेंगे।"

"कैसा व्यवहार ?"

"मैं कह नहीं सकती। उन दोनों में जो-जो बातें हुईं, वे सब तो मुझे विदित नहीं हैं। इस पर भी कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि मिस्टर सूरी तुमसे नाराज़ हैं और तुमसे छुट्टी पाना चाहते हैं।"

"अर्थात् मुझे तलाक देना चाहते हैं ?"

"यह भी सम्भव प्रतीत होता है। कम-से-कम इसके लिये वे यत्न तो कर ही सकते हैं। इस कारण मंगल के पिताजी ने यह संदेश भेजा है कि यदि कोई पत्र सूरी साहब की ओर से तुम्हारे पास आये और किसी बात का उत्तर माँगा हो, तो तुम उनसे राय करके ही उसका उत्तर देना।"

"तो अब पति-पत्नी वकीलों से राय कर परस्पर वार्तालाप करेंगे ?"

"वे एक वकील के नाते यह सम्मति नहीं दे रहे हैं। यह तो केवल तुमसे स्नेह के कारण है। इसमें वे अपनी मति के अनुसार तुम्हारा कल्याण करना चाहते हैं। इस पर भी मानना अथवा न मानना तो तुम्हारे अपने अधिकार में है।"

"अच्छी बात है, यदि पत्र आयेगा तो मैं उनसे सम्मति ले लूँगी। वास्तव में मैं वकील साहब से राय करने की अपेक्षा अपनी बहन मीना से राय करना अधिक उपयुक्त समझूँगी।"

"यह भी तुम्हारी इच्छा पर है। मैं तुम्हारी प्रत्येक प्रकार से अपनी बुद्धि के अनुसार, सहायता करने के लिये तत्पर हूँ।"

"इस पर भी जब आनन्दप्रकाश का पत्र आया तो मिल्ली ने न तो मीना से और न ही लालचन्द से किसी प्रकार

की राय ली। उसने फोन कर नवलकिशोर को बुला लिया। वह आया तो उसने अपने पति का पत्र उसको दिखा दिया। पत्र में लिखा था—

"डार्लिंग !

"यद्यपि मुझको तुम्हारे नवल से सम्बन्ध के विषय में सब-कुछ पता चल गया है और तुम्हारे लड़के का फोटोग्राफ मेरे पास पहुँच चुका है, परन्तु मैं इसकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया को कार्यान्वित करने के लिये उद्यत नहीं हूँ। मैं अभी भी अपने हृदय में तुम्हारे लिये कुछ तो प्रेम रखता ही हूँ। मैं चाहता हूँ कि मैं और तुम, पुनः पति-पत्नी जीवन का आरम्भ कर सकें।

"परन्तु पति-पत्नी में निष्कपटता का तथा बिना लुकाव-छिपाव का व्यवहार होना अत्यावश्यक है। इस बात का वचन दो कि तुम पुनः ऐसा नहीं करोगी और साथ ही अपने सम्बन्ध का पूर्ण वृत्तान्त लिखकर भेज दो। यह बयान लिखकर भेजने से, मैं यह समझूँगा कि तुम मेरे पर पूर्ण रूप से विश्वास करती हो। परस्पर विश्वास के बिना प्रेम नहीं निभ सकता।

"तुम समझदार हो और मैं समझता हूँ कि मेरे साथ कुछ तो लगाव रखती ही हो। आओ, हम पुनः एक-दूसरे के साथी 'इन गुड ऐण्ड बैड' (सुख-दुःख में) बनने का वचन दें और अपने जीवन को पुनः आरम्भ करने का यत्न करें।

"तुम्हारा उत्तर आने पर ही मैं यह अनुमान लगा सकूँगा कि तुम मेरे साथ सच्चाई का व्यवहार रखना चाहती हो अथवा नहीं।"

नवल ने पत्र पढ़ा और पढ़कर तुरन्त उत्तर दे दिया। उसने कहा, "यह तो तुम्हारे लिये फन्दा तैयार किया जा रहा है। मैं

समझता हूँ कि बच्चे के चित्र से उसको तुम्हारे और मेरे सम्बन्ध का प्रमाण तो मिला है, परन्तु वह प्रमाण पर्याप्त नहीं है। कानून की दृष्टि में यह प्रमाण इतना प्रबल नहीं कि इसके आधार पर तुमको तलाक दिलवाया जास के।

"ऐसा प्रतीत होता है कि उसनें किसी वकील से राय की है और उस चित्र के साथ कोई ठोस प्रमाण पाना चाहता है। वह प्रमाण इस प्रकार तुमसे लिखाकर प्राप्त किया जा रहा है। तुम्हारे इस प्रकार लिखकर देते ही, वह कोर्ट में तलाक के लिये प्रर्थना-पत्र दे देगा।

"पत्र की उपस्थिति में तुम्हारे बच्चे का फोटोग्राफ एक ऐसा प्रमाण बन जायेगा, जिसको काटा नहीं जा सकेगा।

"मेरी तो यही सम्मति है कि तुम इस पत्र को जला डालो और उसको कुछ भी लिखकर देने की आवश्यकता नहीं। यदि कुछ झगड़ा हुआ तो मेरे यहाँ बहुत से मित्र हैं, जो तुम्हारा मुक-द्दमा बिना एक पैसा लिए ही कर देंगे। मैं समझता हूँ कि वे तुमको मेरे लिए सुरक्षित कर देंगे।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब स्पष्ट है। मेरी पत्नी मुझको छोड़कर चली गई है। वह मुझको तलाक देगी नहीं और मैं उसको तलाक दे नहीं सकता। वह खर्च के लिये भी अदालत में नहीं जायेगी और मैं उसका खर्चा बन्द करना नहीं चाहता। ऐसी अवस्था में तुम मेरी अविवाहित पत्नी बनकर रह सकती हो।

"यदि आनन्दप्रकाश एक बार तलाक के मुकद्दमे में असफल हुआ तो तुम चण्डीगढ़ में रहोगी और मैं तुम्हारा पालन-पोषण करूँगा।

"छोटी-सी ज़िन्दगी है, पलक की झपक में निकल जायेगी। ईश्वर की कृपा है कि मैं दो पत्नियों का खर्चा सुगमता से चला सकता हूँ।"

नवल की सम्मति कानून पर आधारित थी और आनन्द-प्रकाश की माँग मनोद्गार पर। भिल्ली ने युक्ति का आश्रय लिया और पत्र की पहुँच को स्वीकार ही नहीं किया।

नवल आया तो रजनी ने देख लिया। इस पर भी उसने इन दोनों की बातों में बाधारूप बन कर विघ्न नहीं डाला। वह भी समझ रही थी कि उसके भाई ने व्यावहारिक रूप में अपनी पत्नी को छोड़ दिया है।

अपने मन में वह स्त्री होने के नाते, अपनी भाभी के प्रति सहानुभूति रखती थी और चाहती थी कि भाई और भाभी में सुलह हो जाय। परन्तु इसमें अनामन्त्रित हस्तक्षेप करना नहीं चाहती थी।

रजनी और साधुराम में भी इस विषय पर वार्तालाप हुआ था। साधुराम एक अंग्रेज लड़की से एक हिन्दुस्तानी युवक के विवाह को कभी भी अच्छा नहीं समझता था। विशेषतया एक पढ़े-लिखे, योग्य हिन्दुस्तानी युवक का किसी विदेशी लड़की से विवाह तो हिन्दुस्तान की लड़कियों का अपमान समझता था।

इस पर भी जब एक बार विवाह हो गया तो वह इसको तोड़ने के पक्ष में नहीं था। इसमें वह हिन्दुस्तानी युवकों का अपमान समझता था। परन्तु वह रजनी से सहमत था कि पति-पत्नी के झगड़े में, बिना बुलाये बोलना अपने अपमान का कारण हो सकता था।

नवल जब चला गया तो रजनी अपने मन में विचार करने लगी कि भिल्ली से उसके आने के विषय में पूछताछ करे अथवा

नहीं । उसको एक ही भय था कि यदि मिल्ली ने कह दिया कि इस विषय में जानने का उसको कोई अधिकार नहीं है, तो यह एक ऐसा अपमान होगा कि इसके पश्चात् वह उस कोठी में रह नहीं सकेगी । वह अभी इस अवस्था में मिल्ली को छोड़कर जाना उचित नहीं समझती थी ।

अतः वह इस विषय में भी स्वयमेव मिल्ली से बातचीत करने के लिये अपने मन को तैयार नहीं कर सकी । रात के खाने के समय रजनी, उसका पति और मिल्ली मेज़ पर बैठे थे । भोजन परोसा जा चुका था । बात साधुराम ने आरम्भ कर दी । उसने कहा, "भाभी ! अब तो तुम ठीक-ठाक घर पहुँच गई हो । देखने में भी सर्वथा स्वस्थ प्रतीत होती हो । यदि तुम कहो तो हम कल अपने घर चले जायें ?"

"क्यों ? यहाँ पर आपको कुछ कष्ट है क्या ? मैं समझती हूँ कि जितना स्थान आपको यहाँ पर मिला है, वह आपके मकान से छोटा तो नहीं है ।"

"यह तो ठीक है, भाभी ! हम इसलिये नहीं जाना चाहते कि यहाँ पर हमको किसी प्रकार की असुविधा है । हम तो इस कारण जाना चाहते हैं कि बहन का भाई के घर पर रहना शोभा नहीं देता ।"

"देखिये भाई साहब !" मिल्ली ने अपने मन की कुछ झलक उनसे स्पष्ट कर देनी उचित समझी । उसने कहा, "आपके भाई मुझसे नाराज़ प्रतीत होते हैं । इस बात की पुष्टि इससे होती है कि वे बच्चे तक को देखने के लिये नहीं आये । मैं तो अपनी ओर से उनको रुष्ट करने का कोई कार्य करना नहीं चाहती । आपका यहाँ से जाना एक ऐसा काम हो सकता है, जिससे उन की रुष्टता और बढ़ जाय । इस कारण मैं अपने मुख से कभी

नहीं कहूँगी कि आप चले जायें ।

"इसके अतिरिक्त भी रजनी से मुझको इतनी सहायता मिली है और मिल रही है कि मैं इसको यहाँ से चले जाने के लिये कहूँ, तो कृतघ्नता होगी । हाँ, मुझे आप लोगों को प्रत्येक प्रकार की सुख-सुविधा देने का यत्न करना चाहिये ।

"इसीलिये कहती हूँ कि यदि किसी प्रकार का भी कष्ट हो तो बता दीजियेगा । मैं अपनी शक्ति के अनुसार उसका निवारण करने का यत्न करूँगी ।"

*　　*　　*

मिल्ली ने न तो नवल के आने की रजनी से चर्चा की और न ही आनन्दप्रकाश के पत्र के विषय में कुछ उल्लेख किया ।

दूसरे दिन पुनः आकर मीना ने आनन्दप्रकाश के पत्र के विषय में पूछा, किन्तु मिल्ली ने कह दिया कि अभी तक कोई पत्र नहीं आया है ।

जब मिल्ली ने नवल के विषय में भी रजनी को कुछ नहीं बताया और अब नवल का दिन के समय भी कभी-कभी आना आरम्भ हो गया, तो उसने इस कोठी को छोड़, अपने घर जाने का दृढ़ निश्चय कर लिया ।

रजनी ने अपने निश्चय का उल्लेख अपने पति के सम्मुख करते हुए कहा, "अब हमें कल तक यहाँ से अपने घर को चले जाना जाहिये ।"

"जाने से पूर्व भैया को तो बताने की आवश्यकता नहीं है ?"

"मैं इसकी कोई आवश्यकता नहीं समझती । जब मिल्ली ने गर्भपात के लिये औषधि का सेवन किया था और उसकी स्थिति चिन्तनीय हो गई थी, उस समय हम बिना भैया से पूछे यहाँ

चले आये थे। अब हम मिल्ली को स्वस्थ तथा सबल देख रहे हैं तो हमको चला जाना चाहिये। न तो हम किसी के कहने से आये थे और न ही जाने से पूर्व किसी को बताने की आवश्यकता है। अधिकाधिक हम यह कर सकते हैं कि घर पहुँचकर भैया को पत्र द्वारा सूचित कर दें कि हम यहाँ से अपने स्थान पर वापस आ गये हैं।"

अगले दिन रजनी ने अपना सामान लादा और चलते हुए मिल्ली को सूचना देने जा पहुँची। उसने कहा, "भाभी ! मैं जा रही हूँ।"

"वह तो मैं देख ही रही हूँ।"

"हम चाहते थे कि कुछ दिन और यहाँ रह कर तुम्हें पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ करने में सहायक सिद्ध होते, किन्तु अब हमारे लिये यहाँ रहने में कठिनाई अनुभव हो रही है। इससे अब हम जाना चाहते हैं। जब कभी भी हमारी सेवा की आवश्यकता हो, टेलिफोन कर देना। मैं यत्न करूँगी कि तुम्हारी यथाशक्ति सेवा कर सकूँ।"

"क्या तुम्हारे भैया का कोई पत्र आया है, जिससे तुम्हें यहाँ रहने में कठिनाई उत्पन्न हो गई है ?"

"नहीं, उनका तो कोई भी पत्र नहीं आया। हम भी अपने यहाँ से चले जाने के विषय में उन्हें घर जाकर ही सूचना देंगे।"

"अच्छा रजनी ! मैं तुम्हारी बहुत ही कृतज्ञ हूँ, जो तुमने कष्ट के समय मेरी सेवा, शुश्रूषा एवं सहायता की है। मैं तुमसे आग्रहपूर्वक यहाँ रहने के लिये कहती ; परन्तु जब तुम यहाँ रहने में कष्ट अनुभव कर रही हो, तो मैं विवश हूँ।"

उनके जाने से पूर्व मिल्ली बाहर आई। साधुराम किसी

कार्यवश पहले ही जा चुका था। उसे वहाँ न देख मिल्ली ने पूछा, "भाई साहब कहाँ है ?"

"वे तो आज किसी से मिलने के लिये सुबह ही चले गये थे। आप तब तक जागी नहीं थीं। कह रहे थे कि सायंकाल आकर मिल जायेंगे और फिर दूसरे-तीसरे दिन हममें से कोई-न-कोई आकर तुम्हारा कुशल-समाचार लेता रहेगा।"

रजनी चली गई। उसी दिन मीना वहाँ आई और जब उस को विदित हुआ कि रजनी अपने घर वापस चली गई है, तो उस को इस बात पर विस्मय हुआ। उसने इस अकस्मात् जाने का कारण जानना चाहा तो मिल्ली ने वह सारा वार्तालाप दोहरा दिया, जो रजनी का उससे, उसके जाते समय हुआ था।

मीना ने अपने आने का प्रयोजन बताते हुए कहा, "उन्होंने मिस्टर सूरी को पत्र लिख कर पूछा था कि अपने वचनानुसार उन्होंने तुम्हें दिल्ली आने के विषय में पत्र क्यों नहीं लिखा ?

"देखो मिल्ली ! हम हृदय से चाहते हैं कि तुम दोनों में सुलह हो जाय। हम यत्न कर रहे हैं कि तुम किसी प्रकार दिल्ली चली जाओ, तो काम बन जायगा। मिस्टर सूरी ने उनको वचन दिया था कि वे तुमको इस विषय में पत्र लिखेंगे। जब तुमने बताया कि उनका कोई पत्र नहीं आया, तो मंगल के पिताजी ने पुनः सूरीसाहब को स्मरण कराया।

"कल सूरीसाहब का पत्र आया है। उन्होंने लिखा है कि वे तुम्हें पत्र डाल चुके हैं, किन्तु तुम्हारी ओर से उनको कोई उत्तर नहीं दिया गया है। इसलिये मैं यह जानने आई हूँ कि क्या कोई पत्र आया है ? यदि नहीं तो हम उन पर जोर डाल कर पत्र लिखवायेंगे।"

"आप उनकी ओर से किस प्रकार के पत्र की अपेक्षा रखते हैं ?"

"हमारी धारणा है कि उन्होंने कोई तुम्हें प्रेमपूर्ण पत्र लिखा है और उसमें तुम्हें दिल्ली आकर रहने के लिये कहा गया है।"

"मेरे पास इस प्रकार का कोई पत्र नहीं आया है।"

"तो कैसा पत्र आया है, जिसका तुमने उत्तर नहीं दिया ?"

"उस पत्र में उन्होंने यह लिखा है कि मैं अपने और नवल के बीच किसी प्रकार का सम्बन्ध अथवा मित्रता स्वीकार कर लूँ और यह घोषित कर दूँ कि यह बच्चा नवलबाबू का है। मैंने उस पत्र का उत्तर देना उचित नहीं समझा।"

"मैं देख सकती हूँ, वह पत्र ?"

"क्यों ? क्या करोगी उसे देखकर ?"

"मैं यत्न करूँगी कि बिना किसी प्रकार की लिखा-पढ़ी के तुम दोनों में सुलह हो जाय।"

"मैं तो उस पत्र को जला चुकी हूँ। इस प्रकार का अपमान-जनक पत्र मैं अपने पास रखकर क्या करती ?"

"तुम कभी हमारे घर पर आ सकती हो क्या ?"

"मैं यत्न करूँगी। अब तो रजनी बहिन भी चली गई है। किस को साथ लेकर आऊँ ?"

"चाहो तो मेरे साथ चली चलो।"

"आज नहीं। फिर किसी दिन कहोगी तो चली चलूँगी।"

एक प्रकार से निराश-सी मीना लौट गई।

घर पर पहुँच, मीना ने मिल्ली की सब बातें अपने पति को बता दीं। उसने इस समय उसके साथ न आने की इच्छा का भी वर्णन कर दिया। इस पर लालचन्द ने बताया, "अभी-अभी साधुराम अपने किसी कार्य से आया था। उसको किसी विषय

पर पूछ-गीछ करनी थी। बातों-ही-बातों में उससे विदित हुआ है कि मिल्ली ने पुनः नवल से मेल-जोल बढ़ा लिया है। इस कारण वह और उसकी पत्नी आनन्दप्रकाश की कोठी छोड़कर अपने मकान में चले गये हैं।"

"तो यह बात है। मेरे ख्याल में अब तो वह नवल से पूछे बिना कुछ भी करना नहीं चाहती। इसी कारण वह आज मेरे साथ नहीं आई।"

"और मैं यह समझ रहा हूँ कि आनन्दप्रकाश के पत्र को छिपाकर रखना भी नवल की ही सम्मति से हुआ है। वह उसकी कानूनी स्थिति सुदृढ़ कर रहा है।"

"तो अब क्या किया जाय ?"

"देखो मीना ! भाग्य बहुत ही बलशाली है। हमारे सदृश तुच्छ जीवों का प्रयास भाग्यचक्र को उलटने में सफल नहीं हो रहा।

"इस पर भी मैं जीवन में एक खेल खेल रहा हूँ। हमारे इस खेल में जीत-हार दोनों आती रहती हैं। इससे मैं न तो उदास हूँ न निराश। मैं आनन्दप्रकाश के भविष्य को बदलने का यत्न करता रहूँगा।"

"यही तो मैं पूछ रही हूँ कि अब क्या किया जाय ?"

"एक-दो दिन प्रतीक्षा कर मैं स्वयं उससे मिलूँगा। साथ में रजनी को भी ले चलेंगे। देखें तो तब क्या होता है ?"

जिस दिन रजनी कोठी छोड़कर गई थी और मीना उससे मिलने आई थी, उसी दिन नवल मिल्ली से मिलने के लिये सायं-काल आया। मिल्ली ने रजनी के चले जाने और मीना के आने के विषय में उसको बता दिया। नवल के मन पर इसकी यह

प्रतिक्रिया हुई कि रजनी गई तो ठीक ही हुआ है ; अब उसको मिल्ली से मिलने के लिये आने में किसी प्रकार के संकोच की आवश्यकता नहीं होगी ; अब वह पूर्वापेक्षा अधिक स्वतन्त्रता से मिल सकेगा। जहाँ तक मीना के बार-बार आने का सम्बन्ध था, वह अभी इस बात को समझ नहीं सका था कि उसका और उस के पति का इसमें क्या प्रयोजन हो सकता है।

इस विषय में वास्तविक बात जानने के लिए वह अगले दिन लालचन्द से मिला। दोनों बार-रूम में बैठे, अपने-अपने मुकद्दमे के पेश होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। लालचन्द के पास किसी कम्पनी का मुकद्दमा था और नवल डाकुओं की एक मण्डली के पकड़े जाने पर, उनकी पैरवी कर रहा था। दोनों के मुन्शी सेशन-जज के कोर्ट-रूम के बाहर खड़े थे। वकील बार-रूम में बैठे, सिगरेट पीते हुए, जज के सम्मुख उपस्थित होने के लिए तैयार थे।

एकाएक नवल उठकर लालचन्द के पास आया और बोला, "सुनाओ मिस्टर साहनी! तुम्हारे मित्र आनन्दप्रकाश का कुशल-समाचार आता रहता है अथवा नहीं ?"

"मुझसे अधिक तो तुमको उसका समाचार ज्ञात होना चाहिये।"

"मुझको क्यों ? तुम्हारी बीवी तो उसकी पत्नी से प्रायः मिलने जाया करती है न ?"

"और तुम स्वयं नित्य ही उसकी पत्नी से मिलने जाया करते हो।"

"कौन कहता है ?"

"देखो नवल! हम दोनों एक ही पेशा करते हैं। हम दोनों

अपने विपक्षी के मन की बात उसके मुख से कहलाने का यत्न किया करते हैं और इसमें दोनों ही सफल होने में विख्यात हैं। इसलिये आपस में ऐसे मन की बातों को कहलाने का यत्न न कर, अपने आप ही स्पष्ट बात करें तो समय भी बचेगा और शक्ति भी। तुम्हारे मुकद्दमे का नम्बर पहले है, इस कारण समय व्यर्थ न गंवाकर मतलब की बात करो तो ठीक रहेगा।"

"तुम ठीक ही कह रहे हो।" नवल ने कह दिया।

"तो क्या यह सत्य नहीं है कि तुम्हारा आनन्दप्रकाश की पत्नी से अनुचित सम्बन्ध है ?"

"इस विषय में तो मैं तुमको बहुत पहले बता चुका हूँ।"

"क्या यह ठीक नहीं कि मिल्ली का बच्चा तुम्हारा बच्चा है ?"

"सूरत-शक्ल से यही प्रतीत होता है।"

"अब तुम बताओ, तुम उसके विषय में क्या विचार रखते हो ?"

"यह तुम अपना ज्योतिष लगाकर पता क्यों नहीं कर लेते ?"

"मिल्ली का हाथ देखकर इसका अनुमान लगाने का मैंने यत्न किया है। उसके हाथ की रेखाओं से तो यह विदित होता है कि तुम उसके साथ विश्वासघात करोगे।"

लालचन्द की इस बात से तो नवल का मुख पीला पड़ गया। फिर वह कुछ सम्भलकर बोला, "भगवान करे तुम्हारा भविष्य-वाणी गलत सिद्ध हो।"

"मुझे इससे प्रसन्नता होगी। वास्तव में अपनी ही भविष्य-वाणी को गलत सिद्ध करने के लिये मैं यत्न कर रहा हूँ।"

"तुमने आनन्दप्रकाश के विषय में भी तो कुछ भविष्यवाणी की थी ?"

"उसको तो तुम्हारे हस्ताक्षर करवा कर, मैंने अपने बैंक के लॉकर में रखवा दिया है।"

"मेरा ख्याल है, वह तो अब सत्य सिद्ध हो चुकी है।"

"अभी पूर्ण रूप से नहीं हुई है। परन्तु उसके पूर्ण होने के लिये तो अभी पर्याप्त समय है। उस पत्र पर लिखी बात पाँच वर्ष में पूर्ण होने वाली है।"

"क्या है वह ?"

"यह बताने का मेरा अधिकार नहीं है। मैं तो अभी भी उसको गलत करने की चेष्टा कर रहा हूँ।"

"आनन्दप्रकाश के विषय की बात तो मैं जानता नहीं। हाँ, अपने विषय में तो बता सकता हूँ कि तुम्हारी यह भविष्यवाणी गलत सिद्ध होगी।"

"मुझे इससे वास्तव में बहुत प्रसन्नता होगी; परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि यदि आनन्दप्रकाश उसका खर्चा देना बन्द कर दे तो तुम क्या करोगे ?"

"लालचन्द ! तुमको मिल्ली का गार्डियन किसने बनाया है ?"

"मिल्ली का गार्डियन तो नहीं, हाँ हिन्दुस्तानी होने के नाते हिन्दुस्तान के चरित्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है। यह अच्छा नहीं लगता कि हिन्दुस्तानी को कोई विदेशी बेईमान कहे।"

"मैं तुमसे कम हिन्दुस्तानी नहीं हूँ। मेरा विचार है कि चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।

"अच्छी बात है। जैसा मन में आये करो।"

* * *

आनन्दप्रकाश ने पंजाब गवर्नमेंट को लिख दिया कि वह अभी निकट भविष्य में चण्डीगढ़ नहीं आ रहा है। इस कारण

वह अपनी कोठी खाली कर रहा है। साथ ही उसने मिल्ली को लिख दिया कि अगले मास की पहली तारीख को वह कोठी खाली कर दे।

इस पर मिल्ली ने उससे पूछा कि ऐसी स्थिति में वह कहाँ जाकर रहे? इस पर आनन्दप्रकाश ने उसको लिखकर भेज दिया कि वह अपने बेटे के बाप के पास रह सकती है।

इस उत्तर पर पुनः मिल्ली और नवल में विचार-विमर्श हुआ। नवल की सम्मति थी कि वह स्वयं अपने खर्च पर, एक बँगला किराये पर ले लेगा। मिल्ली अपना सामान उसी में छोड़-कर आनन्दप्रकाश के पास चली जाय और उसको कहे कि वह अपने बच्चे के बाप के पास आ गई है। नवल चाहता था कि झगड़ा पहले आनन्दप्रकाश की ओर से प्रारम्भ हो। मिल्ली स्वयं क्यों स्वीकार करे कि आनन्दप्रकाश उसके बच्चे का बाप नहीं है?

इस प्रस्ताव को मिल्ली मान गई। उसने सरकारी कोठी में जितना अपना सामान था, सब निकलवा कर, एक अन्य बँगले में रखवा दिया और स्वयं दिल्ली चली गई।

आनन्दप्रकाश अपने होटल में खाना खा रहा था कि आया के हाथ में अपने बच्चे को दिये हुये, मिल्ली वहां पहुँच गई।

आश्चर्य में आनन्दप्रकाश ने उसको देखकर पूछा, "तुम··· तुम यहाँ किसलिए आई हो?"

"जिसलिये एक पत्नी अपने पति के पास आया करती है?"

"जब तक तुम अपने पापों का प्रायश्चित नहीं करतीं, तब तक तो मैं तुम्हें घर पर आने नहीं दूगा।"

"मैंने कोई पाप नहीं किया। मुझको किसी प्रकार का प्राय-श्चित करने की आवश्यकता नहीं है।"

"सत्य कहते हो कि तुमने 'एडल्टरी कमिट' नहीं की ?"

"मैं एडल्टरी के अर्थ नहीं जानती।"

"वही जो परमात्मा की दस आज्ञाओं में, बाइबल में लिखा हुआ है।"

"मैंने बाइबल पढ़ी ही नहीं।"

"मालूम होता है किसी वकील ने सिखा-पढ़ा कर भेजा है। अच्छी बात है, अभी सामान यहाँ रख लो। सायंकाल आऊँगा, तब बात करूँगा।"

खाना समाप्त कर आनन्दप्रकाश अपने कार्यालय को चला गया। मिल्ली ने स्नानादि से निवृत्त हो, होटल से नाश्ता मँगवाया और खाया। पश्चात् आराम कर, वह होटल के कमरे को ठीक करने लगी। उसने होटल के मैनेजर को बताया कि वह मिस्टर सूरी की पत्नी है, इस कारण अब उनको डबल-सीटर रूम दिया जाय। उसके सौभाग्य से उसी दिन होटल में एक डबल-सीटर रूम खाली हुआ था। मैनेजर ने उसको वह कमरा बता दिया और मिल्ली ने अपना सब सामान उठवाकर, उसमें रखवा लिया। सायंकाल जब आनन्दप्रकाश आया तो उसके चपरासी ने बताया कि मेमसाहब ने बड़ा कमरा लेकर सामान उसमें रखवा लिया है।

इससे आनन्दप्रकाश बहुत ही परेशान हुआ। वह मन में विचार करता था कि इस ज़बरदस्ती का, बिना शोर मचाये, किस प्रकार निबटारा हो।

आनन्दप्रकाश ने अपने दफ्तर से एक अर्जेंट तार लालचन्द को भेज दिया था, जिसमें उससे आग्रह किया था कि वह तुरन्त

दिल्ली चला आए ।

मध्याह्न बारह बजे, चण्डीगढ़ से बस में सवार हो, रात के नौ बजे लालचन्द दिल्ली पहुँच गया। स्टेशन से ही उसने फोन से आनन्दप्रकाश को सूचित कर दिया कि वह आ गया है। आनन्दप्रकाश ने उसको बताया कि उसके ठहरने का प्रबन्ध उसने अपने होटल में ही कर रखा है, अतः इस समय वह कहीं अन्यत्र न जाकर, सीधा वहीं चला आये।

लालचन्द आया तो उसके भोजन करते-करते ही बातचीत आरम्भ हो गई। आनन्दप्रकाश ने मिल्ली के दिल्ली आ जाने की पूर्ण बात उसको बता दी।

"तो तुम क्या चाहते हो ?" लालचन्द ने पूछा।

"मैंने इसको लिखा था कि वह अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिये लिखकर 'कन्फैशन' करे, तब मैं इसको अपने घर पर रख सकता हूँ।"

लालचन्द ने मिल्ली से पूछा, "बताओ मिसेज सूरी ! तुम क्या चाहती हो !"

"मैंने कोई पाप नहीं किया, जिसके स्वीकार करने की आवश्यकता हो। मैं इनकी पत्नी हूँ और इस कारण इनके पास रहने के लिये आई हूँ।"

"मिस्टर सूरी ! मिल्ली नवलकिशोर की राय से यह सब कुछ कर रही है, इस कारण यह लिखकर कुछ नहीं देगी। यदि तुम इसके पातिव्रत भंग करने को सिद्ध कर सकते हो, तब तो इसको धक्के देकर यहाँ से निकाल दो। मैं तुम्हारी ओर से मुकदमा लड़ूँगा। परन्तु मैं समझता हूँ कि अभी सुलह होने के सभी मार्ग एवं अवसर समाप्त नहीं हुए।

"क्यों मिसेज़ सूरी ! मैं ठीक कहता हूँ न ?"

"मेरी ओर से कोई झगड़े की बात नहीं है। मैं इनके बच्चे की माँ हूँ। इस कारण इस बच्चे का और अपना संरक्षण प्राप्त करने के लिये यहाँ आई हूँ। यह मेरा अधिकार है।"

"देखो मिल्ली ! मैं तुमको जानता हूँ और तुम भी मुझको जानती हो। इस समय कोई बाहरी आदमी भी यहाँ उपस्थित नहीं है। इस कारण यह वकीलों की बातें छोड़, मैं तुमसे एक-दो प्रश्न पूछता हूँ। उसका जो ठीक समझो, उत्तर देना। इस प्रकार दो मिनट में बात तय होती है।"

मिल्ली चुप रही। उसने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। इस पर लालचन्द ने कहा, "मैं यह कहता हूँ कि दो नौकाओं में पाँव रखने वाला अवश्य डूबता है। मैं नहीं चाहता कि इस परदेश में तुम्हारे साथ कोई इस प्रकार की बात हो। इस कारण मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम आनन्दप्रकाश सूरी की पत्नी बनकर रहना चाहती हो अथवा नवलकिशोर की ?"

मिल्ली के मन में सँशय हो गया था कि उसको किसी फंदे में फँसाया जा रहा है। इस कारण वह अभी भी चुप थी और विचार कर रही थी कि क्या उत्तर दे। उसे चुप देख लालचन्द ने अपने प्रश्न की व्याख्या कर दी। उसने कहा, "देखो मिल्ली ! मैं तुम्हारे ही हित की बात करने का विचार रखता हूँ और वह भी तुम्हारी रुचि के अनुसार। जैसा तुम चाहोगी, मैं वैसा ही प्रबन्ध करने का यत्न करूँगा।"

"यह बात तो स्पष्ट है ही कि भूतकाल में तुम्हारा नवल-किशोर से सम्बन्ध रहा है। मैं यह भी जानता हूँ कि यह बच्चा

भी उसी का है। एक बात और भी मैं जानता हूँ कि इन दोनों के अतिरिक्त तुम्हारा किसी अन्य तीसरे व्यक्ति से कोई सम्बन्ध नहीं रहा।

"इतने ज्ञान के पश्चात् मैं यह जानना चाहता हूँ कि इन दोनों में तुम किसको पति बनाकर रखना चाहती हो। मैं यत्न करूँगा कि उसके साथ तुम्हारा प्रबन्ध करा सकूँ। आनन्दप्रकाश से तो सम्बन्ध कानूनी तौर पर भी है और यहाँ तो इसको थोड़ा समझाने से काम बन जायगा, परन्तु यदि तुम नवल के पास रहना चाहो तो उससे तो किसी प्रकार लिखा-पढ़ी करानी होगी। यह कार्य अति कठिन होने पर भी, मैं तुम्हारे लिये नवल से झगड़ा कर, उसे विवश कर सकता हूँ।

"अब यह बताओ कि तुम क्या हो? यह निश्चित है कि तुम दो पतियों की पत्नी बनकर नहीं रह सकती। इसमें मुकदमेबाज़ी और धन का अपव्यय तो है ही, साथ ही जान का भय है। नवल किसी से भी तुमको मरवा डालेगा। उसके बहुत से चोर-डाकू मुवक्किल हैं।"

इससे तो मिल्ली के मुख का रंग विवर्ण हो गया। वह मन में विचार कर रही थी कि क्या सत्य ही नवल यह सब कुछ करने में समर्थ है। यों तो उसने बहुत-सी चोर-डाकुओं की कहानियाँ, जिनको उसने अपने चातुर्य से कानूनी शिकंजे से छुड़ा दिया था, उसको सुनाई थीं।

मिल्ली ने मान लिया, "मिस्टर साहनी! मैं आपकी यह बात मानती हूँ कि मुझको दो पतियों की पत्नी बनकर नहीं रहना चाहिये। मैं यह बात, इस समय ज़बानी ही मान रही हूँ। लिखकर तो मैं कभी भी दूँगी नहीं।

"मैं मिस्टर सूरी के पास रहने के लिये आई हूँ। इसका

अर्थ तो यही है कि मैं इनके पास रहना चाहती हूँ।"

"जो बात मैंने पूछी है, वह तुमने नहीं बताई। नवल यहाँ भी आ सकता है वह दिल्ली में तो प्रायः आया ही करता है। वह पुनः तुमसे अपना सम्पर्क बनाने का यत्न करेगा। यदि तुममें इतना साहस है कि उसको इन्कार कर सकती हो, तब तो मैं मिस्टर सूरी से तुमको एक चान्स और देने के लिये आग्रह कर सकता हूँ।"

"मैं तो यहाँ रहने के लिये आई हूँ। इस आने के पूर्ण अर्थों को समझ कर आई हूँ। मैं चाहती हूँ कि मिस्टर सूरी मुझको मेरी पिछली भूल के लिये क्षमा कर दें। यदि यह क्षमा करदें, तो मैं वचन देती हूँ कि मैं अब इनकी निष्ठावान पत्नी बनकर रहूँगी।"

लालचन्द इतनी जल्दी बात के समाप्त होने की आशा नहीं रखता था।

जब मिल्ली ने क्षमा माँगी तो आनन्दप्रकाश मान गया। उसने कहा, "मैं इसको एक चान्स और देना चाहता हूँ, परन्तु इसको भी समझ लेना चाहिये कि यह अब एक बच्चे की माँ है। इसको अपना आचरण सुधारना चाहिये।"

उस रात्रि लालचन्द उसी होटल में रह गया और प्रातःकाल उन लोगों से विदा माँग, चण्डीगढ़ चला गया।

चतुर्थ परिच्छेद

नवल उत्सुकता से मिल्ली के दिल्ली से लौट आने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसका विचार था कि बात इतनी दूर तक जा चुकी है कि कोई अति निर्लज्ज पति ही मिल्ली को अब अपने घर रखेगा। वह यह चाहता था कि धक्के देकर मिल्ली को होटल से निकाल दिया जाय। तत्पश्चात् वह आनन्दप्रकाश पर गुज़ारे की नालिश कर देगी। उस मुकदमे में या तो मिल्ली को तलाक मिल जायेगा या गुज़ारा। दोनों अवस्थाओं में आनन्दप्रकाश बदनाम होगा और मिल्ली निराश्रय हो, सर्वथा उसके पास, उसकी 'मिस्ट्रेस' बन, रहने लगेगी।

परन्तु जब ऐसा नहीं हुआ और वह दिल्ली से नहीं लौटी, तो नवलकिशोर इस विषय में जानने की इच्छा से लालचन्द से मिला। यह भेंट क्लब में हुई। नवल ने लालचन्द को चाय के लिये आमन्त्रित कर पूछा, "मैंने सुना है कि मिल्ली की अपने पति के साथ सुलह हो गई है ?"

"हाँ, कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है। परन्तु मुझसे अधिक उसका बहनोई साधुराम जानता है। वह कल ही दिल्ली से आया है।"

"और तुम नहीं गये थे क्या वहाँ ?"

"मैं गया था। उनमें सुलह कराने में मैंने अपनी ओर से सहायता कर दी थी। इस पर भी मेरे पास समय बहुत कम था और मैं सुलह का परिणाम जानने तक वहाँ ठहर नहीं सका।"

"तो अब मिल्ली चण्डीगढ़ वापस नहीं आ रही ?"

"यह तो तुम उससे ही पूछ सकते हो। मैं भला उसके मन की बात कैसे जान सकता हूँ ?"

नवल उसी सायंकाल साधुराम के घर जा पहुँचा। साधुराम तारघर से अपने समाचारों के तार देकर आया ही था कि नवल वहाँ पहुँच गया। साधुराम ने उसको बिठाया। चाय-पानी पूछकर बोला, "आज आपके दर्शनों का सौभाग्य कैसे प्राप्त हुआ है ?"

"मैंने सुना है कि कल आप दिल्ली गये थे ?"

"हाँ।"

"वहाँ आप मिस्टर आनन्दप्रकाश से मिले थे ?"

"जी।"

"मिल्ली भी मिली थी।"

"मिली थी।"

"प्रसन्न थी क्या ?"

"बाह्य लक्षणों से तो प्रसन्न ही दीख रही थी।"

"मैं यह जानने की इच्छा रखता हूँ कि वह कब तक यहाँ आने वाली है ?"

"क्षमा करें, मैं यह बात बताने में असमर्थ हूँ, क्योंकि मैं इस विषय में स्वयं ही नहीं जानता।"

"निकट भविष्य में ही मिस्टर सूरी यहाँ आने वाले हैं क्या ?"

"मैं इस विषय में कुछ भी नहीं जानता।"

"क्षमा कीजिए, मैंने व्यर्थ ही आपका समय लिया।" इतना कह नवल उठा और साधुराम से हाथ मिला चला आया।

साधुराम विस्मय और उत्सुकता में उसको जाता हुआ देखता रह गया। वह मन में विचार कर रहा था कि यह दुष्ट उनको शान्ति से नहीं रहने देगा।

जब आनन्दप्रकाश को सरकारी बँगला मिला और वह वहाँ चला गया तो उसको अपने सामान की, जो मिल्ली एक कोठी में छोड़कर आई थी, आवश्यकता पड़ गई। इस कारण आनन्द-प्रकाश ने साधुराम को लिखा कि वह नवलकिशोर से मिलकर, उस बँगले की चाबी ले, वहाँ का सामान बुक करा दे।

साधुराम जब इस विषय में नवल से मिला तो उसने कहा, "वह बँगला मैंने मिल्ली को रखने के लिए किराये पर लिया था। जब वह नहीं आई, तो बँगला व्यर्थ समझ मैंने छोड़ दिया था। वहाँ पर फर्नीचर किराये का था। वह वापस कर दिया गया है। मिल्ली अथवा आनन्दप्रकाश की कोई भी वस्तु वहाँ पर नहीं थी।"

साधुराम ने यह विवरण आनन्दप्रकाश को लिख दिया। आनन्दप्रकाश ने मिल्ली से पूछा तो उसने बताया कि फर्नीचर, जो वह वहाँ छोड़ आई थी, लगभग एक सहस्र रुपये के मूल्य का था। नवल उसको हजम कर गया है।

आनन्दप्रकाश ने फर्नीचर का विचार छोड़ दिया और इस नये बँगले में उसने नया फर्नीचर खरीदकर लगा लिया। परन्तु इसकी प्रतिक्रिया मिल्ली के मन पर बहुत ही बुरी हुई। अब उसको कुछ इस प्रकार समझ में आने लगा कि नवल ने उसका

भोग किया है और उससे अपना पीछा छुड़ाने के लिए उसे दिल्ली भेज दिया है। इसके पश्चात् फर्नीचर भी हजम कर गया है।

इसके कुछ मास पश्चात् एक दिन दोपहर को, जब आनन्द-प्रकाश कार्यालय में गया हुआ था, नवल मिल्ली से मिलने के लिये चला आया। उसको देख मिल्ली क्रोध से भर गई। उसने छूटते ही कहा, "तुम बहुत ही बेईमान हो। क्या वह फर्नीचर तुम्हारा था ?"

"हाँ, कोठी तुम्हारे लिये थी। फर्नीचर तुम्हारे लिये था। जब तुम नहीं आई तो मैं ही उसका अधिकारी था। मिल्ली, यह सब-कुछ मैंने एक अन्य बंगले में रख दिया है। जब तुम आओगी तो वह बँगला सजा-सजाया तुमको रहने के लिये मिल जायगा।"

"मैं अब वहाँ नहीं आऊँगी।"

"क्यों ?"

"तुमने मुझे यहाँ भेजा ही क्यों था ?"

"एक कानूनी पेच से बचने के लिये।"

"तो क्या वह कानूनी पेच अब निकल गया है ?"

"कुछ सीमा तक। पूर्णरूप से तब निकलेगा, जब तुम्हारे एक और बच्चा होगा"

"अब वह तुम्हारी सूरत का नहीं होगा।"

"यही तो मैं चाहता हूँ। यह बात सिद्ध कर देगी कि तुम मेरी मिस्ट्रेस रही हो और फिर भी बन सकती हो।"

"अच्छा, अब तुम जा सकते हो।"

"मैं तो तुमसे अपने पुराने सम्बन्धों को दोहराने के लिये

आया हूँ।"

"वे अब नहीं दोहराये जा सकते।"

"क्यों?"

"क्योंकि तुम बेईमान हो।"

"वह तो हम दोनों ही हैं।

मिल्ली ने उठकर दरवाज़े का पर्दा हटाते हुए कहा, "तुम चले जाओ।"

"अच्छी बात है। एक बात बताये देता हूँ। जब भी तुम्हारी इच्छा हो, तुम वहाँ चली आना। तुम्हारे लिये बँगला तैयार रहेगा। साथ ही यह देखो। उसने इतना कह बैंक की पास-बुक दिखा दी।

पास-बुक मिल्ली सूरी के नाम पर थी और उसमें पचास हज़ार रुपया जमा था। नवलकिशोर ने कहा, "यह रुपया तो तुमको तुरन्त ही मिल जायेगा। साथ ही मासिक भत्ता भी।"

"आप अब तशरीफ ले जाइये।"

मिल्ली स्वयं को पुनः उसके सम्मोहन में फँसती हुई-सी समझने लगी थी। उसने अपने मन को धिक्कारा; परन्तु नवल के मुख में कुछ ऐसा जादू था कि जितनी देर वह वहाँ बैठा रहा, मिल्ली उसके साथ चण्डीगढ़ वापस चले जाने को सोचती रही।

यह तो आनन्दप्रकाश के लिये केवल कृतज्ञता-मात्र थी, जो वह मुख से इस विषय में नवल को कह नहीं सकी थी। अपने मन को वश में करने के लिये ही उसने नवल को शीघ्र वहाँ से चले जाने के लिये कहा था।

नवल के चले जाने के पश्चात् वह अपने मस्तिष्क में पुनः एक बवण्डर-सा उठता हुआ पाने लगी थी। वह सीधी अपने सोने के कमरे में गई और जाकर लेट रही। लेटी-लेटी वह मन

में विचार कर रही थी कि उसके मन की इस अव्यवस्था का क्या कारण है।

इस समय उसको रजनी के अपने पति के साथ सम्बन्ध का स्मरण हो आया। रजनी ने बताया था कि किस प्रकार वह सम्बन्ध वासना और पुत्रेषणा से पृथक् है। वह रजनी के कथन के प्रकाश में अपने और नवल के सम्बन्ध का विश्लेषण कर रही थी। उसका सम्बन्ध नवल से वासना का था। पुत्रेषणा भी उस में है, परन्तु नवल से पुत्र पाकर भी वह प्रसन्न नहीं हुई थी। क्यों ? वह इस 'क्यों' का उत्तर नहीं जानती थी। उसको नवल एक सुन्दर, सुदृढ़ और समझदार युवक प्रतीत हुआ था। उसका लड़का भी उसकी ही सूरत-शक्ल का था। वह भी बड़ा होकर अवश्य अपने पिता के समान सुन्दर होगा। इस पर भी वह उस को देख विशेष उल्लास अनुभव नहीं करती थी।

वह इतना तो समझ गई थी कि जब तक नवल उसके सम्मुख नहीं आया था, वह उसको स्मरण नहीं करती थी। परन्तु अब उसके एक बार ही सामने आने पर, उसके मन में उथल-पुथल मच रही थी।

वह अभी अपने पलंग पर ही लेटी थी कि आनन्दप्रकाश दफ्तर से आ गया। उसने उसको लेटा हुआ देखा, तो चिन्ता प्रकट कर पूछा, "डार्लिंग ! स्वास्थ्य तो ठीक है न ? आज अभी तक सो ही रही हो ?"

मिल्ली ने अपने मन के भावों को छिपाते हुए कहा, "आप चाय इत्यादि पीजिये। मैं अभी आती हूँ। स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं है।"

"तनिक जल्दी करो। मैं तो आज पिक्चर देखने का विचार कर रहा हूँ।"

"तो आप जाइये। मैं स्वयं को जाने में असमर्थ पा रही हूँ।"

"किन्तु मैंने तो दो टिकट मंगवा लिये हैं।"

"अपने स्टेनो को ले जाइये। मैं कुछ थकी-थकी-सी अनुभव कर रही हूँ।"

"एक ऐस्प्रो खा लो।"

आनन्दप्रकाश ड्राइंग-रूम में आकर वहीं बैठ गया, जहाँ कुछ समय पूर्व नवल बैठकर बातचीत करके गया था। मिल्ली गुसल-खाने में मुख-हाथ धोने और अपने को सचेत और सजग बनाने के लिये कुछ क्रीम-पाउडर का एक छींटा, होठों पर सुर्खी का एक और पोत करने में लग गई।

बैरा अभी चाय लगा ही रहा था कि आनन्दप्रकाश की दृष्टि समीप रखे फूलदान के पास, एक खुले लिफाफे की ओर चली गई। उसने लिफाफा उठाया। यह मिल्ली के नाम पत्र था। लिफाफा खुला था, परन्तु उस पर डाक की मोहर लगी थी। आनन्दप्रकाश को यह जानने की उत्सुकता हुई कि वह पत्र कहाँ से आया है। उसने ध्यान से चिट्ठी आने वाले डाक-खाने की मुहर पढ़ी। वह चण्डीगढ़ की थी। आनन्दप्रकाश ने समझा कि रजनी का पत्र होगा। इस कारण उसने लिफाफे में से पत्र निकाल लिया। पत्र देखते ही वह स्तब्ध रह गया। यह तो नवल का पत्र था।

इसी समय साथ के कमरे से मिल्ली के आने का शब्द हुआ। इस पर उसने वह पत्र और लिफाफा अपनी कोट की जेब में रख लिया। वह जानना चाहता था कि वह बदमाश का बच्चा मिल्ली को क्या लिख रहा है?

मिल्ली वहाँ आ, आनन्दप्रकाश के समीप बैठ, चाय बनाने

लग गई। आनन्दप्रकाश ने अपने स्टेनो को आवाज़ दी, "मिस्टर चक्रवर्ती, आओ चाय पी लो।"

मिस्टर चक्रवर्ती ऑफिस के पश्चात् आनन्दप्रकाश के डिक्टेशन लिया करता था। आनन्दप्रकाश द्वितीय पंचवर्षीय योजना पर एक पुस्तक लिख रहा था। वह अपने 'नोटों' से आंकड़े लिखा, उस योजना की विवेचना लिखाया करता था। उसका स्टेनो, उस विवेचना को लेकर, पश्चात् एक घँटा-भर नित्य टाइप कर, उन पत्रकों को आनन्दप्रकाश के पास छोड़ जाया करता था।

चक्रवर्ती प्रायः नित्य ही कार्यालय से आनन्दप्रकाश की मोटर में आया करता था। यहाँ आकर, चाय पी, वह काम पर लग जाता था।

मिल्ली ने चाय बनाते हुए कह दिया, "मेरे पिक्चर देखने न जाने पर आप रुष्ट तो नहीं होंगे?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। मैं अभी अपने मित्र सोम को टेलिफोन कर देता हूँ। वह आ जायगा।"

इस प्रकार बात टल गई। चाय पीकर आनन्दप्रकाश ने अपने स्टेनो को डिक्टेशन दे दिया। इस कार्य में बीस मिनट लगे। इसके लिये आनन्दप्रकाश ने नोट्स पहले ही तैयार कर रखे थे।

पश्चात् आनन्दप्रकाश ने अपने मित्र सोमदत्त को टेलिफोन कर दिया और उससे रीगल के बाहर मिलने का वचन ले लिया।

* * *

आनन्दप्रकाश को आज विस्मय हुआ, जब मिल्ली ने तबियत खराब होने के कारण पृथक् सोने की इच्छा व्यक्त की। जब से वह आई थी, आनन्दप्रकाश ने उस पर बलपूर्वक अपनी इच्छा

थोपने का कभी यत्न नहीं किया था। आज भी वह मान गया। उसने पुनः पूछा, "ऐस्प्रो खाई या नहीं ?"

"अभी खाई है। आशा है रात को नींद आ जायेगी।"

जब मिल्ली अपने सोने के कमरे में चली गई तो आनन्द-प्रकाश को उस पत्र की याद आई, जो वह उठाकर अपनी जेब में रखे हुए था। उसने उसे अपनी कोट की जेब से निकाला और बिस्तर पर बैठ, बैड-स्विच जला कर उसे पढ़ने लगा।

पत्र पर तारीख पिछले दिन की थी। पत्र चण्डीगढ़ से आया था और नीचे नवल बत्रा के हस्ताक्षर थे।

पत्र में लिखा था—

"माई डीयरैस्ट !

"जब से तुम यहाँ से गई हो, मैं कभी भी रात भर पूरी नींद नहीं ले सका हूँ। मेरी नींद स्वप्नों से खुलती रहती है। उन स्वप्नों में तुमको सदा अपने समीप पाता हूँ और जब नींद खुलती है तथा स्वप्न विलीन होता है, तो मैं स्वयं को बिस्तर में छट-पटाता पाता हूँ।

"मैं समझता हूँ कि यह चिरकाल तक नहीं चल सकता। या तो तुम चली आओ अन्यथा नवल का नर्वस सिस्टम फट से बैठ जायगा।

"नम्बर तीस स्टेट रोड पर का बंगला सामान से लेस, सदा तुम्हारे लिये तैयार रहता है। इस बार जब तुम आओगी, तो फिर मैं तुमको वापस नहीं जाने दूँगा। जो कुछ भी परिणाम हो, मैं उसको सहन करने के लिये तैयार हूँ।

"मैं कल स्वयं दिल्ली आने वाला हूँ और यह इच्छा करता

लग गई। आनन्दप्रकाश ने अपने स्टेनो को आवाज़ दी, "मिस्टर चक्रवर्ती, आओ चाय पी लो।"

मिस्टर चक्रवर्ती ऑफिस के पश्चात् आनन्दप्रकाश के डिक्टेशन लिया करता था। आनन्दप्रकाश द्वितीय पंचवर्षीय योजना पर एक पुस्तक लिख रहा था। वह अपने 'नोटों' से आंकड़े लिखा, उस योजना की विवेचना लिखाया करता था। उसका स्टेनो, उस विवेचना को लेकर, पश्चात् एक घँटा-भर नित्य टाइप कर, उन पत्रकों को आनन्दप्रकाश के पास छोड़ जाया करता था।

चक्रवर्ती प्रायः नित्य ही कार्यालय से आनन्दप्रकाश की मोटर में आया करता था। यहाँ आकर, चाय पी, वह काम पर लग जाता था।

मिल्ली ने चाय बनाते हुए कह दिया, "मेरे पिक्चर देखने न जाने पर आप रुष्ट तो नहीं होंगे?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। मैं अभी अपने मित्र सोम को टेलिफोन कर देता हूँ। वह आ जायगा।"

इस प्रकार बात टल गई। चाय पीकर आनन्दप्रकाश ने अपने स्टेनो को डिक्टेशन दे दिया। इस कार्य में बीस मिनट लगे। इसके लिये आनन्दप्रकाश ने नोट्स पहले ही तैयार कर रखे थे।

पश्चात् आनन्दप्रकाश ने अपने मित्र सोमदत्त को टेलिफोन दिया और उससे रीगल के बाहर मिलने का वचन ले लिया।

* * *

आनन्दप्रकाश को आज विस्मय हुआ, जब मिल्ली ने तबियत खराब होने के कारण पृथक् सोने की इच्छा व्यक्त की। जब से वह आई थी, आनन्दप्रकाश ने उस पर बलपूर्वक अपनी इच्छा

थोपने का कभी यत्न नहीं किया था। आज भी वह मान गया। उसने पुनः पूछा, "ऐस्प्रो खाई या नहीं ?"

"अभी खाई है। आशा है रात को नींद आ जायेगी।"

जब मिल्ली अपने सोने के कमरे में चली गई तो आनन्दप्रकाश को उस पत्र की याद आई, जो वह उठाकर अपनी जेब में रखे हुए था। उसने उसे अपनी कोट की जेब से निकाला और बिस्तर पर बैठ, बैड-स्विच जला कर उसे पढ़ने लगा।

पत्र पर तारीख पिछले दिन की थी। पत्र चण्डीगढ़ से आया था और नीचे नवल बत्रा के हस्ताक्षर थे।

पत्र में लिखा था—

"माई डीयरैस्ट !

"जब से तुम यहाँ से गई हो, मैं कभी भी रात भर पूरी नींद नहीं ले सका हूँ। मेरी नींद स्वप्नों से खुलती रहती है। उन स्वप्नों में तुमको सदा अपने समीप पाता हूँ और जब नींद खुलती है तथा स्वप्न विलीन होता है, तो मैं स्वयं को बिस्तर में छटपटाता पाता हूँ।

"मैं समझता हूँ कि यह चिरकाल तक नहीं चल सकता। या तो तुम चली आओ अन्यथा नवल का नर्वस सिस्टम फट से बैठ जायगा।

"नम्बर तीस स्टेट रोड पर का बंगला सामान से लेस, सदा तुम्हारे लिये तैयार रहता है। इस बार जब तुम आओगी, तो फिर मैं तुमको वापस नहीं जाने दूँगा। जो कुछ भी परिणाम हो, मैं उसको सहन करने के लिये तैयार हूँ।

"मैं कल स्वयं दिल्ली आने वाला हूँ और यह इच्छा करता

हूँ कि तुम मुझको निराश नहीं लौटाओगी।"

तुम्हारा
—नवल"

इस पत्र को पढ़कर तो आनन्दप्रकाश का पारा चढ़ गया और उसके मन में आया कि छड़ी लेकर मिल्ली को पीट-पीटकर कोठी से बाहर निकाल दे। अगले ही क्षण उसकी समझ में यह आगया कि दिन निकलते ही उसका नाम समाचारपत्रों के प्रथम पृष्ठ पर, मोटे-मोटे अक्षरों में छप जायेगा और उसको शैतान का नाम लेकर सम्बोधन किया जायगा। इससे वह काँप उठा और उसने निश्चय किया कि इस विषय में वह लालचन्द से राय कर मिल्ली का अन्तिम निर्णय करेगा।

उसको इस पत्र से ऐसा समझ में आया कि नवल उस दिन दोपहर के समय आया है। वह मिल्ली से मिला है और मिल्ली ने उसे सन्तुष्ट वापस भेजा है। अब वह उससे झगड़ा कर चण्डीगढ़ चली जाना चाहती है।

रात-भर वह सो नहीं सका। प्रातःकाल जब वह उठा तो उसकी आँखें लाल हो रही थीं। मिल्ली ने उसकी, इस प्रकार बिगड़ी दशा देखकर कहा, "किसी डॉक्टर को बुलाकर दिखा दीजिये न?"

"नहीं, कोई बात नहीं। केवल थकावट है, सो मैं आज कार्यालय से छुट्टी ले विश्राम कर लूँगा।"

"अच्छी बात है।"

आनन्दप्रकाश ने अपने ऑफिसर को फोन कर, आज दिन की छुट्टी के लिए निवेदन कर दिया। स्नानादि से निवृत्त हो, अल्पाहार कर, वह पुनः पलंग पर सो गया। जागने पर उसका चित्त

कुछ शान्त प्रतीत होता था। उसने एक लम्बा पत्र लालचन्द को लिखा, जिसमें उसने मिल्ली के व्यवहार के विषय में लिखा और फिर नवल का पत्र, जो उसको कल फूलदान के पास पड़ा मिला था, नकल कर एक प्रति उसको भेज दी।

मिल्ली बाज़ार में कुछ खरीददारी करने के लिए गई हुई थी। आनन्दप्रकाश पत्र लिखकर, नौकर को डाक में डालने के लिए देकर, अभी बैठा ही था कि साधुराम और रजनी आगये।

साधुराम अपने किसी कार्य से दिल्ली आ रहा था कि रजनी ने भी भाई से मिलने की इच्छा व्यक्त की और वह उसको साथ लेकर आगया।

इस असमय में आनन्दप्रकाश को घर पर देख साधुराम ने कहा, "ओह ! भाभी के स्थान पर भैया ही घर पर मिल गये।"

आनन्दप्रकाश ने साधुराम को देखा तो वह सोने के कमरे से निकल आया और रजनी को साथ देख पूछने लगा, "आज अचानक कैसे आ गई हो ? रजनी !"

"वाह भैया ! ऐसे भी कोई अपनी बहिन से पूछता है ? पहले बैठाओ, कुछ खाने-पीने को पूछो, पीछे यहाँ आने का कारण पूछ लेना।"

"भाभी कहाँ है ? भाई साहब !" साधुराम ने मिल्ली को न देख पूछा।

"मेरी आज तबियत ठीक नहीं थी। कार्यालय से छुट्टी लेकर आराम कर रहा था कि नींद आ गई। नींद खुली तो पता चला कि वह कपड़ा खरीदने के लिये कनॉट प्लेस गई है।"

साधुराम ने घड़ी देखकर कहा, "देखिये सवा बज रहा है और हम भूखे हैं।"

"ठीक डेढ़ बजे भोजन होगा। आशा है तब तक मिल्ली भी आजायगी।"

हूँ कि तुम मुझको निराश नहीं लौटाओगी।"

तुम्हारा
—नवल"

इस पत्र को पढ़कर तो आनन्नप्रकाश का पारा चढ़ गया और उसके मन में आया कि छड़ी लेकर मिल्ली को पीट-पीटकर कोठी से बाहर निकाल दे। अगले ही क्षण उसकी समझ में यह आगया कि दिन निकलते ही उसका नाम समाचारपत्रों के प्रथम पृष्ठ पर, मोटे-मोटे अक्षरों में छप जायेगा और उसको शैतान का नाम लेकर सम्बोधन किया जायगा। इससे वह काँप उठा और उसने निश्चय किया कि इस विषय में वह लालचन्द से राय कर मिल्ली का अन्तिम निर्णय करेगा।

उसको इस पत्र से ऐसा समझ में आया कि नवल उस दिन दोपहर के समय आया है। वह मिल्ली से मिला है और मिल्ली ने उसे सन्तुष्ट वापस भेजा है। अब वह उससे झगड़ा कर चण्डीगढ़ चली जाना चाहती है।

रात-भर वह सो नहीं सका। प्रातःकाल जब वह उठा तो उसकी आँखें लाल हो रही थीं। मिल्ली ने उसकी, इस प्रकार बिगड़ी दशा देखकर कहा, "किसी डॉक्टर को बुलाकर दिखा दीजिये न ?"

"नहीं, कोई बात नहीं। केवल थकावट है, सो मैं आज कार्यालय से छुट्टी ले विश्राम कर लूँगा।"

"अच्छी बात है।"

आनन्दप्रकाश ने अपने ऑफिसर को फोन कर, आज दिन की छुट्टी के लिए निवेदन कर दिया। स्नानादि से निवृत्त हो, अल्पाहार कर, वह पुनः पलंग पर सो गया। जागने पर उसका चित्त

कुछ शान्त प्रतीत होता था। उसने एक लम्बा पत्र लालचन्द को लिखा, जिसमें उसने मिल्ली के व्यवहार के विषय में लिखा और फिर नवल का पत्र, जो उसको कल फूलदान के पास पड़ा मिला था, नकल कर एक प्रति उसको भेज दी।

मिल्ली बाज़ार में कुछ खरीददारी करने के लिए गई हुई थी। आनन्दप्रकाश पत्र लिखकर, नौकर को डाक में डालने के लिए देकर, अभी बैठा ही था कि साधुराम और रजनी आगये।

साधुराम अपने किसी कार्य से दिल्ली आ रहा था कि रजनी ने भी भाई से मिलने की इच्छा व्यक्त की और वह उसको साथ लेकर आगया।

इस असमय में आनन्दप्रकाश को घर पर देख साधुराम ने कहा, "ओह! भाभी के स्थान पर भैया ही घर पर मिल गये।"

आनन्दप्रकाश ने साधुराम को देखा तो वह सोने के कमरे से निकल आया और रजनी को साथ देख पूछने लगा, "आज अचानक कैसे आ गई हो? रजनी!"

"वाह भैया! ऐसे भी कोई अपनी बहिन से पूछता है? पहले बैठाओ, कुछ खाने-पीने को पूछो, पीछे यहाँ आने का कारण पूछ लेना।"

"भाभी कहाँ है? भाई साहब!" साधुराम ने मिल्ली को न देख पूछा।

"मेरी आज तबियत ठीक नहीं थी। कार्यालय से छुट्टी लेकर आराम कर रहा था कि नींद आ गई। नींद खुली तो पता चला कि वह कपड़ा खरीदने के लिये कनॉट प्लेस गई है।"

साधुराम ने घड़ी देखकर कहा, "देखिये सवा बज रहा है और हम भूखे हैं।"

"ठीक डेढ़ बजे भोजन होगा। आशा है तब तक मिल्ली भी आजायगी।"

बातों ही बातों में रजनी ने कहा, "मैं तो यहाँ एक सप्ताह के लिये रहने को आई हूँ। इनको तो इतने दिन तक के लिये यहाँ कोई कार्य है, परन्तु मैं दिल्ली की सैर करूँगी।"

"ठीक है, तुम्हारा सामान मैं उस बगल वाले कमरे में रखवा देता हूँ। तत्पश्चात् मैं कपड़े बदल कर आता हूँ। तब तक भोजन का समय हो जायेगा।"

आनन्दप्रकाश ने नौकर को कह कर उनका सामान बगल वाले कमरे में लगवा दिया। सभी ने अपने कपड़े बदले और डाइनिंग-रूम में एकत्रित हो गये। इसी समय मिल्ली भी आ पहुँची।

मिल्ली का मुख विवर्ण हो रहा था। आनन्दप्रकाश ने देखा तो पूछा, "आज भी क्या तुम्हारी तबियत खराब है?"

मिल्ली बोली, "खाना खाने के लिये जी नहीं कर रहा है। उल्टी होने को होती है, किन्तु होती नहीं।"

आनन्दप्रकाश ने कहा, "भोजन न करना, किन्तु यहाँ पर बैठ तो जाओ। साधुरामजी और रजनी आये हैं। इस प्रकार तुम्हारा भोजन के समय अनुपस्थित रहना अच्छा नहीं लगता।"

मिल्ली डाइनिंग-हॉल में चली आई। ड्राइवर मोटर में से, मिल्ली का बाज़ार से खरीदा हुआ सामान उठाकर, ड्राइंग-रूम में रख गया था।

रजनी और साधुराम ने भी देखा कि मिल्ली का मुख उतरा हुआ-सा है। मिल्ली रजनी के समीप बैठ गई और दोनों बातें करने लगीं।

बैरे ने खाना परस दिया। वे खाने लगे। मिल्ली ने खाने से इन्कार कर दिया। रजनी ने उससे इसका कारण पूछा तो उसने कहा, "कल से सिर में चक्कर आ रहा है। मैं बाज़ार गई थी कि इससे ध्यान दूसरी ओर लग जायेगा और शायद तबियत कुछ

ठीक हो जाये। किन्तु परिणाम इसके उलट ही हुआ। कल से आज तबियत अधिक खराब मालूम देती है।

"कुछ दिन तो नहीं चढ़ गये हैं ?"

मिल्ली मुस्करा कर चुप कर रही। रजनी ने कह दिया, "छः माह पश्चात् मैं तो दो बच्चों की माँ हो जाऊँगी। सुदर्शन अब ढाई वर्ष का हो गया है। मज़े से खेलता रहता है, किसी प्रकार तंग नहीं करता।"

"इस समय कहाँ है वह ?"

"हम प्रातः पाँच बजे बस में बैठे थे। बेचारा थक कर सो गया है।"

"इस नये आने वाले का क्या नाम रखने वाली हो ?"

"वाह ! जन्म से पहले ही नाम ? लड़का होगा या लड़की, जब तक यह पता न चल जाय, तब तक नाम किस प्रकार रखा जा सकता है ?" इस पर दोनों हँस पड़े।

रजनी ने पूछा, "मुन्ने का क्या नाम रखा है? "

"ये तो नाम की बात सुनकर आँखें मूँद लेते हैं। मैंने उसका नाम टौमस रख दिया है।"

इस पर रजनी ने अपने भाई से पूछा, "मुन्ने का नामकरण कब करोगे ?"

"मिल्ली ने उसका नाम तो रख ही दिया है।"

"भैया ! कोई हिन्दुस्तानियों का-सा नाम रखो न ?"

"वह जितना हिन्दुस्तानी है, उतनी तुम उसके साथ लग गई है।"

"तुम हो बहुत चतुर। हिन्दुस्तानी तरीके पर हिन्दुस्तानी नाम रखते तो बच्चे की बुआ को भी कुछ देना पड़ता न ?"

"तुम उसकी बुआ हो क्या ?"

और मधुर वातावरण को विक्षुब्ध करना नहीं चाहती थी।

*　　　*　　　*

उसी सायंकाल साधुराम और आनन्दप्रकाश कोठी के लॉन में टहलते हुये चण्डीगढ़ के विषय में बातें कर रहे थे। एकाएक साधुराम ने बताया, "नवल आजकल दिल्ली आया हुआ है। लालचन्द ने उसका ध्यान मिल्ली की ओर से हटाने के लिये एक पत्र नवल की पत्नी को लिखा था और उसका यह परिणाम हुआ कि उसकी पत्नी सान्त्वना कल चण्डीगढ़ पहुँचकर, उसके घर में घुस गई है। नवल जब वापस जायगा तो भारी झगड़ा होने की सम्भावना है।"

"तो कल नवल यहीं था ?"

"हाँ, मैं समझता हूँ, अभी टैक्सी में आते हुए, मैंने आज भी उसे, इम्पीरियल होटल के बाहर खड़े देखा है।"

यह समाचार सुनकर आनन्दप्रकाश गम्भीर हो गया। वह मन-ही-मन कल की मिल्ली की घबराहट का कारण समझ गया। साधुराम ने आनन्दप्रकाश के मुख पर के भाव चढ़ते-उतरते देखे तो चिन्ता प्रकट करते हुए पूछने लगा, "क्या बात है भाईसाहब ! आपको क्या कष्ट है, जो आप दफ्तर नहीं गये ?"

"कोई कष्ट नहीं। मैं कल से मिल्ली की यह दशा देख अनुमान लगा रहा हूँ कि नवल कल तथा आज, दोनों दिन उसको मिला है।"

"रजनी तो कह रही थी कि उसको दिन चढ़ रहे हैं।"

"ऐसी कोई बात नहीं है। परसों वह बिलकुल ठीक थी। कल प्रातः मेरे ऑफ़िस जाते समय तक वह बहुत प्रसन्न दीखती थी। जाते समय उसने मुझे सिनेमा के टिकट खरीद लाने के लिए कहा था। परन्तु कल शाम को जब मैं घर आया तो वह

उदास मुख, काँपते होठों के साथ लेटी हुई थी। सिनेमा जाने की उसकी रुचि नहीं थी। आज प्रातः जब मैं सो गया तो वह चली गई। यह कपड़ा खरीदना तो बहाना-मात्र था। न उसको कपड़े की आवश्यकता है न बच्चे को।

"बाजार से वापस लौटी है तो फिर उसका मुख विवर्ण दिखाई दे रहा था।"

"किन्तु यह आपका भ्रम-मात्र भी तो हो सकता है। बिना ठोस प्रमाण के इस प्रकार की बात का चिन्तन भी नहीं करना चाहिये।"

"मेरे पास इसका प्रमाण भी विद्यमान है। दिखाऊँ आपको ?"

साधुराम इस झगड़े में पड़ना नहीं चाहता था। परन्तु वह इन्कार भी नहीं कर सका। उसे चुप देख आनन्दप्रकाश ने उसको वहीं लॉन में ठहरने के लिए कहा और स्वयं भीतर जाकर, पिछले दिन वाला नवलकिशोर का पत्र ले आया। उसने वह पत्र, लिफाफे समेत साधुराम के हाथ में दे दिया। साधुराम ने लिफाफा देख पूछा, "यह क्या है ?"

"यह मिल्ली के नाम नवल का पत्र है।"

"परन्तु इस पर पता तो मेरे हाथ का लिखा है। कुछ दिन हुए मैंने इसमें रजनी का पत्र मिल्ली के नाम भेजा था। इसमें उसने मिल्ली को लिखा था कि वह एक सप्ताह के लिए आ रही है।"

"भाई ! इसके अन्दर जो पत्र है, उसे भी तो ज़रा पढ़कर देखो न ?"

साधुराम ने पत्र निकाला और पढ़कर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहने लगा, "यह पत्र इस लिफाफे में आ किस प्रकार गया, मैं समझ नहीं पा रहा हूँ।"

"कल मैंने यह पत्र, इसी प्रकार, इस लिफाफे में ड्राइंग-रूम में एक फूलदान के पास पड़ा हुआ पाया है।"

"भाईसाहब ! मुझे तो इसमें कुछ रहस्य प्रतीत होता है। मिल्ली से इस विषय में पता करना चाहिए।"

चिरकाल तक विचारों में लीन रहने के पश्चात् आनन्द-प्रकाश बोला, "मैं इस पत्र का उल्लेख नहीं करूँगा। वैसे ही बातों-बातों में तुम नवल के दिल्ली में होने का उल्लेख करना। फिर देखेंगे कि वह क्या कहती है।"

इस योजना के अनुसार रात को खाने के पश्चात् जब ड्राइंग-रूम में बैठे थे, बात छिड़ गई। मिल्ली की तबियत पहले से अच्छी थी। उसने रात कुछ भोजन भी किया था।

सिगरेट पीते हुए साधुराम कहने लगा, "भाईसाहब ! मैंने सुना है नवल आजकल दिल्ली आया हुआ है ?"

"क्या कर रहा है वह बदमाश यहाँ ?" आनन्दप्रकाश ने जानना चाहा।

"यह तो मैं जानता नहीं। हाँ, इम्पीरियल होटल में ठहरा प्रतीत होता है। कुछ बात तो है, जो वह इतने मँहगे होटल में ठहरा हुआ है।"

"अच्छा छोड़ो इस बात को। इतनी बड़ी दिल्ली में न जाने कैसे-कैसे और कितने ही लोग आते रहते हैं ! उसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।"

मिल्ली ने इनकी बातों की ओर ध्यान नहीं दिया। वह रजनी के लड़के से बातें कर रही थी। सुदर्शन अपनी तोतली भाषा में अपने खिलौनों की बात बता रहा था।

आनन्दप्रकाश मिल्ली को, उनकी बातचीत की अवहेलना करते देख, पूछने लगा, "क्यों मिल्ली ! यह 'रोग' कल यहाँ आया था क्या ?"

"कल मैंने यह पत्र, इसी प्रकार, इस लिफाफे में ड्राइंग-रूम में एक फूलदान के पास पड़ा हुआ पाया है।"

"भाईसाहब! मुझे तो इसमें कुछ रहस्य प्रतीत होता है। मिल्ली से इस विषय में पता करना चाहिए।"

चिरकाल तक विचारों में लीन रहने के पश्चात् आनन्द-प्रकाश बोला, "मैं इस पत्र का उल्लेख नहीं करूँगा। वैसे ही बातों-बातों में तुम नवल के दिल्ली में होने का उल्लेख करना। फिर देखेंगे कि वह क्या कहती है।"

इस योजना के अनुसार रात को खाने के पश्चात् जब ड्राइंग-रूम में बैठे थे, बात छिड़ गई। मिल्ली की तबियत पहले से अच्छी थी। उसने रात कुछ भोजन भी किया था।

सिगरेट पीते हुए साधुराम कहने लगा, "भाईसाहब! मैंने सुना है नवल आजकल दिल्ली आया हुआ है?"

"क्या कर रहा है वह बदमाश यहाँ?" आनन्दप्रकाश ने जानना चाहा।

"यह तो मैं जानता नहीं। हाँ, इम्पीरियल होटल में ठहरा प्रतीत होता है। कुछ बात तो है, जो वह इतने मँहगे होटल में ठहरा हुआ है।"

"अच्छा छोड़ो इस बात को। इतनी बड़ी दिल्ली में न जाने कैसे-कैसे और कितने ही लोग आते रहते हैं! उसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।"

मिल्ली ने इनकी बातों की ओर ध्यान नहीं दिया। वह रजनी के लड़के से बातें कर रही थी। सुदर्शन अपनी तोतली भाषा में अपने खिलौनों की बात बता रहा था।

आनन्दप्रकाश मिल्ली को, उनकी बातचीत की अवहेलना करते देख, पूछने लगा, "क्यों मिल्ली! यह 'रोग' कल यहाँ आया था क्या?"

"नहीं तो।"

"यह पत्र उसने तुमको भेजा था ?" इतना कह आनन्द-प्रकाश ने वह लिफाफा, जिसमें नवल का पत्र था, मिल्ली के हाथ में दे दिया।

मिल्ली ने कहा, "यह तो रजनी बहिन का पत्र है।"

"नहीं-नहीं, इसमें एक पत्र और भी है।"

मिल्ली ने पत्र निकालकर पढ़ा। उसमें नवल का लिखा हुआ पत्र था, जिसमें उसने अपने दिल्ली आने तथा उससे मिलने के विषय में लिखा था। मिल्ली ने दिल कड़ा कर, पत्र वापस देते हुए कहा, "यह लिफाफा तो रजनी बहिन का भेजा हुआ है। भैया इसको पहचान लेंगे। मैं समझती हूँ कि यह पता इनके ही हाथ का लिखा हुआ है। किन्तु यह पत्र इसमें किस प्रकार आ गया, मैं नहीं जानती।"

"मैंने तो इसको इसी लिफाफे में पड़ा पाया है।"

मिल्ली ने निश्शंक मन से कह दिया, "मैं इस विषय में कुछ नहीं जानती।"

"तुम आज इम्पीरियल होटल गई थीं।"

मिल्ली ने वैसे ही उत्तर देते हुए कहा, "मैं मोटर में गई थी और मोटर में ही लौटी हूँ। आप ड्राइवर से पूछ लीजिये कि मैं कहाँ-कहाँ गई हूँ।"

इतना कह वह उठ खड़ी हुई और बोली, "मुझे बहुत खेद है कि दो वर्ष तक आपके पास दिल्ली में रहने पर भी, आप मुझ पर विश्वास नहीं करते। फिर बच्चे के विषय में भी आपके विचार जो हैं, वे स्पष्ट ही हैं। मैं नहीं जानती कि मैं क्या करूँ, जिससे आपके मन का मैल निकल सके।"

साधुराम को अत्यन्त दुःख था कि इस घटना ने यह दिशा ले ली है।

*   *   *

वास्तव में मिल्ली को इस पत्र का कोई ज्ञान नहीं था और वह अपने दिल को बहलाने के लिए ही कपड़ा खरीदने के लिये गई थी। कनॉट प्लेस में लीलाराम एण्ड संस की दुकान पर वह कपड़ा खरीदने के लिये गई तो नवल वहाँ पहले से ही खड़ा था। नवल ने छूटते ही पूछा, "मिल्ली ! मेरा पत्र मिला ?"

"कैसा पत्र ?"

"मैं जब परसों चण्डीगढ़ से चला था तो एक पत्र तुमको डालने के लिये लिख चुका था। मेरा विचार था कि चण्डीगढ़ में ही डाल दूँगा। इस समय मेरे मुवक्किल अपनी गाड़ी लेकर आ गए और मुझे अपने साथ चलने के लिये बाध्य करने लगे। मैंने पत्र लपेटकर अपनी जेब में रख लिया। यहाँ आकर मुझे अवकाश ही नहीं मिला और मैं उस पत्र के विषय में तो भूल ही गया था। कल जब अवकाश मिलने पर मैं तुम्हारे पास आया और हम बैठे बातें कर रहे थे कि मुझे वहीं पर, तुम्हारे नाम का एक लिफाफा दिखाई दिया। उसी समय मुझे तुम्हें लिखे पत्र की स्मृति हो आई। मैंने अपनी जेब से पत्र निकालकर उसमें डाल दिया। तुम उस समय मुझको डाँट रही थीं। मैंने सोचा तुमने मुझे पत्र डालते हुए देख लिया होगा और तुम उसे पढ़ ही लोगी।"

इस पर मिल्ली ने बताया, "बात यह हुई कि तुम्हारे चले जाने के पश्चात् कल मैं इतनी दु:खी हुई कि मैं सीधी सोने के कमरे में जाकर लेट गई। पश्चात् टौमी के डैडी आये और मेरा कुशल समाचार पूछने लगे। मैं जब चाय के लिए तैयार होने लगी तो वे बाहर ड्राइंग-रूम में आकर, उसी कुर्सी पर बैठ गये, जिस पर तुम बैठे थे। अवश्य ही वह पत्र उनके हाथ में आ गया होगा। क्या लिखा था तुमने उसमें ?"

"उसके हाथ लग गया तो अच्छा ही हुआ। देखो मिल्ली ! परमात्मा हमारा सम्बन्ध पक्का बना रहा है। इस कारण जब भी तुम्हारा आनन्दप्रकाश से झगड़ा हो, तुम चली आना। मैं तुमको वचन देता हूँ कि मैं तुम्हें उससे अधिक सुखी रखूंगा।"

मिल्ली इस पत्र की घटना से बहुत दुःखी हुई। पिछले दो वर्ष में उसने अपने मन को सन्तोष देकर, वश में करने का यत्न किया था। वह आनन्दप्रकाश से अपना सम्बन्ध सुधारने में लगी हुई थी। अब पुनः एकाएक जीवन में उथल-पुथल होने वाली दिखाई देने लगी। इससे वह अत्यन्त दुःख का अनुभव कर रही थी। घर पर आई तो वह, झगड़े की जड़, नवल के पत्र के विषय में आशंका से घबराई हुई और भयभीत थी।

भोजन के समय जब आनन्दप्रकाश ने रजनी को कहा, "रजनी ! तुम बच्चे की बुआ हो क्या ?" तो मिल्ली को एक और चोट लगी। वह अनुभव करने लगी थी कि वह तो जीवन भर के लिए ताने और लाँछन का सामान बन गया है। उसके मन में एक विचार आया कि फिर वह वही व्यवहार स्वीकार करे, जो उसने दिल्ली आकर, सुलह होने से पूर्व अपनाया हुआ था। अतः रात के खाने के पश्चात् और सोने से पूर्व, जब ड्राइंग-रूम में बैठ बातचीत हो रही थी, तो मिल्ली निर्लज्जों की भाँति हठी बन, बातें करने लगी।

जब मिल्ली स्वयं को निर्दोष प्रकट कर, अपने कमरे में चली गई तो रजनी और साधुराम भी उठे। आनन्दप्रकाश भी उठ खड़ा हुआ और उनके साथ ही उनके कमरे में पहुँचा।

आनन्दप्रकाश का कहना था—"इसके इस प्रकार सच्ची बनने के यत्न से मेरा सन्देह और भी बढ़ गया है। मुझको विश्वास होता जा रहा है कि कल नवल यहाँ आया था और

आज यह नवल से मिलकर आई है। नवल का यह पत्र दूसरे लिफाफे में कैसे चला गया, समझ में नहीं आता। परन्तु यह भी समझ में आ जाता यदि यह सत्य-सत्य घटना का पूर्ण विवरण बता देती।"

"आप मेरी बात मानिये। भाभी को भी क्रोध आ रहा है। क्रोध में मनुष्य अपने भले-बुरे की बात समझ नहीं सकता। इस कारण उसके क्रोध को शान्त हो जाने का अवसर दीजिये। पश्चात् इस पत्र का रहस्य खुल जायेगा और तब आप विचार कर लीजियेगा।"

आनन्दप्रकाश इस बात से गम्भीर हो गया और कितनी ही देर तक मन में विचार करता रहा। उसने लालचन्द को पत्र लिखा था। उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर लेना उचित समझ, वह अपने कमरे में चला गया।

*   *   *

अगले दिन से मिल्ली का व्यवहार साधारण हो गया। वह समय पर उठी और नित्य के काम में लग गई। उसने पिछली रात के झगड़े का ज़िकर नहीं किया। आनन्दप्रकाश भी नहीं समझ पा रहा था कि वह उसके साथ किस प्रकाश का व्यवहार करे। इस कारण दोनों परस्पर ऐसे मिले, जैसे प्रायः मिला करते थे और अभिवादन किया करते थे।

दिल्ली में कुछ सरकारी और सार्वजनिक कांफ्रेंसें हो रही थीं। साधुराम उनके समाचार एकत्रित कर, उन्हें अपने समाचार पत्रों में भेजने के लिये आया हुआ था। अतः वह प्रातःकाल ही, अभी आनन्दप्रकाश जागा भी नहीं था, स्नानादि से निवृत्त हो, घर से निकल गया था।

साधुराम विलम्ब से घर लौटा और रजनी से मिल्ली के

व्यवहार के विषय में जानकारी प्राप्त करने पर, उसे विदित हुआ कि घर में पूर्ण शाँति है। मिल्ली और आनन्दप्रकाश एक घण्टे से भी अधिक एकान्त में वार्तालाप करते रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि दोनों ने नवल के विषय में कोई बात नहीं की।

इस पर अपनी धारणा बताते हुए रजनी ने कहा, "मुझे तो यह शान्ति आँधी से पूर्व के लक्षण-सी प्रतीत होती है।"

"देखो रजनी ! मुझको यही ठीक प्रतीत होता है कि सुलह से दोनों पृथक्-पृथक् हो जायें। जो कुछ लेने-देने की बात हो, वह भी परस्पर बातचीत से ही निश्चित कर लें। मिल्ली विलायत चली जाय और आनन्दप्रकाश को अपनी किस्मत पर छोड़ दे।"

साधुराम के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब अचानक मिल्ली, उसी समय कमरे में आ गई।

"आओ भाभी !" साधुराम ने उठकर उसे बैठने के लिये कुर्सी देते हुए कहा।

मिल्ली बैठकर बोली, "भैया ! आप बताइये कि मुझे क्या करना चाहिये ? मैं अपने मन में इस अपमानजनक जीवन से घृणा करने लगी हूँ। मेरे लिये दो ही मार्ग रह गये हैं। या तो मैं आत्महत्या कर लूँ या भागकर नवलकिशोर से झगड़ा करूँ कि वह मेरे जीवन को क्यों बरबाद करने के लिये तुला हुआ है ? समय पाकर उसकी हत्या कर दूँ और फलस्वरूप फाँसी पर लटक जाऊँ।"

साधुराम ने कहा, "मुझे तो ये दोनों ही मार्ग गलत प्रतीत होते हैं। मैं समझता हूँ कि तुम्हारी अवस्था के व्यक्ति को अपने पूर्व कर्मों के प्रायश्चित के रूप में, अपने पति की बातों और व्यवहार की अवहेलना कर, अपने स्वयं के व्यवहार को ठीक रखते हुए, शान्त मन से निर्वाह करना चाहिये। इस मार्ग को हमारे शास्त्रों में तपस्या का मार्ग बताया है।

"देखो मिल्ली ! मैं तुमको अपने इतिहास की एक घटना बताता हूँ। एक ऋषि की पत्नी बहुत सुन्दर थी। देवताओं के राजा इन्द्र आखेट करते हुए उसकी कुटिया के समीप से निकले तो उसके रूप-लावण्य को देखकर उस पर मोहित हो गये। ऋषि कहीं गये हुए थे। इन्द्र ऋषि का वेश धारण कर वहाँ आया और उससे सम्भोग कर चला गया। पश्चात् ऋषि को इस बात का ज्ञान हुआ तो उन्होंने अपनी पत्नी का त्याग कर दिया। अलंकार रूप में यह लिखा है कि उन्होंने अपनी पत्नी को पत्थर होने का शाप दे दिया और स्त्री पत्थर बनकर एक पेड़ के नीचे पड़ी रही। चिरकाल व्यतीत हो गया। उस ओर से देश के राजा राम निकले। उनको उस स्त्री का इतिहास बताया गया तो उन्होंने उसको ऋषि के श्राप से मुक्त कर दिया। अर्थात् उन्होंने उसके पति को समझा दिया कि उसकी पत्नी की तपस्या इतनी लम्बी हो गई है कि वह अब शुद्ध, पवित्र और ग्रहण करने योग्य है।

"भाभी ! एक तो यह उपाय है। अपना व्यवहार ठीक रखो और पत्थर की भाँति दूसरों के कटाक्ष रूपी व्यवहार को सहन करती जाओ। भगवान् किसी राम के रूप में आयेंगे और भाई-साहब को समझा जायेंगे कि तुम अब पाप से मुक्त हो गई हो।

"परन्तु भाभी ! पहले परमात्मा, जो सर्वान्तर्यामी है, को अपनी तपस्या से यह विश्वास दिला दो कि तुम अब मन, वचन और कर्म से पवित्र हो गई हो। यही तपस्या का मार्ग है।

"इसके अतिरिक्त एक अन्य मार्ग भी है। उस अवस्था में मेरी सम्मति है कि तुम इंग्लैंड वापस चली जाओ। तुमको जाने और वहाँ एक ईमानदार स्त्री की भाँति जीवन-निर्वाह का प्रबन्ध करवाने का यत्न मैं कर सकता हूँ।"

"क्या प्रबन्ध करवा दोगे ?"

"मैं वचन तो नहीं दे सकता कि प्रबन्ध करवा ही दूँगा। हाँ, मैं यत्न कर दूँगा। एक तो वापस लौट जाने के लिये समुद्र के जहाज का भाड़ा, दूसरे कुछ धन, जिसके व्याज से तुमको प्रतिमास कुछ मिलता रहे। शेष, तुम वहाँ कुछ काम-धन्धा कर उपार्जन कर लेना।

"रही बच्चे की बात। यदि तुम इसको ले जाना चाहो तो ठीक है। तुमको मिलने वाली धनराशि में कुछ वृद्धि करवाने का यत्न करूँगा और तुम न ले जाना चाहो तो इसका प्रबन्ध नवल को कहकर करवाने का यत्न कर सकता हूँ।"

इन दोनों प्रस्तावों को सुनकर मिल्ली विचार करने लगी कि वह कौन-सा मार्ग ग्रहण करे। वह तुरन्त निश्चय नहीं कर सकी। उसने उठ कर जाते हुए कहा, "मैं आपके दोनों प्रस्तावों पर विचार करूँगी। एक अति दुस्तर मार्ग है और दूसरा भय और अपमान से भरा हुआ। इस कारण मैं अभी एक दम निश्चय नहीं कर सकती। हाँ, तब तक आप उनसे मिलकर बातचीत करें कि वे कितना धन मुझको दे सकते हैं।"

अगले दिन साधुराम ने समय निकालकर आनन्दप्रकाश से बात की। आनन्दप्रकाश ने बताया कि उसने मिल्ली को कहा है कि वह उसके घर में रह सकती है। शर्त यह है कि वह नवल से अपना सम्पर्क सर्वदा के लिये विच्छेद कर ले। परन्तु उसने इसके उत्तर में यही कहा है कि पिछले दो वर्ष में उसका नवल से किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रहा है। वह यह नहीं जानती कि यह पत्र, यहाँ किस प्रकार आ गया है। वह कहती है कि इस रहस्य को तो नवल ही बता सकता है। इस अवस्था में मैंने उसे पुनः अपना 'औप्शन' दे दिया है।"

"भैया! यदि वह ऐसा करने में स्वयं को असमर्थ पाये तो क्या यह ठीक नहीं होगा कि उसको वापस इंग्लैंड भेज दिया

जाय। उसको 'ऐलीमोनी' के रूप में कुछ धन दे दिया जाय और वह वहाँ जाकर, जैसा चाहे जीवन व्यतीत करे।"

"यह उसके मांगने की बात है। कोर्ट में जाकर अथवा घर पर परस्पर बात-चीत करके। परन्तु साधुराम ! वह तो भारत में ही किसी के मोह-जाल में फंसी हुई है। इस कारण वह इंग्लैंड जाना पसन्द नहीं करेगी।"

"यदि आप कहें तो मैं उससे बात करके देखूँ।"

"हाँ, यदि उसकी इच्छा हो तो मैं जाने भर का किराया और दो हज़ार पौंड तक देने की सामर्थ्य रखता हूँ।"

"और बच्चे का ?"

"मैं उसके विषय में कुछ नहीं जानता। वह मेरा नहीं है। जब भी मैं उसकी सूरत देखता हूँ, मुझको नवल स्मरण हो आता है और मेरे मन में ग्लानि भर आती है।"

इस पर साधुराम कुछ नहीं बोला। उसने केवल यही कहा, "मैं यत्न करूँगा। वैसे तो मैं आपके प्रस्ताव को उसके लिए ठीक समझता हूँ।"

इसी समय डाकिया लालचन्द का पत्र दे गया। लालचन्द के पत्र का सारांश इस प्रकार था—

"नवल चार-पाँच दिन तक दिल्ली में रहा है और इस अवधि में वह अवश्य ही मिल्ली से मिला होगा। मैंने उसके जीवन को स्थिर करने के लिये उसकी पत्नी की माँ को लिखा था कि वह अपनी लड़की को लेकर चण्डीगढ़ चली आए। वहाँ वह झगड़ा करे और उसके मित्रों को बीच में डालकर, पति-पत्नी में सुलह कराने का यत्न करे। मेरा विचार था कि मिल्ली की अनुपस्थिति में यह सम्भव हो सकेगा। परन्तु जब नवल की पत्नी यहाँ आई तो नवल दिल्ली जा चुका था। वह कल ही लौटा है और उसके घर में झगड़ा आरम्भ हो गया है। नवल

का अभी-अभी टेलिफोन मिला है कि वह इस झगड़ को निपटाने के विषय में मुझसे बात करने वाला है।

"मेरा विचार है कि अभी मिल्ली को सहन किया जाय। सम्भव है कि दिनभर का भटका व्यक्ति रात के पूर्व ही घर वापस आजाय।"

*   *   *

द्वितीय पँचवर्षीय योजना पर लिखित आनन्दप्रकाश की पुस्तक तैयार हो गई थी। पूर्ण पुस्तक ढाई सौ फुलस्केप टाइप्ड पृष्ठों की बनी थी। सरकारी नौकर होने के कारण अपनी लिखी पुस्तक को छापने से पूर्व, उसको अपने अधिकारियों से स्वीकृति लेनी आवश्यक थी। इस कारण उसने एक पत्र अपने विभाग के सेक्रेटरी को लिख दिया।

इस अवधि में उसने, अपनी पुस्तक की पाण्डुलिपि साधुराम को दिखाते हुए कहा, "तनिक इसको पढ़कर, अपनी सम्मति दे दें।"

साधुराम ने समय निकाल, पुस्तक को पढ़ डाला। पढ़कर वह चकित रह गया। यह योजना तो उससे सर्वथा भिन्न थी, जिसकी तैयारी सरकारी रूप में की जा रही थी।

आनन्दप्रकाश ने लिखा था—

"प्रथम पंचवर्षीय योजना सर्वथा असफल रही है।"

उसने, उस योजना में कितना धन व्यर्थ गया है, उसका अनुमान लगाकर लिखा। यह दो अरब चालीस करोड़ रुपये से अधिक था। आनन्दप्रकाश ने आँकड़े देकर बताया था कि हानि इससे अधिक ही हुई है, कम नहीं।

इसके पश्चात् आनन्दप्रकाश ने इस धन के व्यर्थ जाने के कारणों पर प्रकाश डाला था। उन कारणों में सबसे मुख्य था, योजनाओं का मूल-आधार का गलत होना। इसमें उसने अन्न पैदा करने के लिए परती भूमि को उपजाऊ बनाने के स्थान,

जाय। उसको 'ऐलीमोनी' के रूप में कुछ धन दे दिया जाय और वह वहाँ जाकर, जैसा चाहे जीवन व्यतीत करे।"

"यह उसके माँगने की बात है। कोर्ट में जाकर अथवा घर पर परस्पर बात-चीत करके। परन्तु साधुराम! वह तो भारत में ही किसी के मोह-जाल में फंसी हुई है। इस कारण वह इंग्लैंड जाना पसन्द नहीं करेगी।"

"यदि आप कहें तो मैं उससे बात करके देखूँ।"

"हाँ, यदि उसकी इच्छा हो तो मैं जाने भर का किराया और दो हज़ार पौंड तक देने की सामर्थ्य रखता हूँ।"

"और बच्चे का?"

"मैं उसके विषय में कुछ नहीं जानता। वह मेरा नहीं है। जब भी मैं उसकी सूरत देखता हूँ, मुझको नवल स्मरण हो आता है और मेरे मन में ग्लानि भर आती है।"

इस पर साधुराम कुछ नहीं बोला। उसने केवल यही कहा, "मैं यत्न करूँगा। वैसे तो मैं आपके प्रस्ताव को उसके लिए ठीक समझता हूँ।"

इसी समय डाकिया लालचन्द का पत्र दे गया। लालचन्द के पत्र का सारांश इस प्रकार था—

"नवल चार-पाँच दिन तक दिल्ली में रहा है और इस अवधि में वह अवश्य ही मिल्ली से मिला होगा। मैंने उसके जीवन को स्थिर करने के लिये उसकी पत्नी की माँ को लिखा था कि वह अपनी लड़की को लेकर चण्डीगढ़ चली आए। वहाँ वह झगड़ा करे और उसके मित्रों को बीच में डालकर, पति-पत्नी में सुलह कराने का यत्न करे। मेरा विचार था कि मिल्ली की अनुपस्थिति में यह सम्भव हो सकेगा। परन्तु जब नवल की पत्नी यहाँ आई तो नवल दिल्ली जा चुका था। वह कल ही लौटा है और उसके घर में झगड़ा आरम्भ हो गया है। नवल

का अभी-अभी टेलिफोन मिला है कि वह इस झगड़े को निपटाने के विषय में मुझसे बात करने वाला है।

"मेरा विचार है कि अभी मिल्ली को सहन किया जाय। सम्भव है कि दिनभर का भटका व्यक्ति रात के पूर्व ही घर वापस आजाय।"

* * *

द्वितीय पँचवर्षीय योजना पर लिखित आनन्दप्रकाश की पुस्तक तैयार हो गई थी। पूर्ण पुस्तक ढाई सौ फुलस्केप टाइप्ड पृष्ठों की बनी थी। सरकारी नौकर होने के कारण अपनी लिखी पुस्तक को छापने से पूर्व, उसको अपने अधिकारियों से स्वीकृति लेनी आवश्यक थी। इस कारण उसने एक पत्र अपने विभाग के सेक्रेटरी को लिख दिया।

इस अवधि में उसने, अपनी पुस्तक की पाण्डुलिपि साधुराम को दिखाते हुए कहा, "तनिक इसको पढ़कर, अपनी सम्मति दे दें।"

साधुराम ने समय निकाल, पुस्तक को पढ़ डाला। पढ़कर वह चकित रह गया। यह योजना तो उससे सर्वथा भिन्न थी, जिसकी तैयारी सरकारी रूप में की जा रही थी।

आनन्दप्रकाश ने लिखा था—

"प्रथम पंचवर्षीय योजना सर्वथा असफल रही है।"

उसने, उस योजना में कितना धन व्यर्थ गया है, उसका अनु-मान लगाकर लिखा। यह दो अरब चालीस करोड़ रुपये से अधिक था। आनन्दप्रकाश ने आँकड़े देकर बताया था कि हानि इससे अधिक ही हुई है, कम नहीं।

इसके पश्चात् आनन्दप्रकाश ने इस धन के व्यर्थ जाने के कारणों पर प्रकाश डाला था। उन कारणों में सबसे मुख्य था, योजनाओं का मूल-आधार का गलत होना। इसमें उसने अन्न पैदा करने के लिए परती भूमि को उपजाऊ बनाने के स्थान,

पहिले ही उपजाऊ भूमि की सिंचाई और प्रबन्ध में अनावश्यक हस्तक्षेप बताया। उसका यह भी कहना था कि भोजन सामग्री के पुराने पदार्थों के स्थान, नवीन चीज़ों का लोगों में अभ्यास डालने का यत्न आवश्यक था। इसको योजना का अंग नहीं बनाया गया था। नवीन पदार्थों को उत्पन्न कर, जनता के सम्मुख लाना और उनमें, उन पदार्थों को खाकर जीवन चलाने का अभ्यास डालने के लिये, प्रचार की आवश्यकता थी। यह नहीं किया जा रहा था। इन पदार्थों में फलों का अधिक प्रयोग, माँस, मछली खाने की ओर अधिक ध्यान, सब्जियाँ, फल तथा मछली, अण्डे अथवा दूध, पनीर इत्यादि का अन्न से अधिक व्यवहार एक ऐसा उपाय है। सन्तान कम करने का प्रचार भी इसमें सहायक हो सकता था।

इसी प्रकार आनन्दप्रकाश ने प्रथम योजना में दोषों की एक लम्बी सूची प्रस्तुत कर, दूसरी योजना में सोशियलाइज़ेशन के दोषों का वर्णन कर दिया। उसका दृढ़ मत था कि दो-चार ऐसे कार्यों के अतिरिक्त, जिन पर बहुत धन की आवश्यकता है, अन्य कोई कार्य सरकार को अपने हाथों में नहीं लेना चाहिए। इन कार्यों को भी चालू कर लिमिटेड कम्पनियों के हाथ में दे देना चाहिए, यह उसका मत था।

छोटे मोटे कामों में सरकार को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। उससे माल की पैदावार नहीं बढ़ेगी। माल सस्ता नहीं होगा। उन पर लागत का मूल्य अधिक बैठेगा और देश में जीवन महँगा हो जायेगा। साथ ही देश में बेकारी बढ़ने से करोड़ों व्यक्तियों का जीवन-निर्वाह कठिन हो जायेगा।

सोशियलाइज़ेशन में सबसे बड़ा दोष, जन साधारण का, पालतू पशुओं की भाँति बन जाना है। मनुष्य के मन के विकास के लिए तथा उसकी आत्मोन्नति के लिये स्वच्छन्दता से विचरण

और प्रत्येक व्यक्ति में आत्मनिर्भरता की भावना अत्यावश्यक है। उसका स्पष्ट मत था कि पक्की सड़कें, उच्च अट्टालिकायें, गद्देदार कुर्सियाँ, मोटर कार, हवाई जहाज़, रेडियो और टेलिविज़न सेटों के लगने से कोई समाज उन्नत नहीं माना जा सकता। समाज के उन्नत होने में कारण हैं सुदृढ़ शरीर, विकसित मन और उच्च आत्मा। ये तीनों, सुख-सुविधा के साधनों के बढ़ने और जीवन के सुन्दर, सुखद होने से नहीं हो सकता, प्रत्युत शरीर और मन को तपस्या बना देने से हो सकता है।

इसके अतिरिक्त आनन्दप्रकाश ने अपनी पुस्तक में लिखा था कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना में इतने धन की आवश्यकता पड़ेगी कि भारी करों के लगाने पर भी अरबों रुपये विदेशों से ऋण माँगने पड़ जायेंगे। इस ऋण को प्राप्त करने के लिये एक प्रकार से देश को गिरवी रखना पड़ जायेगा। यह देश के साथ विद्रोह होगा।

इसी लय में यह अढ़ाई सौ पृष्ठ लिखे गये थे। इस पुस्तक में प्रत्येक परिणाम को आँकड़ों से सिद्ध किया गया था।

साधुराम ने पुस्तक को पढ़ा और उसे आनन्दप्रकाश को वापस करते हुए कहा, "भाईसाहब ! इस प्रकार की पुस्तक एक सरकारी अधिकारी नहीं लिख सकता।"

"क्यों ?"

"क्योंकि यह तो सरकार की मुख्य नीति के सर्वथा विपरीत है। आपने तो सोशियलाइज़ेशन पर आक्षेप किया है। इससे सरकार रुष्ट हो जायेगी।"

"कौन रुष्ट होगा ?"

"जो सरकार की नीति का निर्धारण करते हैं।"

"जो कुछ भी हो, मैंने यह लिख दी है। सरकार को चाहिये कि वह इसको छापने की स्वीकृति दे दे और यदि इन आँकड़ों पर और उनसे निकाले गये परिणामों पर किसी को सन्देह है,

तो वह मुझसे बातचीत कर भली प्रकार समझ ले। मैं इनको सत्य सिद्ध कर सकता हूँ।"

"मैं समझता हूँ कि इस पूर्ण झंझट से छुट्टी पाने के लिये वे आपको नौकरी से निकाल देना अधिक सुगम समझेंगे।"

इस भविष्यवाणी से आनन्दप्रकाश भौंचक्का हो साधुराम का मुख देखता रह गया। अब तीर हाथ से निकल चुका था। वह लिख चुका था कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना पर पुस्तक लिखी है और उसने कुछ परिणाम निकाले हैं, जिनसे योजना बनाने वालों तथा पार्लियामेंट के सदस्यों के ज्ञान में वृद्धि होगी। इतना लिखने के पश्चात् अब उसका वापस होना सम्भव नहीं था। इस पर भी वह इतने उपकार के कार्य के लिये चौदह सौ रुपये मासिक की नौकरी खोने की बात को सुख से ग्रहण नहीं कर सका।

अधिकारियों ने लिखा कि वे पुस्तक को देखे बिना उसके प्रकाशन की स्वीकृति नहीं दे सकते। इस पर आनन्दप्रकाश ने पुस्तक की एक भूमिका लिख डाली और उसमें यह लिख दिया कि यह भी एक विचार का ढंग है और वह समझता है कि योजना निर्माण करने वालों की जानकारी के लिये यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

पुस्तक की पाण्डुलिपि अधिकारियों के पास भेजी गई, परन्तु उसका उत्तर तुरन्त नहीं आया। भिन्न-भिन्न विचार के अधिकारी भिन्न-भिन्न कारणों से इस पुस्तक के लेखक पर रुष्ट हो गये।

प्रथम योजना की निन्दा और असफलता से मन्त्रीवर्ग रुष्ट थे। वे घोषणा करते फिरते थे कि योजना पूर्णरूपेण सफल रही है। आनन्दप्रकाश का यह लिखना कि भारत भोजन के विषय में आत्मनिर्भर होने के स्थान, अपनी बढ़ती हुई माँग के अनुपात में अधिक कमी वाला हुआ है, मंत्रियों को निकृष्ट और अनैतिक सिद्ध करने वाला था।

मन्त्री यह तो सहन कर सकते थे कि विरोधी दल के लोग जो इच्छा हो कहें। उनको तो वे यह कहकर टाल सकते थे कि उनका काम ही विरोध करना है। वे शक्ति के भूखे होने के कारण झूठ बोल रहे हैं। परन्तु योजना कार्यालय के एक उच्च अधिकारी का योजना कार्यालय की बात को असत्य सिद्ध करना तो अनर्थकारी था।

योजना कार्यालय के अधिकारी तो इसलिये रुष्ट थे कि आनन्दप्रकाश ने सोशियलाइज़ेशन के विरुद्ध लिखा था। वे समझते थे कि उनको योजना कार्यालय में लिया ही इस कारण गया था कि वे समाज को सोशियलिस्टिक पैटर्न की रूपरेखा दे सकते हैं। यदि यह उद्देश्य ही मिथ्या और हानिकर सिद्ध हो जाय, तो वे कैसे अपनी नौकरी पर रह सकते हैं?

आगामी योजना के लिए जो आँकड़े उस संस्था ने प्रस्तुत किये थे, उनको भ्रममूलक सिद्ध करने से उस संस्था को ही अविश्वस्त सिद्ध कर दिया गया था। यह तो उस संस्था में रुचि लेने वाले लोगों को भड़काने वाला सिद्ध हुआ।

परिणाम यह हुआ कि आनन्दप्रकाश की पुस्तक ने कार्यालय के प्रत्येक उच्चाधिकारी को रुष्ट कर दिया। सब अपने-अपने स्थान पर रुष्ट थे और मन ही मन आनन्दप्रकाश को कार्यालय से बाहर देखने की इच्छा करते थे।

धीरे-धीरे इस विषय में अधिकारीवर्ग परस्पर वार्तालाप भी करने लगा। आनन्दप्रकाश की अनुपस्थिति में उनकी चर्चा का विषय आनन्दप्रकाश ही बन गया था।

यह तो सुगम था कि उसको वापस पंजाब सरकार को दे दिया जाय। परन्तु इतने मात्र से उसके विचारों का बुरा प्रभाव तो कार्यालय पर रहेगा ही, यह विचार कर, उसको सर्वथा नौकरी से निकाल देने का विचार होने लगा। सब अधिकारी

और मन्त्रिगण का यह निर्णय था कि इस पुस्तक के प्रकाशन की स्वीकृति नहीं देनी चाहिए और कोई बहाना ढूँढ़कर, आनन्द-प्रकाश को सर्विस से मुक्त कर देना चाहिए।

* * *

इस षड्यन्त्र के कार्यालय में पकने का आनन्दप्रकाश को किंचित्-मात्र भी ज्ञान नहीं था। यह सब बात उससे ऊँचे अधिकारियों के मन में थी। इस प्रकार प्रतीक्षा करते हुए छः मास व्यतीत हो गये। द्वितीय पंचवर्षीय योजना की रूपरेखा घोषित हो चुकी थी। पूर्ण योजना प्रेस में जा चुकी थी।

इस अवधि में मिल्ली की बात वैसी ही चल रही थी, जैसा कि साधुराम ने अहिल्या की वर्णन की थी। अन्तर था तो यह कि बाहर से पत्थर हो गई दिखाई देने वाली मिल्ली भीतर ही भीतर एक ज्वालामुखी की भाँति सुलग रही थी।

इस समय आनन्दप्रकाश को लालचन्द का एक अन्य पत्र मिला। इसमें उसने लिखा, "नवल की पत्नी का देहान्त हो गया है। किसी को सन्देह हो गया कि उसको विष दिया गया है। यह बात पुलिस में पहुँचा दी गई तो शव को श्मशानभूमि से उठाकर पोस्टमार्टम के लिए लाया गया और वहाँ यह सिद्ध हो गया कि सान्त्वना को संखिया खिलाकर मारा गया है।

"पुलिस नवलकिशोर से पहले से ही द्वेष रखती है। क्योंकि वह सदा पुलिस के विरुद्ध मुकद्दमों की पैरवी करता रहा था। कई मुकद्दमों में तो उसने पुलिस को हराने में भारी सफलता प्राप्त की है। पुलिस ने उसको पकड़ लिया था, परन्तु मैजिस्ट्रेट ने उसको बीस हज़ार की जमानत पर छोड़ रखा है। मृत्यु की जाँच हो रही है। नवल यह यत्न कर रहा है कि यह घटना आत्म-हत्या की सिद्ध हो जाय।"

नवल के विषय में इस सूचना ने आनन्दप्रकाश को गम्भीर

विचार में डाल दिया। वह मन ही मन प्रसन्न था कि नवल यदि कैद हो गया तो उसका जीवन सुगम हो जावेगा।

इसी समय एक घटना और घटी। एक दिन मध्याह्न के समय मिल्ली अपने लड़के को उँगली से पकड़, घर से जो निकली तो फिर लौट कर नहीं आई। पुलिस में इनकी रिपोर्ट लिखा दी गई।

मिल्ली के लापता हो जाने की सूचना आनन्दप्रकाश ने लालचन्द को दी तो उसका पत्र आया कि नवल भी वहाँ से लापता है।

चण्डीगढ़ से पुलिस जाँच करने के लिए दिल्ली आई। आनन्दप्रकाश का बयान लिया गया। इसमें मिल्ली के नवल से पूर्व परिचय पर उसने प्रकाश डाल दिया। जाँच में यह सन्देह हो गया कि दोनों इकट्ठे ही भागे हैं। परन्तु हवाई जहाज़ के अड्डे और बम्बई पोर्ट पर जाँच-पड़ताल के पश्चात् पता चला कि दोनों हवाई जहाज़ से इटली और वहाँ से स्विटज़रलैंड जा पहुँचे हैं।

नवल के बैंक के हिसाब-किताब की जाँच से विदित हुआ कि पिछले छः मास से वह अपना रुपया धीरे-धीरे निकालता हुआ स्विटज़रलैंड के बैंकों में भेजता रहा है। जाते समय उसने कुछ नहीं निकाला।

इस जाँच के पश्चात् सान्त्वना के मुकद्दमे में यह सिद्ध नहीं हो सका कि संखिया किस ने दिया है। पुलिस की जाँच के विपरीत यह सिद्ध हुआ कि सान्त्वना के कहने पर, उसका नौकर एक तोला संखिया बाज़ार से लाया था।

इस पर नवल मुकद्दमे में बरी हो गया। परन्तु वह भारत नहीं लौटा।

आनन्दप्रकाश ने तलाक के लिये प्रार्थना कर दी। मिल्ली का स्विटज़रलैंड में पता किया गया और उसको वहाँ पर तलाक का नोटिस भेज दिया गया। वह नोटिस उसने स्वीकार नहीं किया। पश्चात् इस नोटिस की सूचना स्विटज़रलैंड के दो-तीन

विख्यात पत्रों में, विज्ञापन के रूप में, प्रकाशित करवा दी गई। इसका भी कुछ प्रभाव नहीं हुआ। परिणामस्वरूप कोर्ट ने डिग्री दे दी और आनन्दप्रकाश को विवाह के उत्तरदायित्व से मुक्त कर दिया गया।

अभी आनन्दप्रकाश के विवाह के लिये लड़की खोजी ही जा रही थी कि भारत सरकार ने उसकी सेवाओं को अस्वीकार कर, उसको पुनः पंजाब में भेज दिया। आनन्दप्रकाश के स्थान पर एक अन्य सिविल ऑफिसर नियुक्त हो गया था और उसने इस स्थान को प्राप्त करने के लिये बहुत सिफारिश पहुँचाई थी।

पंजाब की सरकार के उच्चाधिकारियों के कहने पर आनन्द-प्रकाश ने छः मास की छुट्टी ले ली। इस अवसर में उसकी माँ उसके पास आई और उसको विवाह कर लेने की प्रेरणा देने लगी।

आनन्दप्रकाश का कहना था, "माँ ! विवाह तो मैं करूँगा और अब, तुम जहाँ कहोगी, वहीं करूँगा; परन्तु अभी तो मेरी नौकरी की ही बात पक्की नहीं। मैं समझता हूँ कि किसी दिन भी सरकार की ओर से मुझे नोटिस मिल सकता है कि अब सरकार को मेरी सेवाओं की आवश्यकता नहीं है। इस अवस्था में विवाह कर, अपनी गर्दन में फंदा डालना कहाँ तक ठीक रहेगा ?"

"बेटा ! प्रत्येक व्यक्ति अपना-अपना भाग्य साथ लेकर आता है। इसकी चिन्ता तुमको नहीं करनी चाहिये। तुम तो अपने भाग्य की बात करो।"

"माँ !" आनन्दप्रकाश को लालचन्द के ज्योतिष की बात स्मरण हो आई। उसने कहा, "मिल्ली के विवाह के समय एक ज्योतिषी ने मुझको बताया था कि मिल्ली से मेरा विवाह ठीक नहीं और यह अत्यन्त दुःखकारक होगा। सो वैसा ही हुआ है।

अब इसका विवाह कैसा होगा, कैसे कहा जा सकता है? इस कारण जब तक मैं अपने जीवन में स्थिर नहीं हो जाता, तब तक मैं किसी दूसरे के जीवन को संकट में डालना नहीं चाहता।"

"तब किस ज्योतिषी से पूछा था तुमने?"

"मेरा एक मित्र है लालचन्द साहनी।"

"तब तो उसको बुलाकर पुनः इस विषय में पूछ लो।"

"अब तो मुझे उससे पूछने में लज्जा लगती है। मैंने उस समय उसका कहा नहीं माना था और उसके ज्योतिष की खिल्ली उड़ाई थी।"

"तो मैं उसके पास जाकर पता कर लेती हूँ। तुम अपनी मोटर दे दो और ड्राईवर को उसका पता बता दो।"

आनन्दप्रकाश ने घड़ी में समय देखा और कह दिया, "वह इस समय घर पर ही होगा। फोन पर बात कर लो न।"

माँ ने उसका नम्बर पूछा और फोन कर दिया। उस ओर से स्वयं लालचन्द बोल रहा था। उसने कहा, "मैं लालचन्द साहनी बोल रहा हूँ।"

"आप आनन्दप्रकाश सूरी को जानते हैं?"

"जी हाँ। क्यों क्या बात है उनके विषय में?"

"मैं उसकी माँ बोल रही हूँ।"

"माताजी! नमस्कार! आज्ञा कीजिये, किस कारण स्मरण किया है?"

"देखो बेटा! आनन्दप्रकाश के प्रथम विवाह के समय तुमने उसके विषय में ज्योतिष लगाया था। आनन्दप्रकाश कहता है कि जैसा तुमने कहा था, वैसा ही हुआ है।"

"माताजी! बिलकुल वैसा तो नहीं हुआ; हाँ, मुख्य बात कुछ-कुछ वैसी ही हुई है।"

उसमें लिखा था, "आनन्दप्रकाश का सूर्य उच्च का है। शनि नीच का है। इस कारण यह बहुत ही बुद्धिशील परन्तु भावना-मय है। इसके भाग्य में दो विवाह लिखे हैं। इसकी प्रथम पत्नी इससे धोखा करेगी और अन्त में इनकी हत्या करने का यत्न करेगी। परन्तु यह बच जायेगा और इसकी पत्नी हत्या के अप-राध में पकड़ ली जावेगी और आजन्म कैद का दण्ड पायेगी।

"इसका दूसरा विवाह सफल होगा।

"आनन्दप्रकाश सरकारी नौकरी नहीं कर सकेगा। आज भारत में सरकारी नौकरी से बुद्धि का विरोध है। उच्च अधि-कारी अपने अधीन विद्वानों को सहन नहीं कर सकेंगे। आनन्द-प्रकाश सूर्य के उच्च होने से अपनी स्वतन्त्र और युक्तियुक्त बात मान, उस पर अड़ जायेगा और उसको नौकरी छोड़नी पड़ेगी।

"आनन्दप्रकाश यदि कोई स्वतन्त्र कार्य करेगा, तो उसको इसमें सफलता प्राप्त होगी।"

इतना सुनाकर लालचन्द ने बताया कि उस समय नवल उसके समीप ही बैठा था। इस कारण साक्षी-स्वरूप इस कागज़ पर उससे हस्ताक्षर करवा लिये गये थे।

नवल ने इसके नीचे हस्ताक्षर करते हुए लिखा था—

"मैंने इसमें लिखा हुआ पढ़ा नहीं है। मैंने यह हस्ताक्षर इस कारण किये हैं, जिससे यह सिद्ध हो कि मेरे हस्ताक्षर करने से पूर्व यह लिखा हुआ है और हस्ताक्षर की तिथि सात जुलाई १९५३ है।"

इस पर आनन्दप्रकाश की माँ बोली, "आज भी सात जुलाई है और सन् १९५७। चार वर्ष हो गये हैं।"

"हाँ, इस भविष्यवाणी में कुछ बातें बदल गई हैं। उसमें कारण मेरा और मीना का प्रयत्न है। हम पग-पग पर आनन्द-

प्रकाश और मिल्ली को सावधान करते रहे थे। एक बात तो केवल मेरे करने से ही हुई है। मैंने नवल की सास को लिखा था कि वह अपनी लड़की को लेकर चण्डीगढ़ चली आए। लोक-लाज से डरकर नवल अपनी पत्नी को घर से निकालेगा नहीं।

"मेरा यह करना तो ठीक हुआ है, परन्तु हत्या का यत्न आनन्दप्रकाश पर न होकर सान्त्वना पर हो गया है।

"मैंने मिल्ली का हाथ भी देखा था। उसका हत्यारे का हाथ है। भगवान जाने वह किस पर चलने वाला है।"

"परन्तु बेटा! अब मैं पुनः उसी लड़की का रिश्ता लेकर आई हूँ, जिसका मिल्ली के साथ इसके विवाह से पूर्व लाई थी।"

इस पर आनन्दप्रकाश ने आश्चर्य प्रकट कर कहा, "उसी-का? माँ पहले क्यों नहीं बताया?"

"मैं समझती थी कि तुम कह दोगे कि चार वर्ष तक जब उसका विवाह नहीं हुआ है, तो अवश्य ही उसमें कुछ दोष होगा। वास्तव में उससे विवाह के लिये अच्छे-अच्छे सम्बन्ध आते रहे हैं, परन्तु उसने स्वीकार नहीं किये।"

"तो क्या मेरा सम्बन्ध वह स्वीकार कर लेगी?"

"आशा तो है। उसकी माँ कहती है कि वह स्वीकार कर लेगी। इस पर भी उससे इस विषय पर कुछ बातचीत नहीं की गई। मुझको डर था कि कहीं पहले तुम ही अस्वीकार न कर दो।"

"क्यों लालचन्द! क्या कहते हो तुम?" आनन्दप्रकाश ने पूछा।

"इस प्रकार तो कुछ कहा नहीं जा सकता। उसके हाथ की भी रेखाएँ देखूँ, तभी कुछ बता सकता हूँ।"

"यह तो बहुत कठिन है।" आनन्दप्रकाश की माँ ने कहा।

"इस समय तो मैं इतना ही कह सकता हूँ कि आनन्दप्रकाश का दूसरा विवाह सफल होगा। वह किसके साथ होगा, यह नहीं कह सकता।"

"तब तो बात बहुत ही सुगम है। मैं उसको मना लेती हूँ। और यदि वह मान गई तो विवाह होगा ही और तुम्हारे कहे अनुसार वह सफल भी होगा ही।"

"बात तो ठीक है। परन्तु लड़की के लिये विवाह कैसा रहेगा, यह तो उसका हाथ देखकर ही बताया जा सकता है।"

इससे आनन्दप्रकाश की माँ गम्भीर विचार में पड़ गई। फिर कुछ विचार कर बोली, "मैं उसकी माँ को लिखती हूँ।" फिर आनन्दप्रकाश से पूछने लगी, "क्यों आनन्द ! लिखूँ न ?"

"क्या लिखोगी माँ ?"

"यही कि तुम विवाह के लिये राज़ी हो। परन्तु लड़की का हाथ एक ज्योतिषी को दिखाना है, सो उसके बाँये हाथ का, कागज़ पर छापा बनवाकर भिजवा दे।"

"इसकी अपेक्षा लड़की को लेकर ही क्यों न यहाँ आ जाय ?" आनन्दप्रकाश ने कह दिया।

"तुम स्वयं ही ज्योतिषी महाराज को लेकर वहाँ क्यों नहीं पहुँच जाते ?"

इस पर सब हँसने लगे। आनन्दप्रकाश ने पूछा, "लालचन्द ! कितनी फीस लेते हो सुप्रीम कोर्ट में हाज़िर होने की ?"

लालचन्द ने मुस्कराते हुए कहा, "एक दिन की एक हज़ार रुपया। फर्स्ट क्लास का भाड़ा इससे पृथक।"

"लगभग बारह सौ रुपया।" आनन्दप्रकाश ने कहा—"लालचन्द ! दे दिया जायेगा।"

"किन्तु आनन्द ! वकील तो मुकद्दमों की फीस लिया करते हैं, विवाह कराने की नहीं । मैं कोई नाई तो हूँ नहीं ।"

इस बात से सभी को हँसी आ गई ।

आनन्द की माँ ने कह दिया, "मैं कल जाती हूँ । लड़की की माँ और लड़की से बात करके कल पत्र लिख दूँगी । अगले रविवार को तुम दोनों आ जाओगे तो काम बन जायेगा ।" फिर लालचन्द से कहने लगी—"बेटा ! तुम्हारी फीस मैं दूँगी ।"

"क्या देंगी ? माताजी !"

"बड़ों की ओर से तो आशीर्वाद ही दिया जाता है । सो मैं आशीर्वाद दूँगी कि तुम सौ वर्ष तक जीवन का सुखोपभोग करो । पुत्र-पौत्रों के साथ फलो फूलो ।"

"तब तो मैं अवश्य ही चलूँगा । इतनी बड़ी फीस को कौन छोड़ देगा ?"

*   *   *

आनन्दप्रकाश की नई पत्नी का नाम कमला था । उसने एक दिन उसे बताया कि वह नौकरी छोड़ना चाहता है । इस पर कमला ने पूछा, "क्यों ?"

"इस कारण कि भारत सरकार मेरी सेवाओं को पसन्द नहीं करती ।"

"तो क्या करेंगे आप !"

"वैसे कुछ-न-कुछ काम करने का विचार तो है; परन्तु अभी तक निश्चय नहीं कर सका कि क्या करूँ ? इस पर भी खाने-पीने के लिये तो किसी बात की चिन्ता नहीं है ।"

"काम इसलिये तो नहीं किया जाता कि खाने-पीने के लिये है । काम तो जीवन को उपयोगी बनाने के लिये किया जाता

है। इसको ऐसा बनाने से समाज कुछ पुरस्कार देता है अथवा नहीं, दूसरी बात है।"

"यह तो तुम अर्थशास्त्र के सिद्धान्त के विपरीत बात कर रही हो।"

"जी नहीं। अर्थ के अर्थों में अन्तर है। आप अर्थ का अभिप्राय समझते हैं मानव परिश्रम के प्रतिकार-स्वरूप उपलब्ध सोना-चाँदी अथवा अन्य उपयोगी वस्तुएँ। आज संसार में इसको ही अर्थ समझा जाता है।"

"वास्तव में अर्थ है इस जीवन के मिलने का प्रयोजन।"

"वह क्या है और किसने जीवन दिया है?"

"जीवन देने वाली एक शक्ति है, जो इस संसार में सब कुछ नियम में रखती है। उस शक्ति का वास्तविक रूप क्या है, यह मनुष्य अभी तक नहीं जान पाया। इस पर भी वह है और इस जड़ सृष्टि में जीवन दान करती है। उस शक्ति को कोई परमात्मा इत्यादि नामों से पुकारता है, कोई उसे आदि प्रकृति का नाम देता है।

"उस शक्ति ने यह जीवन निर्माण किया है तो किसी प्रयोजन से किया है। उस प्रयोजन को इस जीवन का अर्थ कहते हैं। उस अर्थ को समझाने वाली विद्या को कहते हैं अर्थशास्त्र।

"उस अर्थशास्त्र के अनुसार, इस प्रयोजन की सिद्धि के लिये हमको कार्य करना होता है।"

"देखो कमला! ये सब व्यर्थ की बातें हैं। जीवन बना है, किसने बनाया है, क्यों बनाया है, इसके जानने की कोई आवश्यकता नहीं। यह जीवन बना है तो हमको भूख लगती है, इन्द्रियों के विषय भी इसमें हैं। उन सब आवश्यकताओं की पूर्ति के शास्त्र को अर्थशास्त्र कहते हैं।"

"ये आवश्यकताएँ तो बहुत कम परिश्रम से पूर्ण हो सकती हैं। हमारे खाने, पहिनने और रहने के लिए कितना चाहिए ? मैं समझती हूँ कि आप जैसे अर्थशास्त्रियों द्वारा बनाये गये इस मँहगाई के काल में भी तीन-चार रुपये नित्य में निर्वाह हो सकता है। आप सदृश पढ़े-लिखे विद्वान क्या एक घण्टा नित्य कार्य कर, तीन-चार रुपये पैदा नहीं कर सकते ? शेष जो कुछ करते हैं, वह किस शास्त्र के अधीन करते हैं ?"

आनन्दप्रकाश अपनी पत्नी की इस युक्ति का अर्थ नहीं समझ सका था। इस कारण उसने पूछ लिया, "आखिर तुम कहना क्या चाहती हो ? तनिक व्याख्या करके समझाओ।"

"देखिये जी ! आप मुझको यह किस लिये बता रहे हैं कि आप नौकरी छोड़ रहे हैं ? इसके विपरीत मैं आपसे पूछने वाली थी कि आप नौकरी किस लिये करते हैं ?

"यदि तो खाने-पीने की उपलब्धि के लिये यह नौकरी है, तब तो इस छोटी सी बात के लिये आप व्यर्थ में ही नौ घण्टे नित्य परिश्रम करते हैं। इतने कुछ के लिये तो आपके पास है ही।

"यह आपकी मोटर, आपका सूट, हैट इत्यादि, इतनी बड़ी कोठी, कुर्सियाँ, मेज़, गद्दे, कालीन इत्यादि और ये रेडियोग्राम और चान्दी के बर्तनों के ढेर, उस नैसर्गिक शरीर की माँग के लिये हैं क्या ?

"मैं समझती हूँ कि इन व्यर्थ की वस्तुओं की उपलब्धि के लिये आप नौ घण्टे नित्य दूसरों की नौकरी करते हैं। क्या ऐसा करना, तथा इन वस्तुओं की उपलब्धि, यही आपका अर्थशास्त्र बताता है ?

"क्षमा करें, कोई व्यक्ति, जो दीर्घ दृष्टि रखता होगा, वह इस अर्थशास्त्र को अनर्थशास्त्र ही कहेगा।

"सुनिये, मेरा अर्थशास्त्र कहता है, परमात्मा की कृपा से आपके पिता आपको, आपके शरीर की नैसर्गिक इच्छाओं की पूर्ति के लिये पर्याप्त धन दे गये हैं। आपको किसी की भी नौकरी करने की आवश्यकता नहीं है।

"हाँ, आपको, अपने जीवन के प्रयोजन को समझकर, उस-की पूर्ति का यत्न अवश्य करना चाहिए।"

"तुमने एम० ए० फिलाँसोफी में तो नहीं किया है? कमला! मैं समझता हूँ तुमने तो हिन्दी में एम० ए० किया है। फिर यह वैराग्य की बातें तुम कहाँ से सीख आई हो?"

"मैंने आपको किस वस्तु का त्याग करने के लिये कहा है जिसके छोड़ने से आपके शरीर को कष्ट अथवा इसके दुर्बल होने की सम्भावना है।

"मेरे कहने का अर्थ यह है कि हमारे पास खाने-पहिनने के लिये तो धन है। कुछ ऐसा काम करें कि जिससे अन्य भी खाने-पहनने को सुगमता से पा जायें। यह तो वैराग्य नहीं है।"

"यह तो हम योजनाओं में कर ही रहे हैं। मेरा सरकार से मतभेद केवल उपाय के विषय में है।"

"आप तो, मेरा मतलब है, यह योजना बनाने वाले, मशीनें बनाकर ये रेडियो, मोटरें, हवाई जहाज़, सात-सात मंज़िलें मकान इत्यादि ही का निर्माण कर रहे हैं न। लोहे के कारखानों में लाखों टन लोहा बनेगा। इससे मशीनें बनेंगी। मशीनों से अने-कानेक प्रकार के वे सामान बनेंगे, जो मेरे अर्थशास्त्र के अनुसार व्यर्थ के हैं।

"कहा जा रहा है कि हमारे जीवन का स्तर ऊँचा होगा। अर्थात् हम व्यर्थ की वस्तुएँ, जिनका जीवन के साथ कोई सम्बन्ध नहीं, खरीदने लगेंगे और फिर उन वस्तुओं को प्राप्त करने के

"ये आवश्यकताएँ तो बहुत कम परिश्रम से पूर्ण हो सकती हैं। हमारे खाने, पहिनने और रहने के लिए कितना चाहिए ? मैं समझती हूँ कि आप जैसे अर्थशास्त्रियों द्वारा बनाये गये इस मँहगाई के काल में भी तीन-चार रुपये नित्य में निर्वाह हो सकता है। आप सदृश पढ़े-लिखे विद्वान क्या एक घण्टा नित्य कार्य कर, तीन-चार रुपये पैदा नहीं कर सकते ? शेष जो कुछ करते हैं, वह किस शास्त्र के अधीन करते हैं ?"

आनन्दप्रकाश अपनी पत्नी की इस युक्ति का अर्थ नहीं समझ सका था। इस कारण उसने पूछ लिया, "आखिर तुम कहना क्या चाहती हो ? तनिक व्याख्या करके समझाओ।"

"देखिये जी ! आप मुझको यह किस लिये बता रहे हैं कि आप नौकरी छोड़ रहे हैं ? इसके विपरीत मैं आपसे पूछने वाली थी कि आप नौकरी किस लिये करते हैं ?

"यदि तो खाने-पीने की उपलब्धि के लिये यह नौकरी है, तब तो इस छोटी सी बात के लिये आप व्यर्थ में ही नौ घण्टे नित्य परिश्रम करते हैं। इतने कुछ के लिये तो आपके पास है ही।

"यह आपकी मोटर, आपका सूट, हैट इत्यादि, इतनी बड़ी कोठी, कुर्सियाँ, मेज, गद्दे, कालीन इत्यादि और ये रेडियोग्राम और चान्दी के बर्तनों के ढेर, उस नैसर्गिक शरीर की माँग के लिये हैं क्या ?

"मैं समझती हूँ कि इन व्यर्थ की वस्तुओं की उपलब्धि के लिये आप नौ घण्टे नित्य दूसरों की नौकरी करते हैं। क्या ऐसा करना, तथा इन वस्तुओं की उपलब्धि, यही आपका अर्थशास्त्र बताता है ?

"क्षमा करें, कोई व्यक्ति, जो दीर्घ दृष्टि रखता होगा, वह इस अर्थशास्त्र को अनर्थशास्त्र ही कहेगा।

"सुनिये, मेरा अर्थशास्त्र कहता है, परमात्मा की कृपा से आपके पिता आपको, आपके शरीर की नैसर्गिक इच्छाओं की पूर्ति के लिये पर्याप्त धन दे गये हैं। आपको किसी की भी नौकरी करने की आवश्यकता नहीं है।

"हाँ, आपको, अपने जीवन के प्रयोजन को समझकर, उस-की पूर्ति का यत्न अवश्य करना चाहिए।"

"तुमने एम० ए० फिलाँसोफी में तो नहीं किया है? कमला! मैं समझता हूँ तुमने तो हिन्दी में एम० ए० किया है। फिर यह वैराग्य की बातें तुम कहाँ से सीख आई हो?"

"मैंने आपको किस वस्तु का त्याग करने के लिये कहा है जिसके छोड़ने से आपके शरीर को कष्ट अथवा इसके दुर्बल होने की सम्भावना है।

"मेरे कहने का अर्थ यह है कि हमारे पास खाने-पहिनने के लिये तो धन है। कुछ ऐसा काम करें कि जिससे अन्य भी खाने-पहनने को सुगमता से पा जायें। यह तो वैराग्य नहीं है।"

"यह तो हम योजनाओं में कर ही रहे हैं। मेरा सरकार से मतभेद केवल उपाय के विषय में है।"

"आप तो, मेरा मतलब है, यह योजना बनाने वाले, मशीनें बनाकर ये रेडियो, मोटरें, हवाई जहाज़, सात-सात मंज़िलें मकान इत्यादि ही का निर्माण कर रहे हैं न। लोहे के कारखानों में लाखों टन लोहा बनेगा। इससे मशीनें बनेंगी। मशीनों से अने-कानेक प्रकार के वे सामान बनेंगे, जो मेरे अर्थशास्त्र के अनुसार व्यर्थ के हैं।

"कहा जा रहा है कि हमारे जीवन का स्तर ऊँचा होगा। अर्थात् हम व्यर्थ की वस्तुएँ, जिनका जीवन के साथ कोई सम्बन्ध नहीं, खरीदने लगेंगे और फिर उन वस्तुओं को प्राप्त करने के

लिए नौ-नौ घंटे रोज़ मशीनों के साथ काम करेंगे। यह जीवन-स्तर ऊँचा हो रहा है अथवा गिर रहा है ?

"मेरा कहना है कि जीवन को सदा कम-से-कम आवश्यकताओं का दास बना, इससे चरित्र में धर्म का समावेश करायें तो ठीक है।

"मैं चाहती हूँ कि आप यही करें। भगवान की कृपा से आपको इतनी शिक्षा प्राप्त हुई है। उसका उपयोग लोगों की आवश्यकताओं को कम और जीवन में चरित्र ऊँचा करने में क्यों नहीं करते ?"

"ओह, अब समझा हूँ मैं। तो तुम यह चाहती हो कि मैं कोई समाचार-पत्र इत्यादि निकालूँ और समाज के दृष्टिकोण को बदलने में लग जाऊँ ?"

"जी ! उस दिन जीजाजी भी तो यही कह रहे थे।"

"परन्तु उनके कहने का ढंग दूसरा था।"

"बात तो यही थी न ?"

* * *

आनन्दप्रकाश ने एक दिन समाचार-पत्र में यह पढ़ा कि भारत के पंजाब प्रदेश का रहने वाला, एक नवलकिशोर नाम का व्यक्ति ज्युरिच में मार डाला गया है। यह कहा जाता है कि उसकी एक अंग्रेज़ औरत से मित्रता थी, वह उसके पास मिस्ट्रेस के रूप में रहती थी।

कल प्रातःकाल वह अपने मकान के ड्राइंग-रूम में मृत पाया गया। उसकी शराब में, जो एक बोतल में और एक गिलास में उसके सामने रखी थी, विष घुला हुआ पाया गया है। उसकी मृत्यु उसी विष से हुई है।

नवलकिशोर की मिस्ट्रेस मिस स्टोप्स की खोज हो रही है। वह लापता है। ● ● ●